ातुर्थ अध्याय

शेखर ोशी की कहानियों का समय और समा ा

4.1 शेखर ोशी की कहानियों का देश काल

(औद्योगीकरण, शहरीकरण, तकनीकीकरण, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद)

4.2 शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित समा ा

4.2.1 सामा िक स्थितियाँ

4.2.1.1 आपसी संबंध

4.2.1.2 पीि यों का अंतर

4.2.1.3 अकेलापन

4.2.1.4 मृत्युबोध

4.2.1.5 प्रेम

4.2.1.6 वृद्ध और विधवाओं की परिस्थिति

4.2.1.7 पर्वतीय ीवन

4.2.2 आर्थिक स्थितियाँ

4.2.2.1 मध्यवर्ग

4.2.2.2 निम्न मध्यवर्ग

4.3 धार्मिक स्थितियाँ

ातुर्थ अध्याय

शेखर ाोशी की कहानियों का समय और समा ा

समय नदी की धारा है, िासमें सब कुछ बह ााता है। लेकिन कुछ क्षण ऐसे होते हैं, ाो इतिहास बनाया करते हैं। वह एक गतिशील प्रक्रिया है। किसी के लिए भी वह एक क्षण रुकता नहीं। समय ाो एक बार बीत गया उसे वापस लाया नहीं ाा सकता। हमारे ाीवन में समय का बड़ा महत्व है। समय और समा ा अन्योन्याश्रित है क्योंकि समय एक गतिशील प्रक्रिया है और निरंतर बदलता रहता है। उसी प्रकार समा ा भी प्रगति की ओर अपने आप को बदलते हुए आगे ब.ता है। इस प्रकार समय और समा ा एक ैसा ही है। स्वतंत्रता के पूर्व हमारे समा ा का ाो स्वरूप है, वह समय के साथ अपने आप को बदलते हुए प्रगति की ओर उससे दस गुना आगे ब.ा ुका। यह एक सत्य है। िासे कोई तिरस्कार नहीं कर सकता।

कोई भी र ानाकार समा ा से विमुख होकर यदि किसी कृति को ान्म देता है तब उसमें सामाािक ाित्र अपने असली रूप में उभर नहीं पाता। लेखक समा ा से संपृक्त रहता है। िास युग में वह ाी रहा है उसकी आर्थिक, सामाािक, रा ानैतिक, सांस्कृतिक गतिविधियों से वह पूर्णतः ाुड़ा हुआ रहता है। ाब समा ा की समस्याएँ लेखक के सामने होती हैं, तब वह उनमें इतना उल ा ााता है कि व्यक्ति संबंधी परेशानियाँ उसे आकर्षित नहीं करती। लेखक पर केवल स्वयं की वैयक्तिक व परिवेशगत परिस्थितियाँ ही केवल प्रभाव नहीं

डालती अपितु ि ास समय के समा ा में वह ाी रहा है उस का प्रभाव भी लेखक पर पड़ता है। वह समय के साथ समा ा में हो रहे परिवर्तनों को अपने साहित्य के द्वारा पाठकों के सामने लाता है। इसी विषय को प्रेम ांद अपनी शब्दावली में इस प्रकार प्रकट करते हैं कि-"साहित्यकार बहुदा अपने देशकाल से प्रभावित होता है। ाब कोई लहर देश में उठती है तो साहित्यकार के लिए उससे प्रभावित रहना असंभव हो ाता है।"[1] प्रत्येक परिस्थिति समान नहीं रहती। देश में अनेक लहरें उठती हैं ैसे स्वतंत्र संग्राम, भ्रष्टा ार, रा ानीतिक बदलाव आदि। उन सभी परिस्थितियों से साहित्यकार अन ान नहीं रह सकता। लेखक उन परिस्थितियों को अपनी प्रतिभा के बल पर साहित्य का रूप देता है।

4.1 शेखर ोशी की कहानियों का देश काल

(औद्योगीकरण, शहरीकरण, तकनीकीकरण, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद)

मनुष्य हमेशा देश और काल के अनुरूप बदलता रहता है। इसी बदले हुए मानवीय ोतना को उ ागर करने का प्रयत्न हर लेखक करता है। वह अपने ारों ओर के परिवेश के सभी बारीक और स्थूल आयामों को तो रूपायित नहीं कर सकता है। परिवेश का वह रूप ि ासने लेखक की ोतना को ाक ोरा है, वह उसे ग्रहण कर लेता है। हर लेखक का अपना परिवेश होता है। वह अपने परिवेश से इतना ुड़ ाता है कि उसकी र ाना से उसे अलग करना असंभव-सा हो ाता है। अपने परिवेश के बारे में लिखते-लिखते स्वयं लेखक उस परिवेश का प्रतिनिधित्व करने लगता है। इस विषय की पुष्टि हमें

[1] हंस, मा ि 1932-पृ.40

 ैनेंद्र कुमार के शब्दों से मिलती है-"एक बिंदु पर आकर स्वयं लेखक ही अपना परिवेश हो ाता है।"[2]

प्रा ाीन युग के और आ ा के परिवेश में काफी अंतर है। पहले की दुनिया परिवर्तनशील होते हुए भी छोटी थी। तब का लेखक आस-पास के सीमित कटघरे में बंद रहता था। मगर आ ा की दुनिया में ाो परिवर्तन आ रहा है, लेखक उसे अपने साहित्य के द्वारा पाठकों के सामने लाता है।

देश, काल या वातावरण शब्द से ही स्पष्ट है कि काल-देश-प्रदेश अथवा स्थान से संबंधित है। र ानाकार का काल अथवा समय क्या है और स्थान तथा समय की परिस्थितियाँ क्या है, उनका पात्रों पर कैसा प्रभाव पड़ता है? इस दृष्टि से उनके तीन भेद किए ा सकते हैं-सामा िक, प्राकृतिक, ऐतिहासिक।

पहले के अंतर्गत लेखक सामा िक स्थिति, रीति-रिवाज़, वेश-भूषा, पात्रों के ाीवनगत स्तर, उनकी शिक्षा, संस्कृति आदि का ित्रण करता है।

दूसरे के अंतर्गत लेखक उसके परिवेश तथा संदर्भ में पात्रों की मनोदशा का भावात्मक स्वरूप प्रस्तुत करता है और उसे अधिक मार्मिकता प्रदान करता है। तीसरे का उपयोग ऐतिहासिक उपन्यासों में ही होता है।

उपन्यास या कहानी का संबंध किसी देश या काल से होता है। "व्यक्ति या घटना को उसकी पूर्ण यथार्थता में ित्रित करने के लिए उसके दिक् और काल का ित्रण भी अनिवार्य होता है। इसी दिक् काल को उपन्यास में 'देशकाल', 'वातावरण' या परिवेश भी कहते हैं।"[3] देशकाल का वह वर्णन ितना ही स ाीव, यथार्थ और सुसंगत होगा, उपन्यास उतना ही अधिक सफल रहेगा। इस वर्णन को वास्तविक बनाने के लिए उस देशकाल के आ ाार-वि ाार,

---

[2] समयसीमा और सिद्धांत, ैनेंद्र कुमार-पृ.7

[3] श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधानः डॉ.पी.वी.कोटमे-पृ.59

रीति-नीति, रहन-सहन, भाषा ओर वेशभूषा का सूक्ष्म अध्ययन आवश्यक है। बाह्य प्रकृति के वर्णन द्वारा भी वातावरण की सृष्टि की ाती है। यह प्राकृतिक वर्णन कभी स्वतंत्र रूप से होता है और कभी-कभी पात्रों की मनःस्थिति के अनुसार। इस दृष्टि से इनके तीन भाग किये ा सकते हैं-सामा िक, प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक आदि।

1. उपन्यासकार सामा िक स्थिति, रीति-रिवा ा, वेशभूषा, पात्रों का ीवनगत स्तर, उनकी शिक्षा, संस्कृति आदि का ि त्रण करता है।
2. उपन्यासकार उसके परिवेश तथा संदर्भ में पात्रों की मनोदशा का भावात्मक स्वरूप प्रस्तुत करता है और उसे अधिक मार्मिकता प्रदान करता है।
3. ऐतिहासिकता का उपयोग ऐतिहासिक उपन्यासों में ही होता है।

कहानी या उपन्यास में देशकाल और वातावरण के अभाव कहानीकार अपनी बात कह नहीं सकता। कहानी की सफलता पर देशकाल का बड़ा महत्व हैं। "किसी परिवार, वर्ग अथवा ाति पर सामा िक वातावरण का सर्वाधिक प्रभाव रहता है। निकट भविष्य में ही मनोविज्ञान निःसंदेह इतना सक्षम हो ाएगा कि वह मानव वि ारों और भावनाओं की बुनावट को स्पष्ट करके सामने रख देगा। अतः हमारे लिए यह सम ाना संभव हो ाएगा कि व्यक्ति के कार्य करने, ि ंतन करने और प्यार करने की क्या प्रक्रिया है, यह उसी प्रकार संभव होगा ैसे कि आ ा सामा िक संदर्भ में ही सम ा पाते हैं। वह अकेला नहीं है, उसका सामा िक अस्तित्व है। समा ा से पृथक उसकी कोई सत्ता नहीं है और ाहाँ तक उस सामा िक वातावरण से उपन्यासकार का संबंध है, उसकी

घटनाओं का वह निरंतर परिवर्तित करनेवाला होता हे। इसकी ा र्ा 'एमिल ोला' ने की है।"[4]

परिवर्तन की इस अंतर्धारा के बारे में अरुण प्रकाश स्वयं अपना मत इस प्रकार प्रकट करते हैं-"आम तौर पर नाटकीय ीवन सभी को आकृष्ट करता है। भावावेगों का ारम होता है। इसके आकर्षण में पाठक, श्रोता, दर्शकों के साथ-साथ लेखक भी पड़ ाता है। लेकिन ीवन के सारे परिवर्तन नाटकीय नहीं होते। बड़े परिवर्तन स ामु ा में नाटकीय होते हैं। लेकिन परिवर्तन की स्फूर्त अंतर्धारा भी ुप ाप बहती है। वस्तुतः यही अंतर्धारा बड़े नाटकीय परिवर्तनों की पूर्व-पीठिका होती है। ो कि हर लेखक का दायित्व होता है कि वह परिवर्तन की इस अंतर्धारा को सम ो और उसे पाठकों तक पहुँ ाए लेकिन ऐसे लेखक कम हैं। शेखर ोशी उनमें से एक हैं।"[5]

शेखर ोशी 'नई कहानी' के दौर के कहानीकार हैं। 'नई कहानी' के दौर में ाब अधिकांश कहानीकारों ने अपनी कहानी में कुंठा, हताशा, संत्रास, एकाकीपन तथा सेक्स को केंद्र में रखकर कथाभूमि का ायन किया और पूरी प्रामाणिकता तथा संवेदनशीलता के साथ 'नयी कहानी' को स्थापित कर पाने में सफल भी हुए, उस समय भी दबे-पिछड़े, संघर्षरत लोगों की ीवन स्थितियों के यथार्थ-ि ात्रण को लेकर कुछ कहानीकार सक्रिय थे और आशान्वित भी। भैरव प्रसाद गुप्त, अमरकांत, मार्कण्डेय आदि के साथ ही शेखर ोशी का नाम इस परंपरा के कहानीकारों में लिया ाता है।

सन् 1950 से भारतीय समा ा में व्यापक परिवर्तनों का दौर शुरू हुआ। वैसा तो ीवन और ागत् में सदा ही कुछ-न-कुछ परिवर्तन होता रहता है परंतु सामा ि ाक ीवन में उसी युग को परिवर्तन का काल कहा ा सकता है

---

[4] हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग, डॉ.त्रिभुवन सिंह-पृ.15

[5] आ ाकल, मा र्ा 1995-पृ.45

ि ासमें और सब बातों की अपेक्षा परिवर्तन प्रमुखता से दिखाई देता हो। इंग्लैंड में 19 वीं शताब्दी महान परिवर्तनों की शताब्दी थी। लगभग पूरी शताब्दी वहाँ परिवर्तनों की आंधी ालती रही कि ीवन और समा ा के सारे प्रसंगों पर ोतना हावी रही। यह स ामु ा वह काल था ाब परिवर्तन ने प्रमुखता ग्रहण कर ली थी।

19 वीं शताब्दी के इस महान परिवर्तनों के बारे में ओंकारनाथ श्रीवास्तव कहते हैं कि-"वहाँ पूरे वेग के साथ 'औद्योगिक क्रांति' होती रही और सामाि ाक ीवन के ऊपरी तौर-तरीकों में ही नहीं, बल्कि उनके फलस्वरूप मानव के सूक्ष्म भाव-यंत्र में भी परिवर्तन होते रहे। यह वह काल था ाब नित्य नए आविष्कार हो रहे थे। लोग एक आविष्कार के ामत्कार के बाद स्थिर हों इसके पहले ही कोई दूसरा आविष्कार उसे भी मात देकर और भी बड़ा ामत्कार पैदा कर देता था। थाप की शक्ति ने ही काफी क्रांति कर दी थी, उसकी परणतियाँ अभी प्रारंभिक अवस्था में ही थीं कि बि ाली की खो ा हो गयी ि ासने परिवर्तन की गति को बहुत तीव्र कर दिया।"[6]

औद्योगीकरण

भारत वर्ष में औद्योगीकरण का प्रारंभ स्वतंत्रता से पूर्व ही हो गया था। किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही इस दिशा में तीव्रता से प्रयास हुए। पहिए का आविष्कार करना, मानवेतन शक्ति के माध्यम से गतिशील बनाना, पन ाक्की, बि ाली, बैटरी आदि आविष्कार औद्योगीकरण के आरंभिक ारण कहे ा सकते हैं। भारत की प्रथम पं ावर्षीय यो ाना कृषिप्रधान यो ाना थी। किंतु द्वितीय पं ावर्षीय यो ाना में औद्योगिक विकास को महत्व दिया गया। देश में उद्योग धंधों का व्यापक रूप में प्रसार हुआ। हस्थ तथा कुटीर उद्योगों की ागह

[6] हिंदी साहित्यः परिवर्तन के सौ वर्ष, ओंकारनाथ श्रीवास्तव-पृ.4

मशीनों ने ले ली। पदार्थों का उत्पादन फैक्ट्रियों में होने लगा। कृषि के क्षेत्र में बी ा बोने के लिए लोहे के हल को और फसल काटने के लिए मशीनों का उपयोग किया ाने लगा। ि ासके कारण फसल में काफी वृद्धि हुई। छोटे किसान इन साधनों को ुटाने में असमर्थ थे तथा वे अपनी खेती-बाड़ी छोड़ कर नगरों में निवास करने लगे। विषम आर्थिक परिस्थितियों के कारण गाँवों के किसान शहरी म ादूरों में परिवर्तित होने लगे। फैक्ट्रियों में मज़दूरों का शोषण होने लगा।

1960 के आसपास औद्योगीकरण का प्रभाव देश पर अधिक था। परिणामस्वरूप उप ाऊ ामीन कारखानों में बदलने लगी। उस समय के इस बदलाव को शेखर ोशी अपनी कहानी 'आखरी-टुकड़ा' के द्वारा प्रस्तुत करते हैं। इस कहानी में दो पी ि यों के लोग अपनी ामीन को कारखानों के निर्माण से ब ाते हैं, लेकिन तीसरी पी ि स्वयं अपनी ामीन को कारखानों में बदल देती है।

"कपड़े ाड़कर वह उठा और बाहर निकल आया। लोग अपनी मशीनों की सफाई में ुटे थे। कुछ लोग बाहर नलों पर हाथ धोते हुए, बातों में व्यस्त थे। लोहारखाने के पास से होते हुए, उसने अपनी छिपी-छिपी हताश दृष्टि से लॉन के पश्चिमी टुकड़े की ओर देखा। पसीने से ामकती हुई सूर ा की बाँह दिखाई दे रही थी। वह अब भी अपनी टोली को लेकर काम पर ुटा हुआ था। ामीन के उस खाली टुकड़े के किनारे-किनारे लोहे के खंभे गा कर, उसने बाड़ लगा दी थी और भट्टी-निहाई और दो- ार फ्रेम ामाकर लोहारखाने की सीमा को वहाँ तक ब ा लिया था।"[7]

[7] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.64

इस संदर्भ में पूरन ंद्र ोशी ने अपनी पुस्तक 'संस्कृति, विकास और सं ार क्रांति : बदलते परिप्रेक्ष्य में' प्रसिद्ध इतिहासकार एरिक हाब्सबाम के हवाले से बताया है कि-"औद्योगीकरण और शहरीकरण ने आम लोगों की संस्कृति को नष्ट करना शुरू कर दिया। ि स शहर में फैक्टरी स्थित थी वहाँ कोई व्यक्ति उस अवस्था में नहीं रह सकता ि स अवस्था में वह अपने गाँव में रहता था। पुरानी संस्कृति को छोड़ने तथा नई संस्कृति को अपनाने की इस संक्रमण कालीन अवधि में श्रमिक वर्ग की अवस्था सर्वाधिक दयनीय थी।"[8]

औद्योगीकरण के फलस्वरूप किसान स्वयं म ादूरों में बदलने लगे। "नई सड़क का निर्माण बड़ी तेज़ी से ाल रहा था। ठेकेदार के आदमी आस-पास के गाँवों में घूम-घूमकर मज़दूर इकट्ठा करते। खेती-पाती के मौसम में खेतिहर लोग अपने ही कामों में व्यस्त थे लेकिन ऐसे लोग ि न्हें पहले दूसरों की खेती पर म ादूरी मिल ाती थी, अब अपेक्षाकृत अधिक और नकद रो ी के लाल ा में ठेकेदार के साथ लग ाते थे। वहाँ सभी के लिए काम सुलभ था-ब ो और औरतें मिट्टी हटाने, पत्थर ोने का काम करते और मर्द लोग पहाड़ की कटाई-सफाई का काम सँभालते।"[9] गाँव का ाँ ा ारमरा उठा, हर व्यक्ति औद्योगिक नगरों की ओर दौड़ लगाने लगे। पापी पेट के लिए रो ी भी अब गाँव में मयस्सर न थी, आर्थिक बेकारी को सहता हुआ एक सर्वहारा वर्ग विकसित हुआ। पहले ि स तरह से कृषक वर्ग महत्वपूर्ण था उसी तरह का राष्ट्रीय महत्व अब श्रमिक वर्ग को भी मिलने लगा। कृषि के क्षेत्र में श्रमिक वर्ग का बड़ा महत्व है। औद्योगिक क्रांति की व ाह से कृषि क्षेत्र के श्रमिक अब म ादूरी को महत्व देने लगे। परिणामस्वरूप मध्यवर्ग की छोटे-छोटे किसानों को श्रमिक की हालत में पाने लगे। यह परिवर्तन ो समय के साथ समा ा में हुआ है उसको

[8] आलो ाना, अप्रैल- ून 2002

[9] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.53

हम 'हलवाहा' कहानी में देख सकते हैं। कहानी की इन पंक्तियों से यह विषय स्पष्ट होती है-"उन्हें यह सो ाकर थोड़ी निराश हुई कि ीवानंद ने पद्म को आखिर रा ी कर ही लिया है। बद्रीप्रधान अपनी उत्सुकता नहीं रोक पाए। टहलते-टहलते नदी की ओर ाले गए। ो कुछ उन्होंने देखा उसे देखकर उन्हें सहसा विश्वास नहीं हुआ क्रोध, घृणा तथा ग्लानि के कारण उनका शरीर काँपने लगा-कुल-घातक ि ाबुआ स्वयं हल ाला रहा था। फाल की टे ़ी-मे ़ी लकीरें उसके नौसिखिएपन की गवाही दे रही थीं।"[10] इस प्रकार औद्योगीकरण के कारण गाँव के छोटे किसान म ादूरों में बदलने लगे।

औद्योगिक विकास का प्रभाव देश की अर्थ व्यवस्था पर पड़ा। समा ा में सामंती अर्थव्यवस्था का स्थान धीरे-धीरे पूं ीवादी अर्थव्यवस्था ने लेना शुरू किया। ि ासके फलस्वरूप पूं ीपति और म ादूर वर्ग विकसित हुए। शहरों के इन कारखानों में म ादूरों का शोषण होने लगा। शोषण के इस प्रारंभिक दौर में कुछ म ादूरों ने इसके खिलाफ विद्रोह किया, लेकिन म ादूरों में एकता की भावना न होने के कारण वह विद्रोह सफल नहीं हो पाया। इस स्थिति का ि ात्रण 'बदबू' शीर्षक कहानी में किया गया है।

"ि ानकी उसे प्रतीक्षा थी उनमें से कोई भी न आया था, केवल हरीराम ने आकर अब तक दो-तीन बीड़ियाँ फूँक ली थीं। हरीराम की ओर से ही दो-तीन बार बात ीत शुरू करने का प्रयत्न किया ाा ुका था, लेकिन उसके अटूट मौन के कारण हर बार वह प्रयत्न विफल सिद्ध हुआ था। इस बार फिर हरीराम ने ही बात छेड़ी।

"घनश्याम की तो बीवी बीमार हो गई, लेकिन मोहन, राधे, हनीफ वगैरह किसी को तो आना ाहिए था।"[11]

---

[10] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.58

[11] उपन्यास का समा ाशास्त्र, डॉ.विश्वंभर दयाल गुप्त-पृ.68

"शायद उनके ब ो बीमार हो गए हों, ुँ ालाकर उसने उत्तर दे दिया।

हरीराम ने फिर बात दुहराई, इस बार स्वर में ाटुकारिता की भरमार थी।

"हम तो तुम्हारे पीछे हैं भाई। ैसा तुम कहोगे वैसा करेंगे। मैं तो ठीक टैम पर आ गया था, देख लो।"

"तुम ही ठीक टैम पर न आओगे तो ाफ साहब को रिपोट कौन देगा?" हरीराम की ओर उपेक्षापूर्ण दृष्टि डालकर घृणा से उसने कहा और अपनी साइकिल उठाकर बाहर ाल दिया।"[12]

'बदबू' म ादूरों को एक होने का संदेश देनेवाली कहानी है।

कारखानों में म ादूरों का शोषण कई प्रकार से मालिक वर्ग करते थे। म ादूरों को 'टी-ब्रेक' के लिए पंद्रह-बीस मिनट का भी नहीं देना ाहते हैं क्योंकि "उन्हें आशंका लगी रहती थी कि न ाने वे लोग ऐसे ही समय कोई नई यो ाना बना लें और एक-एक कर वह भीड़ उनके ैम्बर के इर्द गिर्द ामा हो ायें। फिर वही सिलसिला शुरू होगा, दरवा ो पर ठक्-ठक् के साथ उनमें से कुछ प्रमुख लोग अंदर और फिर अनुमति लेने की दिखावटी औप ारिकता पूरी करेंगे और फिर कोई नई समस्या उनके सामने रख दी ाएगी- ैसे शतरं ा की ाल ालते हुए अपनी गोट धीरे-से आगे या दायें-बायें सरका दी ाती है-खूब सो ा-सम ाकर ताकि आप भी ाल ालें आपको मात ही मिले। बाहर उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हुए ुंड से उठती हुई अ ीबोगरीब आवाज़ें और ाहरीला गुबार ऐसे मौकों पर उनका मन होता था कि ोर से ीखें कि आखिर तुम ाहते क्या हो या कि बहुत हो ुका अब मेरी ान बख्सो। लेकिन यह उनकी गरिमा और पद के अनुरूप न होता।"[13] इस प्रकार म ादूरों को

[12] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.136
[13] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.38

एकत्रित होने के लिए समय न दे कर उन से यादा से यादा काम करवाकर शोषण करने लगते थे। इस विषय को शेखर ोशी 'सीि.याँ' कहानी द्वारा हमारे सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

शहरीकरण

औद्योगीकरण के कारण भारत में अनेक परिवर्तन दृष्टिगो ार हुए। लेकिन इसका प्रभाव प्रमुख रूप से सामाि ाक व्यवस्था पर पड़ा। औद्योगीकरण के कारण ानसंख्या शहरों की ओर ब.ने लगी ि ासे शहरीकरण का उदय हुआ। वास्तव में औद्योगीकरण के साथ ही शहरीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। क्योंकि उद्योग क्रांति की व ाह से शहरों में म ादूरी करने के लिए लोगों को शहरों की तरफ आगे ब.ना पड़ा।

वास्तव में शहरीकरण का मुख्य कारण यह है कि गाँवों की खेतीबारी साल भर का काम नहीं है। शिक्षा, दवा, रो ागार आदि की आवश्यक सुविधाएँ भी गाँव में नहीं हैं। परिवार के सदस्य ि ास गति से ब.ते हैं उसके अनुसार ामीन की संपत्ति या उप ा नहीं ब.ती। फलतः प.ने तथा कमाने के ाक्कर में पड़कर गाँव के लोग शहरों की ओर अपने परिवर का रुख कर रहे हैं। क्योंकि शहरों में अनेक सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं ैसे शिक्षा स्वस्थ, यातायात के साधन, उपभोग की वस्तुएँ आदि।

पहाड़ियों के शहरीकरण का कारण कुछ भिन्न है। क्योंकि पहाड़ी प्रांत में गर्मियों में मेला होता है। इस के कारण वहाँ के लोगों को रो ागार मिलता है लेकिन वर्षा काल में रो ागार की तलाश में उन्हें शहरों की ओर ाना पड़ता है। इस स्थिति का ि ात्रण हमें 'बो ा' कहानी से मिलता है। "गर्मियों की समाप्ति के साथ ही सब सैलानियों का मेला उठने लगा ओर वर्षा की ाड़ी शुरू हो गई तो वह रो ागार की तलाश में नी ो उतर आया था। घर से ो पैर

बाहर निकला तो फिर ाल्दी घर की ओर नहीं मुड़ पाया। इस बी ा उसने कई पापड़ बेले थे-होटल की बेथरागिरी से लेकर घरेलू नौकरी तक।"[14] इस प्रकार लोगों के शहरीकरण के कारण कई हैं।

विश्वंभरदयाल गुप्त ने अपने एक कथन में बताया है कि-"औद्योगिक क्रांति के पश ाात गाँवों ने अपना रूप नगरों में प्रकट कर एक नई संस्कृति एवं समुदाय को ान्म दिया छोटे गाँव कस्बों में और कस्बे, शहरों में विकसित हुए तथा बड़े-बड़े नगर अंतर्राष्ट्रीय नगरों के रूप में विकसित होते ाा रहे हैं।"[15]

पहाड़ी या ग्रामीण लोग शहर में केवल नौकरी या रो ागार से ीवन निर्वाह करने के लिए रहते हैं। उनके मन में अपने गाँव या पहाड़ के प्रति लगाव रहता है और साथ ही विस्थापन का दुख। पहाड़ियों के इस लगाव के बारे में डॉ.विक्रम सिंह लिखते हैं कि-"कुमाँऊनी ग्रामीण परिवेश के अधिकांश व्यक्ति आपको शहरों में मिल ायेंगे ि न्हें परिस्थितियोंवश पहाड़ से विस्थापित होना पड़ा ह। उनसे बात ीत करके देखिए आपको मानना पड़ेगा कि विस्थापन से पहाड़ या ग्रामीण परिवेश के प्रति उनका लगाव, दायित्व कम नहीं हुआ है, अपनी अस्मिता और ाड़ों को स्वीकार करने में उन्हें गर्व महसूस होता है, पहाड़ी की याद दिल और दिमाग की गहराइयों में स्पंदित होती रहती है।"[16]

ग्रामीण या पहाड़ियों के इस लगाव को हम 'व्यतीत' कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी का मुख्य ारित्र बाबू ी की राम कहानी इसी लगाव या ुड़ाव को रेखांकित करती है। किंतु विडंबना यह है कि बाबू ी ैसे अनेक व्यक्तियों को आर्थिक अभावग्रस्तता तथा पारिवारिक उल ानों के ालते इस परिवेश को एक बार पुनः देख आने का अवसर तक नहीं मिलता। अपनी

---

[14] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.46

[15] उपन्यास का समा ाशास्त्र, डॉ.विश्वंभरदयाल गुप्त-पृ.68

[16] अनुसंधान, अप्रैल-2011

ला ाारी के कारण वह इस तरह से मौन और खोये-खोये रहते हैं। बाबू ाी का यह लगाव हमें शशि की इन बातों से स्पष्ट होता है-"गाँव की, ामीन- ाायदाद की बातें होती-यही उनका प्रिय विषय था। ाीवन के पिछले साठ-बासठ वर्षों तक गाँव में ि ास घर-संसार के प्रति वे तन-मन से समर्पित रहे थे, वही किसी ब ो के टूटे खिलौने की तरह हर समय उनकी कल्पना में बिखरा रहता।"[17]

आई.पी.देसाई ने अपने अध्ययन में पाया कि "व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करने के लिए नगर में ााता है, वहाँ से वापिस ग्राम में नहीं आता है। वह अपनी शिक्षा के अनुरूप व्यवस्था नगरों में ही प्राप्त कर सकता है इससे परिवार की आवास की संयुक्ति कम हो ाती है।"[18]

गाँव में प े-लिखे लोग यादातर शहर की ओर ाना पसंद करते हैं1 शहर ाने के बाद वहाँ की सुख-सुविधाएँ उसे वापस गाँव नहीं आने देती। खासकर नई पी ी के लोग इन सुविधाओं के आदि हो ाते हैं। परिणामस्वरूप वे लोग वापस गाँव नहीं आना ाहते। इस स्थिति का ि ात्रण हमें 'विस नि' कहानी से मिलता है। "दोनों ही भाइयों का ब ापन गाँव में बीता था और दोनों को गाँव की मिट्टी से लगाव भी था। लेकिन नयी पी ी के ब ों के लिए ैसे वह परदेस हो। सीमित साधनों के कारण दोनों परिवारों के लिए गाँव में लगातार आवागमन भी संभव न था।"[19] इस प्रकार गाँव की असुविधाओं के कारण लोग शहरों की ओर स्थानांतरित होने लगे।

इस संदर्भ में देवेंद्र कुमार ौबे लिखते हैं कि-"गाँव के लिए यह सब से बड़ी त्रासदी है, एक प्रकार से गाँव ि ास अनमोल हीरे को शहर इसलिए भे ाता

[17] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.97
[18] संस्कृति के ाार अध्याय, रामधारीसिंह दिनकर-पृ.26
[19] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.151

है कि वह अपनी (गाँव) स्थिति में कुछ बदलाव ला सकेगा लेकिन शहर की लंबी गुफा उसे निगल देती है।"[20]

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं ो कि शहरी ि ंदगी छोड़कर गाँव के शांत वातावरण में रहना ाहते हैं ो शहरी भाग दौड़ से ऊब गए हैं। इस स्थिति को हम 'टूटन' कहानी में देख सकते हैं। "त्रिलो ान की वर्षों से साध थी कि वे नौकरी से मुक्त होकर अपना शेष ीवन गाँव में बिताएँ लेकिन पत्नी और ब ों को उनका निर्णय हास्यास्पद लगता। वे लोग त्रिलो ान की या ो ाना पर कभी-कभी विनोदपूर्ण ा ार्ा करते और ा ार्ा के अंत में त्रिलो ान को लगता ैसे वह उस समर में अकेले हो।"[21]

शहर में रहते हुए भी कुछ लोग अपने गाँव के प्रति लगाव के कारण वहाँ की समस्याओं को सुधारना ाहते हैं यह स्थिति हमें 'निर्णय' कहानी के 'श्रीधर' पात्र में मिलती है-"उसका एक सपना था कि ि ास गाँव-देहात की मिट्टी ने उसे ान्म दिया है उसे स ाने-सँवारने में कुछ अपना भी योगदान दे। वह उन समस्याओं की ाड़ तक ाना ाहता था, उनसे ू ाना ाहता था।"[22]

शहरीकरण से गाँव या पहाड़ के बू े लोग दुखी हैं। इसीलिए वे लोग युवकों को अपने गाँव का महत्व बताते हुए उन्हें वापस गाँव लाने का प्रयत्न करते हैं। यही प्रयत्न हमें 'टूटन' कहानी में मिलता है। लीलाधर त्रिलो ान से कहते हैं कि-"आदमी परदेस में कितना ही बड़ा बन ाय, कितना भी संपत्ति ोड़ ले, रहेगा परदेस ही। परदेस तो विमाता की गोद है। कितने भरे करे विमाता-विमाता ही रहेगी। अपना घर अपनी भूमि की बात ही और है। यही

---

[20] हंस, अप्रैल-1990
[21] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.91
[22] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.125

असल माँ है। स ा कहना, इतने साल तुम परदेस में रहे हो लेकिन ो शांति तुम्हें यहाँ मिलती है, वह क्या कभी क्षण भर के लिए भी वहाँ मिली?" [23]

अतः स्पष्ट होता है कि शहरी सुविधाओं को देखकर गाँव के लोग आकर्षित होकर शहर की ओर पलायन कर रहे हैं।

औद्योगिक सभ्यता अपने साथ पूं ीवादी व्यक्तिवाद को लेकर आयी ि सके प्रभाव से धीरे-धीरे संयुक्त परिवार की व्यवसथा का विघटन हुआ और मानवी संबंधों के क्रमशः आर्थिक लाभ पर आधारित होते ाने के कारण मनुष्य और मनुष्य के बी ा रागात्मकता का ह्रास हुआ। इस संदर्भ में डॉ.सुवास कुमार लिखते हैं कि-"पूँ ीवादी औद्योगीकरण ने अनेक स्तरों पर व्यक्ति और व्यक्ति तथा व्यक्ति और समा ा के पारस्परिक अलगाव को ब ाया है।"[24] औद्योगिक विकास के ालते परिवार भी टूट गये हैं। परिवार में आय-आधारित विभा ान हो गया और यह भी कि हर कोई अपने आपको विलग रखना ाहता था और इसी के ालते पारस्परिक अलगाव ब ा। 'किं करोमि ानार्दन' कहानी में पारिवारिक विघटन का कारण आय-आधारित विभा ान ही है। क्योंकि इस कहानी का शिवदत्त पैसा कमाता है वह अपने आपको विलग रखना ाहता है। गृहकलह में "शिवदत्त ने अपनी पत्नी के सम्मुख ही माँ-बाप को सुनाकर स्पष्ट शब्दों में कह दिया था, अपने पसीने की कमाई मैं किसे दूँ, कहाँ फेंकूँ, इस पर बहस करने का अधिकार किसी को नहीं। बड़ी बहू उसी दिन स्थिति को अ छी तरह सम ा गई थी। सास-श्वसुर को सुनाकर बात कह देने में उसे अधिक संको ा नहीं होता।"[25] इस प्रकार आय आधारित विभा ान के कारण संयुक्त परिवार में पारस्परिक अलगाव ब ने लगा।

---

[23] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.90

[24] आधुनिक हिंदी कविता, आत्मनिर्वासन और अकेलेपन का संदर्भ, डॉ.सुवास कुमार-पृ.4-5

[25] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.11

उद्योग के कारण घर के लड़के शहर में रहते हैं तो घर की बहुएँ अपने कमाऊ पतियों को देखकर अहंकार से ागड़ने लगती हैं। परिणामस्वरूप परिवार टूट ाता है। इस प्रकार परिवार टूट ाने का बुरा असर घर के वृद्धों पर पड़ता है। इसका ित्रण हमें 'परिक्रमा' कहानी में मिलता है। "रामी! िस दिन मैं मर ाऊँगा, उस दिन तुम पहले बँटवारा करना फिर मेरी अर्थी उठाना। पर ाब तक मैं िंदा हूँ, कभी ऐसी बात इस घर में नहीं उठेगी।" क्रोध और दुख के कारण उनका शरीर काँपने लगा था और आँखें भर आयी थीं।"[26]

परिवार टूटने का दुख घर की विधवाओं पर भी दिखाई देता है। क्योंकि उनको ीवन ीने का कोई सहारा नहीं है। परिणामस्वरूप निराश होने लगते हैं। "बहिन, दिल छोटा नहीं करते। दुख-सुख तो रात-दिन की तरह लगे ही रहते हैं। भगवान करे, भुवन ार पैसे कमाने के लायक हो ाय। मैं तु ो उसके साथ भे ा दूँगी। हरीश भी प ़-लिखकर आदमी बन ाएगा।"[27]

संयुक्तता की ागह वैयक्तिकता ने ले ली और आत्मोन्नति के परिवार का हर व्यक्ति शहर की ओर भागता लेकिन शहर में वह मात्र ीवन-निर्वाह कर सकता है, ीवन स्तर ऊँ ा उठा नहीं सकता। क्योंकि पूं ीवादी औद्योगीकरण केवल शोषण करना ानता है। वह समा ावादी उत्पादन-पद्धति की तरह मनुष्य की आवश्यकताओं से ुड़कर परि ालित नहीं होता।

वस्तुतः "गाँव की अर्थ व्यवस्था ाहाँ परिवार-सापेक्ष थी, वहाँ शहर की अर्थ व्यवस्था व्यक्ति-सापेक्ष हुई। परिवार और गाँव से नौकरीपेशा लोगों के अधिकतर बाहर रहने के कारण संयुक्त परिवार का ाँ ा बिगड़कर ऐकिक

---

[26] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.143
[27] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.143

परिवार में बदलने लगा।"[28] 'विस ित' कहानी का 'तारी' और 'मँ ाले' दोनों नौकरी पेशे के कारण शहर में अपने परिवार के साथ रहने लगे। लेकिन उनकी बड़ी भाभी ो बाल विधवा है, "उन दोनों में से किसी के साथ भी ाने को रा ी नहीं होगी, दोनों ने ही रस्मअदाई के तौर पर उनसे अपने साथ ालने का आग्रह किया था। इस बार भाभी ने अपना स्वतंत्र निर्णय लिया था। उसके आग्रह को सह ा भाव से सुनकर, पुरखों की देहारी पर ही अपनी आखिरी साँस छोड़ने की उन्होंने दुहाई दी तो और अधिक आग्रह करने का साहस तारी और मं ाले में से किसी का न हुआ।"[29] इस प्रकार नौकरी पेशे के कारण गाँव का संयुक्त परिवार शहर के एकल परिवार के रूप में बदलने लगा।

'संवादीन' कहानी में ताई के पारिवारिक विघटन का कारण शहर की नौकरी ही है। "ताई ने अपने ीवन में अ छे दिन भी देखे थे। पूत-परिवार, बहू-बेटियाँ, नौकर- ारक, गाय- ोर क्या नहीं था बड़े घर में। देखते ही देखते क्या से क्या हो गया। बहू-बेटे गाँव का मोह छोड़कर शहरों के होकर रह गए। बेटियाँ अपने-अपने हाथ पीले कराकर अपनी गृहस्थी में रम गई।"[30] इस प्रकार ताई का संयुक्त परिवार शहर के उद्योग के कारण विघटित होकर ताई स्वयं अकेली गाँव में रहती है। अतः भारत के औद्योगीकरण में परिवार कुछ टूटता हुआ दिखाई देता है-नैतिकता, परंपरा, समा ा, उद्योग सभी को वह विकृत बना रहा है।

---

[28] आधुनिक हिंदी कविताःआत्मनिर्वासन और अकेलेपन का संदर्भ, डॉ.सुवास कुमार-पृ.16

[29] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.149

[30] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.37

बेरो ागारी

औद्योगीकरण से उत्पन्न एक और समस्या शिक्षित बेरो ागारी। आज़ादी से पहले अंग्रेज़ कुशासन के कारण भारत में कुटीर उद्योगों का सर्वनाश हुआ। आज़ादी के बाद भी इसी कारणवश हर ागह बेरो ागारी की विकट समस्या सामने आयी है। औद्योगीकरण केवल कुछ ही लोगों को रो ागार देने में सफल हुआ। इस का मुख्य कारण ानसंख्या में तीव्र गति से ब ोत्तरी, सरकारी यो ानाएँ, नेताओं की असमर्थता आदि। इन कारणों की व ाह से बीसवीं सदी में यह समस्या अधिक होने लगी। आ ाकल रो ागार पाना है तो रिश्वत देना पड़ता है ि ानके पास रुपये होते हैं, वे रो ागार पा लेते हैं, लेकिन ि ानके घर की स्थिति दयनीय हो वो इंसान क्या करे, कुछ लोग दयनीय परिस्थिति के कारण नौकरी छोड़ते हैं, तो कुछ लोग अपने आदर्शों के कारण रिश्वत देकर या सिफारिशों के बल पर नौकरी प्राप्त नहीं करना ाहते हैं, ऐसा ही रूप हमें 'कविप्रिया' कहानी में 'शेखर ोशी' ी बताने की कोशिश करते हैं, ि ासमें 'गिरीश' ो आदर्शवादी है, वह अपने उ ा आदर्शों को किसी भी परिस्थिति के सामने घुटने टेक कर तोड़ देने को विवश नहीं होता, बल्कि वह अपने आदर्श को ीवित रखने के लिए किसी भी परिस्थिति का सामना करने को तैयार रहता है। वह अपने आदर्श के लिए माँ बाप से विदा होकर ाल दिया। माँ के पूछने पर वह कहता है "मैं सिफारिश के बल पर किसी और के पेट पर लात नहीं मार सकता।"

"हाँ, माँ। मैं अनोखा ही हूँ। सिफारिश क्यों ली ाती है, बेकारी क्यों होती है, यह ानता हूँ इसी कारण अनोखा हूँ न। लोग सिफारिश लेकर नौकरी पा लेते हैं, तो मैं भी ऐसा ही करूँ?"[31]

[31] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.81

वह नौकरी का परित्याग करता है और अपने आदर्श की रक्षा करते हुए कवि बनता है।

इस प्रकार शेखर ोशी ने 1960 के समय की सामा ाक समस्या बेरो ागारी को एक दिशा प्रदान की।

बेरो ागारी की समस्या हमें 'प्रश्नवा ाक आकृतियाँ' कहानी में भी देखने को मिलती हैं। लेकिन यहाँ की बेरो ागारी डिग्रीधारी बेरो ागारी है। बेरो ागारी से केवल 'मैं' नामक पात्र पीड़ित नहीं है। पूरा परिवार इस समस्या से पीड़ित है। "सुबह ााय पीने के बाद ही पिता ी ैसे याद दिला देते हैं, लाइब्रेरी से लौटते वक्त ारा मोती बाबू से मिल लेना, या और कोई ऐसी ही बात। लेकिन हर बात के साथ लाइब्रेरी ाने का संबंध ुड़ा रहता है। ानता हूँ कि मोती बाबू से मिलने की बात या ऐसी ही अन्य बातों का कोई महत्व नहीं। वास्तविक मंतव्य पिता ी की बातों का मेरा नियमित लाइब्रेरी ाने के संबंध में है। घर में अखबार नहीं आता, पड़ोस में बीनू मामा के घर 'एक्सप्रेस' आता है। समा ार प. लेने भर के लिए वह पर्याप्त है, लेकिन पिता ी को इतने भर से संतोष नहीं। पब्लिक लाइब्रेरी में 'टाइम्स' आता होगा, ारा ाकर देख लिया करो। उसमें 'वाण्टेड' के बहुत सारे कॉलम रहते हैं। न ाने कब उस अखबार को देखकर उन्होंने यह आदेश दिया था।"[32] इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि बेरो ागारी केवल व्यक्ति की समस्या न रह कर पूरे परिवार की समस्या है।

सन् 1985 के बाद औद्योगिक क्षेत्र में एक नया परिवर्तन ान्म लिया है। औद्योगीकरण की इस नयी व्यवस्था में पेशे का आधार ातिगत न रहकर व्यक्तिगत हो गया है। लेकिन पूर्व काल में अमुख ाति के लोग अमुख काम करते हैं ैसे नियम थे। अब समा ा का नया स्तरीकरण भी श्रम ही करेगा। इस

[32] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.24

विषय का स्पष्टीकरण हमें 'गलता लोहा' कहानी में मिलता है। "मोहन का यह हस्तक्षेप इतनी फुर्ती और आकस्मिक ंग से हुआ था कि धनराम को ना- ुक का मौका ही नहीं मिला। वह अवाक मोहन की ओर देखता रहा। उसे मोहन की कारीगरी पर उतना आश ार्य नहीं हुआ ि ातना पुरोहित खानदान के एक युवक का इस तरह के काम में, उसकी भट्टी पर बैठकर, हाथ डालने पर हुआ था। वह शंकित दृष्टि से इधर-उधर देखने लगा।"[33] इस से यह स्पष्ट हो रहा है कि सन् 1985 के समा ा में ाति को प्रधानता न देकर श्रम को महत्व दिया ाता था।

यही बात हमें 'हलवाहा' कहानी में भी देखने को मिलती है। प्रा ाीन काल में उ ा ाति के लोग हल ालाना पाप मानते थे। इसका स्पष्टीकरण हमें कहानी की इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है-"भैय्या, कोई दूसरी ाात का आदमी होता तो खुद ही ोत-बो लेता, लेकिन हम लोगों के लिए तो इसका भी निषेध है, बिरादर लोग ाात-बाहर कर देंगे।"[34] लेकिन कहानी का ीवानंद ो एक उ ा ाात का आदमी है, वह ाति को विशेष महत्व न देकर व्यक्तिगत श्रम को महत्व देता है। इसीलिए हलवाहा न मिलने पर स्वयं हल ाला लेता है। इस विषय को बद्री प्रधान अपने शब्दों में कहते हैं-"कुल-घातक ि ाबुआ स्वयं हल ाला रहा था। फाल की टे ़ी-मे ़ी लकीरें उसके नौसिखिएपन की गवाही दे रही थीं।"[35] अतः स्पष्ट है कि सन् 1985 से औद्योगिक समा ा ाति को प्रमुखता न देकर श्रम को महत्व दिया है। इस सामा ाक परिवर्तन को शेखर ोशी ने अपनी कहानियाँ 'गलता लोहा' और 'हलवाहा' के द्वारा पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

---

[33] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.80
[34] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.55
[35] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.58

सामाि ाक परिवर्तन के इस संदर्भ में अरुण प्रकाश लिखते हैं कि- "सभ्यता की दौड़ में तकनीक, पुराने पड़ गए विश्वासों और अवधारणाओं को पछाड़ता ालता है, वही ब ाता है ो समय के साथ होड़ ले सके। समा ा की बुनावट, परिवर्तन की प्रक्रिया और उसके आंतरिक नियमों के संधान में उनकी विशेष रु ि रही है। लेकिन उनका ोर सह ा परिवर्तन पर है।"[36]

स्वतंत्रता पूर्व से ही हमारे समा ा में ाति भेद विद्यमान था। हज़ारों वर्षों के काल- ाक्र से गु ारती हुई यह सामाि ाक व्यवस्था भारत में सन् 1960 के उस समा ा में भी रही है। उ ा ाति के लोग ैसे ब्राह्मण, निम्न ाति के शिल्पकारों को अछूत मानते थे और उनके स्पर्श को दोष। इस विषय को शेखर ोशी 'समर्पण' कहानी के द्वारा प्रस्तुत करते हैं। "ि ानके स्पर्श-मात्र के दोष से मुक्त होने के लिए मालिक लोगों को 'शुद्धि-शुद्धि' कहकर ाल के छींटें डालने पड़ते थे, उन्हीं शिल्पकारों को इस बात का गर्व था कि ब्राह्मणों में सर्वश्रेष्ठ गोत्रवाले कुल का दास होने का उन्हें सौभाग्य प्राप्त है।"[37] निम्न ाति के लोगों से उ ा ाति के लोग सभी काम करवाते थे लेकिन उनको अलग रखते थे, यहाँ तक कि ाय की दुकान में भी उनका गिलास अलग रखते थे। " ाय शेष हो ाने पर ब ुवा दोनों गिलास नल पर धो लाया और दुकानदार के आदेशानुसार उन्हें एक किनारे टिका दिया। वास्तव में कोने पर रखे हुए ये ार-छः गिलास उसकी ाति के लोगों के ही लिए थे, ो इसी प्रकार ग्राहकों द्वारा धोकर रख दिए ाते थे।"[38] इस से यह स्पष्ट होता है कि आज़ादी के बाद कई क्षेत्रों में प्रगति हुई, कई क्रांतियाँ हुई ैसे औद्योगीकरण, शहरीकरण

---

[36] आ ाकल, मा ि 1995-पृ.47

[37] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.39

[38] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.38

तकनीकीकरण, भूमंडलीकरण आदि मगर ाति भेद में कोई परिवर्तन नहीं आया।

हमारा समा ा अर्थ आधारित समा ा है। अर्थ के कारण हमारा समा ा तीन वर्गों में विभक्त हुआ है। परिणामस्वरूप इन वर्गों में लगातार संघर्ष होता रहता है। समा ा का उ ा वर्ग सर्वहारा वर्ग की दृष्टि में अत्या ाार-शोषण करता है। वह स्वयं शोषित वर्ग है। इसलिए पीड़ा उसे ही सहन करनी पड़ती है। 'अर्थ' की दीवार दोनों के बी ा खड़ी रहती है। ाो दोनों को एक दूसरे से विलग करती है। 'दा यु' में मदन और ागदीशबाबू का विरोध इसी प्रकार का है। यह सामा ाक और आर्थिक अंतर शेखर ाोशी की कहानियों में दर्शनीय है। एक रेस्त्रां में काम करनेवाला निम्नवर्गीय 'मदन' सभी के सामने ' ागदीशबाबू' को 'दा यु' (बड़ा भाई) बुलना अ छा नहीं लगा। अपना वर्ग बोध ाग ुकने के कारण वह मदन पर भड़क उठते हैं-"दा यु, ााय लाऊँ?"

" ााय नहीं, लेकिन दा यु-दा यु क्या ा िल्लाते रहते हो दिन-रात। किसी की प्रेस्टि ा का ख्याल भी नहीं है तुम्हें?"[39] इस संदर्भ में शेखर ाोशी स्वयं लिखते हैं कि-" ाीवन की परिस्थितियों ने छोटी उम्र में ही मु ो विभिन्न भौगोलिक और सामा ाक परिवेशों में ाीने के लिए विवश किया है। छोटी उम्र में ही मातृविहीन हो ाने के बाद पर्वतीय अं ाल के प्राकृतिक सौंदर्य से वनस्पतिविहीन रा ास्थान में विस्थापित कर दिये ाने का दुःखद अनुभव और अपने परि ित परिवेश से कट ाने की कष्टप्रद अनुभूतियों ने मेरी संवेदना की धार तेज़ कर दी। सम ा विकसित होने पर अपने नि ाी अनुभवों का सामा ाक परिप्रेक्ष्य में देखने की प्रक्रिया आंरभ होने के कारण ाब मैंने 1953-54 में 'दा यु' कहानी लिखी तो उसका नायक मेरा ही प्रतिरूप था ाो अपने परिवेश

[39] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ाोशी-पृ.38

से विस्थापित होकर अपरि ितों की भीड़ में किसी आत्मीय को खो ा रहा था, लेकिन सामा िक यथार्थ ने उसे अहसास करा दिया था कि आत्मीय संबंधों के मूल भी वर्गस्वार्थ होते हैं ो मानवीय संबंधों में दरार डाल देते हैं।"[40]

सन् 1950-60 के समा ा की एक और समस्या बाल-विवाह थी। छोटी-छोटी लड़कियों का विवाह वृद्धों से करवाते थे। ि ासका कारण लड़कियों की आर्थिक विषमता है। उस समय की इस समस्या को शेखर ोशी ने 'शुभो दीदी' कहानी के द्वारा प्रस्तुत किया है। इस कहानी में 'शुभो' का विवाह बू े विशू बाबू से होता है ि ासके बाल सफेद हैं। छोटी उम्र होने के कारण 'शुभा' ब ो को ान्म देने के बाद मर ाती है। "सहसा शुभो दी ने धीमी आवाज़ में माँ को पुकारा। माँ दौड़कर उसके पास गयी। शुभो दी ने आँखें खोलकर धीमे-से-स्वर में न ाने क्या कहा, हम सम ा नहीं पाए। पर माँ ने नव ात शिशु को अपनी बाँहों में लेकर शुभो दी के आगे कर दिया। बड़ी व्यग्रता से शुभो दी ने शिशु के सिर पर हाथ फेरा। गहरे बालों को देखकर ैसे उसे अपार संतोष हुआ, उस क्षण उसकी आँखों में अनोखी ामक आ गई थी। सभी ने सुना, शुभो दी कह रही थी "संतू, सफेद नहीं, काले बाल। शुभो दी ने ये ही शब्द अंतिम बार कहे थे।

माँ उस दिन फूट-फूटकर रोई थी। उसकी लक्ष्मी दूसरी बार उससे विदा हो गई थी।"[41] अशिक्षा के कारण होनेवाली बाल्य-विवाह की समस्या को लेखक ने इस प्रकार स्पष्ट किया है।

यही समस्या हमें 'गोपुली बुबु' कहानी में भी देखने को मिलती है। उस समय छोटी-छोटी लड़कियों का विवाह बड़ों के साथ करवाते थे। ाब उन्हें विवाह का मतलब तक नहीं पता, परिणामस्वरूप पति के देहांत के बाद

---

[40] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.10

[41] ब ा का सपना, शेखर ोशी-पृ.77

आ ीवन बाल-विधवा के रूप में ीवन निर्वाह करते थे। बाल विवाह का ित्रण हमें 'गोपुली बुबु' कहानी में 'मैं' पात्र द्वारा प्रस्तुत है-" ागुली पहनने की उमर में ब्याह हो गया था। ाकमक पत्थरों से गुट्टी खेलते, पात-पतेल लाते, ोरों को ाराते, पू ाा-सा ा करते एक दिन साथियों ने कहा-मँगसिर में तेरा ब्याह होगा। रंग-बिरंगा घाघरा-ओ ़नी पहनने, हाथ-पाँवों में पहुँ ाी- ााँ ार खनकाने की मन में बड़ी हवस रही। दुल्हन बनने का मतलब क्या होता है, इसका तो ज्ञान था ही नहीं।

"एक दिन दमामा-रणसिंग ब ाते बारात आ पहुँ ाी। मैं दुल्हन बनी। पू ाा-पाठ हुआ। माँ-बाबा ने कन्यादान किया। पंडित ाी मंत्र प ़ रहे थे, गाँव पड़ोस की दादी- ाियाँ गीत गा रही थीं, पर नंदी के मारे मेरी आँखें बंद हुई ाती थीं। बौ यू ने मुख में पानी के छींटें दिए-इतनी ही याद है।"[42]

अंतिम दशक के ग्रामीण कथा-साहित्य में साहित्यकारों ने गाँव में ाकित्सा सुविधा के अभाव की समस्या को दर्शाया है। गाँव में अस्पताल न रहने के कारण गाँव के लोग परेशान हैं। यही समस्या हमें 'गोपुल बुबु' कहानी में दर्शनीय है। "अपने सब सुख-दुःख मु ासे कह देती थी, उस साल कहने लगी-अबकी नहीं ब ूंगी ननदी! यह मु ो ले ानेवाला ही आया है पेट में-स ाी रे! उसकी ही वाणी स ा हुई। इन डाँडो-टीलों वाले बं ार देहात में क्या हो सकता था, न दवा न डाक्टर! ओ माँ-ओ बबा करती ाती रही बे ाारी। मेरी कुंतुलि भी ऐसे ही छटपटाती गई। वैद्य ा की दवाई से क्या होता? काल आ गया होगा, ाती रही। देसावर में तो, कहते हैं, बड़े-बड़े अस्पताल होते हैं। सुना, मरण-बाट लगे बीमार को तरह-तरह की दवाईयों से डॉक्टर मौत के मुँह से निकाल लाते हैं-यहाँ यूँ ही हुआ। अब सुना है समेसर में एक अस्पताल

[42] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.59

खुल गया है डॉक्टर आ ाए, दवाइयाँ पहुँ ा ाएँ तब सम ो कि अस्पताल खुला है। हमारी तो कट गई, अब बाल-ब ो हैं वे छे दिन देख लेते यही हमारा संतोष था। अतः स्पष्ट है कि गाँव के लोग ि ाकित्सा के अभाव में परेशान थे। लेकिन वे लोग अपनी नई पी ़ी को इस परेशानी से दूर रखना ाहते हैं। इस प्रकार शेखर ोशी बीसवीं शती के आरंभिक दशकों की इस सामा ि ाक समस्या को सफलता पूर्वक प्रस्तुत करते हैं।

तकनीकीकरण

औद्योगिक क्रांति ने मानव को अनेक रूपों में प्रभावित किया। सुख-सुविधा की प्राप्ति के लिए मनुष्य ने यंत्र का आविष्कार किया था। ो समय के साथ तकनीकी में परिवर्तित हो गया। तकनीकी विकास में गुणात्मक वृद्धि ने मनुष्य को भी यांत्रिक बना दिया। 'औद्योगीकरण' ने मनुष्य के भीतर से मनुष्यता के भाव को लुप्त कर दिया है। आ ा का मानव अधिकाधिक स्वार्थसंकुल होता ा रहा है। सद्भाव, सदाशयता और सहयोग ैसे भाव केवल कोश के शब्द बन गए हैं या भाषणों के निरर्थक शब्द। व्यक्ति अपने को केंद्र में रखकर सभी ीज़ों को देखने लगा। तकनीकी के इस दौर में वह अपनी अलग पह ान रखना ाहता है। तकनीकीकरण ने मनुष्य को यांत्रिक बना दिया। औद्योगिक क्रांति और तकनीकी के साथ आये इस परिवर्तन को शेखर ोशी ने अपनी कहानी 'उस्ताद' के द्वारा प्रस्तुत किया है। इस कहानी में उस्ताद अपनी पूरी विद्या शिष्य को नहीं बताना ाहते। मोटर इं ान का काम ाननेवाले उस्ताद 'वाल्व टाइमिंग' को नियंत्रित करने का बारीक हुनर शिष्य को बताना नहीं ाहते। कहानी में इस विषय का स्पष्टीकरण हमें लेखक के इन शब्दों से मिलता है-"उन्होंने क्रैंक शाफ्ट, पिस्टन, वाल और कैम शाफ्ट इत्यादि ब्लाक में फिट किये, परंतु मैं नहीं सम ा पाता कि वालटैमिंग कब बाँधा

ाएगा। सहसा उस्ताद ने मेरी ओर देखा और कृत्रिम स्नेहपूर्ण स्वर में बोले, बाबू। ाय-वाय पी ुके कि नहीं? ाओ पी आओ, एक आध गिलास हमारे लिए भी भि ावा देना।"[43]

गंगा प्रसाद विमल लिखते हैं कि-"तकनीक वास्तव में आधुनिकता की संस्कृति है। तकनीकी विकास का महत्वपूर्ण पक्ष सामा ाि क परिवर्तन में एक समृद्धिपरक और सार्थक भूमिका अदा करता है। वह एक प्रकार से परिवर्तन का ए ोंट है। समग्र संसार में तकनीकी विकास को इसलिए स्वीकारा गया है कि यह ान सामान्य से ीवन स्तर को ऊँ ा उठाने के लिए प्रयत्नशील यंत्रानुशासन है।"[44]

तेज़ी से पनप रही यांत्रिकता की विसंगत मूल्य स्थिति आधुनिकता की देन है ि ससे आम आदमी अत्यधिक प्रभावित हुआ है। ाहे वह किसी कारखाने का कामगार हो या किसी फर्म का म ादूर। यांत्रिकता की इस विसंगत मूल्य स्थिति के प्रभाववश पनपी अमानवीय व्यवस्था का सर्वाधिक शिकार यही आम आदमी हुआ है इनका सीधा साक्षात्कार उद्योगपतियों, मालिकों से नहीं होता इनके बी ा में होती है व्यवस्था। इसलिए निरंतर शोषित होते इन कामगारों का विरोध अमानवीय व्यवस्था और उसके व्यवस्थापकों के प्रति ही अधिक होता है। म ादूर और आम आदमी के मानवीय संघर्ष की सं ोतना शुरुआत शेखर ोशी की 'बदबू' कहानी से होती है। यांत्रिकता की भयावह स्थिति से उप ी अमानवीय व्यवस्था ने किस तरह मनुष्य को यंत्रवत् बना दिया है। इस संवेदना को 'बदबू' कहीन में देखा ा सकता है।

इस कहानी में कारखाने का कामगार दिन रात अमानवीय व्यवस्था और मशीनों की छत्र-छाया में कार्यरत कामगारों की ि ा ीविषा की विवशता के

---

[43] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.22

[44] आधुनिक साहित्य के संदर्भ में, गंगा प्रसाद विमल-पृ.23

ालते 'बदबू' का अभ्यस्त हो ाता है। आ ीविका के लिए संघर्षरत आम आदमी को इस व्यवस्था ने अपने अनुकूल ालने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। रो ी-रोटी का प्रश्न ही व्यक्ति को अमानवीय व्यवस्था की बदबू से सम ौता करने को विवश करता है। यंत्र सभ्यता की भयावह स्थिति ने आम आदमी की संवेदना को भी मृत प्राय कर दिया है। ि ा ीविषा के ाबरदस्त दबाव के ालते उसके पास अमानवीय व्यवस्था से सम ौता करने के अतिरिक्त कोई साधन नहीं है। कहानी में कामगारों की इस विवशता के ित्र को देखा ा सकता है- "नीली छतरी वाले का शुक्र करो कि यहाँ काम मिल गया। अ छे भले प़े-लिखे लोग धक्के खाते फिरते हैं।"[45] यही विवशता आम आदमी को स्वयं के शोषण, घुटन भरी नीरस ि ंदगी से सम ौता करने के लिए बाध्य करती है।

अतः औद्योगीकरण, शहरीकरण और तकनीकीकरण एक दूसरे से संबंधित है क्योंकि उद्योग क्रांति के कारण औद्योगीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई है ि ासमें यंत्रीकीकरण का महत्वपूर्ण स्थान है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया के साथ स्वभावतः शहरीकरण की प्रक्रिया शुरू होती है। इन तीनों के समग्र रूप को आधुनिकीकरण कहाँ ाता है।

<u>भूमंडलीकरण</u>

भूमंडलीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है ि ासका क्षेत्र समस्त भूमंडल है। अर्थात् इस प्रक्रिया के तहत स्वागत प्रतिबंध या सीमाएँ नहीं होगी। इसका यह भी अर्थ हुआ कि पूर्व में विभिन्न स्वतंत्र राष्ट्र के द्वारा अपनी प्रभुसत्ता के अधीन ो भौगोलिक सीमाएँ निर्धारित की गई थी, उन्हें भूमंडलीकरण ुनौती देता है। इस प्रकार भूमंडलीकरण एक ऐसी भौगोलिक प्रक्रिया है ो राष्ट्र-रा य की सीमाओं का अतिक्रमण करती है।

---

[45] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.46

भारत के संदर्भ में भूमंडलीकरण की शुरुआत सन् 1991 से मानी ा सकती है। यहाँ तक आते-आते भारत सरकार को लगने लगा था कि आर्थिक मामलों में हम कम ोर है और हमारे सामने अब कोई विकल्प नहीं है सिवाय आर्थिक उदारीकरण के, भूमंडलीकरण के, ूँकि भारत अब सोने की ि ाड़िया नहीं रह गया था, उसके सारे पंख 20 वीं सदी के पाँ ावें दशक तक नी ो ा ुके थे। अब उपनिवेशवाद तो भारत से निकल गया लेकिन पाश ात्य राष्ट्रों की उपनिवेशवादी मानसिकता ास की तस बनी रह गयी। अब उपनिवेशवाद भूमंडलीकरण के नये रूप में प्रकट हुआ। कहना न होगा कि यह नवउपनिवेशवादी दौर है।

भूमंडलीकरण के संदर्भ में गिरीश मिश्र लिखते हैं कि-"भूमंडलीकरण की डफली ब ाने वालों का दावा है कि उसके साथ ही संसार ने एक नए युग में प्रवेश किया है ाहाँ एक विश्व बा ार होगा ि ासका उदय स्थानीय क्षेत्रीय और राष्ट्रीय बा ारों के विलय के परिणामस्वरूप होगा।" आगे वे कहते हैं कि-"रा य की सार्वभौमिकता को बा ार की शक्तियाँ निगल ाएंगी। कहा ा रहा है कि लोग अधिक मानवीय, स्व-अनुशासित तथा समा ा स्व-विनियमित हो ाएगा, समा ा बहु ान हिताय-बहु ान सुखाय नहीं बल्कि सर्व ान हिताय-सर्व ान सुखाय का लक्ष्य प्राप्त कर लेगा।"[46]

भूमंडलीकरण को एक तरह 'पूं ीवाद का सर्वव्यापीकरण' कहा ा सकता है। पूं ीवादी एकाधिकार में शोषण साफ दिखाई पड़ता था। पूं ीपति के एकाधिकार की पोल खुलती थी और शोषित वर्ग को पता ाल ही ाता था कि उन्हें अभाव में रखकर मुनाफा खूब कमाया ा रहा है। लेकिन भूमंडलीकरण में शोषण रंग, रूप आकारहीन होता गया है ि ासका शोषण

[46] हंस, नवंबर 2001

होता है वे ही शोषक का पोषण करते हैं। उसके पक्ष में लड़ते हैं। इस स्थिति का ित्रण हमें 'बदबू' कहानी में मिलता है। कहानी का 'वह' नामक पात्र कारखाने के मालिकों के शोषण के खिलाफ संघर्ष करते हुए अपने घर में एक मीटिंग रखता है। उस मीटिंग में 'हरीराम' के अलावा कोई नहीं आता। हरीराम आफीसर लोगों को इस मीटिंग के बारे में सू ाना देने के लिए वहाँ आता है। कहानी की निम्न पंक्तियों से यह बात स्पष्ट होती है-

"घनश्याम की तो बीवी बीमार हो गई, लेकिन मोहन, राधे, हनीफ वगैरह किसी को तो आना ाहिए था।"

"शायद उनके ब ो बीमार हो गए हों, ुं ालाकर उसने उत्तर दे दिया।

हरीराम ने फिर बात दुहराई, इस बार स्वर में ाटुता की भरमार थी-

हम तो तुम्हारे पीछे हैं भाई। ैसे तुम कहोगे वैसा करेंगे। मैं तो ठीक टैम पर आ गया था, देख लो।

तुम ही ठीक टैम पर न आओगे तो ीफ साहब को रिपोर्ट कौन देगा।

हरीराम की ओर उपेक्षापूर्ण दृष्टि डालकर घृणा से उसने कहा और अपनी साइकिल उठाकर बाहर ाल दिया।"[47]

इस से स्पष्ट होता है कि शोषित वर्ग ही स्वयं शोषक वर्ग का पोषण करते हैं और उसके पक्ष में लड़ते हैं। इस स्थिति में तब तक परिवर्तन नहीं आता ाब तक म ादूरों का संगठन न होता।

इस संदर्भ में गिरीश मिश्र कहते हैं कि-"आधुनिकता या औद्योगिक पूं ीवाद के काल में श्रम की रा ानीतिक शक्ति का रहस्य था-उनका कारखानों में एक ुट होना तथा शक्तिशाली ट्रेड यूनियन और रा ानीति से ुड़े ाँ ों के ारिए एकसूत्रबद्ध किया ाना आ ा ये ं ो भूमंडलीकरण ने नष्ट कर दिए हैं

[47] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.137

या उन्हें कम ोर और प्रभावहीन बना दिया गया है। यही कारण है कि संगठित म ादूरों की ागह हम ानसमूह को पाते हैं ो लगते हैं, निराकार सर्वहारा का समूह है ो सामा िक धरातल पर ींटी की तरह सहयोग एवं निरंतर सहकारिता के आधार पर संपदा का उत्पादन करता है।"[48]

भूमंडलीकरण में पूं ीपतियों का शोषण रूप बदला है। पहले अधिकारपूर्ण श्रमिकों से काम करवाते थे। लेकिन अब वे लोग श्रम के महत्व को ान गए हैं तो अब ातुरता से काम करवाने लगे। शोषित वर्ग यह ानते हुए भी पूँ ीपतियों का साथ देने लगे। यह स्थिति हमें 'बो ा' कहानी से स्पष्ट होती है। इस कहानी का 'वह' नामक पात्र ो एक श्रमिक है। वह भीमसिंह और रामदत्त ी ैसे पूं ीपतियों के द्वारा शोषित हैं। "शाम ले वह कमर सीधी कर उठने की तैयारी करता तो भीमसिंह ातुर शिकारी की तरह ाल फेंकते- "ले यार! एक बीड़ी का दम लगा ले फिर ये दस-बारह पौधे रह गए हैं इन्हें भी निबटा देना इसी हाथ। उसे लगता, भीमसिंह उसकी रखवाली करने के प्रयास में खुद ही थक गए हैं। उसे उनकी ालाकी पर गुस्सा आता और साथ ही बु ुर्गी पर तरस भी और वह उदारपूर्वक कह देता, "कक्का, तुम ालो। मैं निपटकार आ ाऊँगा।"[49] अतः स्पष्ट है कि शोषित वर्ग स्वयं ही शोषकों का पालन करते हैं।

यही ालाकीपूर्ण शोषण कहानी का रामदत्त ी भी करता है- "रामदत्त ी के स्वर में कैसी या ना और दयनीयता का भाव होता। प र्ी लेकर लौटने पर वे मन की गहराइयों से उसे आशीषते, " ीते रहो बेटा, ारा

[48] भूमंडलीकरण और साम्यवाद की वापसी, गिरीश मिश्र, हंस, नवंबर-2001
[49] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.45

ये पल्ला भी उकाड़ दो, हाड़-तोड़ हवा है। लगता है ौबटिया में फिर बर्फ पड़ गई है।"[50]

भूमंडलीकरण के पहले आर्थिक समृद्धि का लाभ कमोबेश सभी वर्गों और समुदायों तथा देशों को मिलता था। आर्थिक समृद्धि उस समुद्री वार की तरह थी ि ासे छोटे-बड़े सभी ाहा ा ऊपर उठते थे। मगर अब वह स्थिति नहीं है। भूमंडलीकरण के आर्थिक लाभ मुख्य रूप से थोड़े ही देशों और लोगों को ही मिल पाते हैं। दुनिया के धना ्य लोग ाड़ विहीन हैं। अपनी पूं ाी की तरह ाहां ाहते हैं ाले ाते हैं। उनका किसी देश या स्थान विशेष से कोई लगाव नहीं है। इस तरह हमारा भूमंडलीकरण एक पक्षीय है ि ासमें 'विश्व पूं ाी' ही के हित पूरे रहे हैं। ाहिर है, देश की ानता के नहीं।

भूमंडलीकरण की व ाह से भारतीय संस्कृति तथा कलाओं में कई परिवर्तन आ ुके हैं। भारतीय समा ा गरीबी और अशिक्षा के कारण पश्ि ाम के प्रतिस्पर्धात्मक समा ा के मुकाबले खड़ा नहीं हो पा रहा है। आ ा अमेरिका अपनी रा ानीति और प्रगति के कारण सारी दुनिया को नियंत्रित कर रहा है। इस संदर्भ में भारत में पश्ि ाम की सारी कंपनियाँ आकर भारतीय कंपनियों को प्रतिस्पर्धात्मक ंग से हराने लगी हैं क्योंकि भारतीय कंपनियों में उ ा तकनीक और मानव संसाधन की कमी है। नये व्यापार और वाणि यों ने भारत के युवा को अपनी ओर आकर्षित करने लगे हैं।

भूमंडलीकरण के कारण भारत में तकनीकी विकास को प्रोत्साहन मिला है। लेकिन लघु-उद्योग लुप्तहोने की कगार पर है। मुक्त बा ाार व्यवस्था में विकसित देश अधिक मुनाफा कमाने लगे हैं। उनको भारत बहुत बड़ा बाज़ार

[50] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.45

महसूस होने लगा है। इसलिए वे भारतीय संस्कृति का अध्ययन करने लगे हैं। लेकिन हमारा भारतीय समा ा पश्ि ामी संस्कृति की ओर आकर्षित होने लगा।

भूमंडलीकरण द्वारा भारतीय समा ा में संर ानात्मक बदलाव आ ुका है। पश्ि ाम की संस्कृति के आक्रमणकारी प्रभाव से भारतीय संस्कृति और सभ्यता बदल रही है। कम्प्यूटर, नये-व्यापार, वाणि य शास्त्र, सं ाार माध्यम और सांस्कृतिक रा ानीति के कारण भारतीय संस्कृति अति शीघ्र गति से अमेरिका की ओर ाल रही है। भारतीय विवाह संस्कृति भी अब पाश ात्य संस्कृति से प्रभावित हो रही है। संस्कृति का यह बदलाव हमें 'विडुवा' कहानी में मिलता है। "गाँव देहात के बरातियों की अपनी अनोखी शान होती है। बात-बात पर बिगड़ना, हर ीज़ में नुख्स निकालना, वक्त-बेवक्त किसी अनोखी ीज़ की फरमाइश कर देना, यह ैसे हर बाराती का विशेष अधिकार होता है। वे लोग ऐसी बारातों के आदी थे, ाहाँ बारात किसी बगी ो में टिका दी ाती और ारों ओर पेड़ों के नी ो बँसखटें पड़ी रहती। शर्बत- ाबैना, हुक्का-पानी, पान-सुपारी के दौर ालते ना ा-गाना होता। पर यह नाए ंग की बारात थी। एक बड़ी कोठी के स ो-स ाए कमरों में बारातियों को दो-दो, ार- ार की टोली में अलग-अलग टिकाया गया था।"[51] इस प्रकार भारतीय विवाह संस्कृति भी पाश ात्य सभ्यता से प्रभावित होने लगी।

पश्ि ाम के ीवन-क्रम, रहन-सहन, सो ा से भारतीय समा ा एक बार फिर ग्रस्त हो रहा है। भारतीय समा ा अब वेश-भूषा में भी पश्ि ाम का अनुकरण करने लगा है। वेश-भूषा में बदलाव का यह ित्रण हमें 'रंगरूट' कहानी में मिलता है। "नींबूवालों के छुटका प.ने के लिए दूर मारवाड़ में अपनी ननिहाल ाता है। वहाँ की वेश-भूषा से आकृष्ट होकर-"हमेशा का

[51] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.32

कमी ा-पै ाामा-फतूही पहननेवाला छुटका एक दिन पूरे गाँव में ठसके के साथ लंबी, मौलवियों की-सी शेरवानी और नगरा ूता पहनकर डोलता फिरा।"[52]

काल के इस प्रवाह में, भारत की संस्कृति भी बह रही है और भारत के संवेदनशील बुद्धि ाीवी इसका विरोध कर रहे हैं-साहित्य, संस्कृति, कला व नाट्य, सिनेमा के क्षेत्रों में एक बार फिर अपनेपन को ब ाये रखने का प्रयास ाल रहा है। संस्कृति में बदलाव का विरोध बुद्धि ाीवियों के द्वारा किया ा रहा है। इस प्रकार का विरोध हमें 'विडुवा' कहानी के ठाकुर पात्र द्वारा लेखक हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं-"रुपये-पैसे की बात नहीं भगवान। मु ो यह शहरी ाों ाले पसंद नहीं हैं। ाार भले आदमी बाराती हो ाएँ, अ छा बा ा-गा ा हो ाए। मौ ा-मस्ती के लिए थोड़ा ना ा-वा ा हो ाए, बिरादरी का भो ा-भात हो, बहिन-बेटियों, पर ा-पवनी को नेग-दस्तूरी दे दी ाए, यही शादी-ब्याह की शोभा होती है। ये नई-नई बातें हमारी सम ा में नहीं आती है।"[53]

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में सामने आई। लेकिन कहा ाता है कि यह प्रक्रिया ाब से पूँ ाीवाद का उदय हुआ तब से ाल रही है। कार्ल मार्क्स ने कम्युनिस्ट घोषणा पत्र में लिखा था कि-"पूँ ाीवाद ने एक विश्वबा ाार की स्थापना की है।"[54] भूमंडलीकरण पूँ ाीवाद के साथ ाुड़ गया है। इस दृष्टि से उसका आधुनिकीकरण से गहरा रिश्ता रहा है। इस भूमंडलीकरण और मुक्त बा ाार की अवधारणा के ब.ते प्रभाव का असर समकालीन ाीवन-पद्धति और मूल्यों पर भी दिखाई देने लगा है। "आ ा का वैश्वीकरण उस 'वसुधैवकुटुंबकम्' और 'अतिथि देवो भवः' से भिन्न है। इसमें व्यापार है, बाँटने की कला है, लाभ कमाने की मनोवृत्ति है। हमारे इस

---

[52] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.135
[53] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.31
[54] साहित्य कथन, डी.आर.नागरा ा-पृ.27

नये घर में रिश्तों के अर्थ बदल गये हैं, अपनापन उसी अनुपात में है, ि ास अनुपात में लाभ है। यूँ भी कह सकते हैं कि अपनापन कम उसका आडंबर यादा है।"[55]

भूमंडलीकरण के दौर में सामाा िक मूल्यों का यह परिवर्तन हम 'नेक्लेस' कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी में 'निम्माँ' मं ु को अपनत्व की भावना से देखती हैं ि ासके मूल में निम्माँ का आर्थिक लाभ है। कहानी की इन पंक्तियों से यह बात स्पष्ट नज़र आती है-"मं ु के लिए निम्माँ के दिल में गहरा प्यार है। बड़े गुड्डे की शादी में उसने दहे ा के साथ ाो ामकीला नेक्लेस दिया था उसके कारण वह निम्माँ के अधिक निकट आ गई थी।"[56] इस से स्पष्ट होता है कि भूमंडलीकरण के दौर में पैसों का बड़ा महत्व है। पैसों के आगे सारे आपसी संबंध विघटित होते दिखाई देते हैं।

भूमंडलीकरण की व ाह से देशों के बी ा की दूरियाँ कम हो गईं। परिणामस्वरूप सारे संसार में हर एक देश अपनी ाीज़ों को कई देशों में बे ाने लगा। इस प्रकार भूमंडलीकरण ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे ाीवन पर हावी कर दिया कि कोई भी वस्तु हाशिए पर नहीं रह ााती बल्कि इसके विपरीत वह ाीवन का हिस्सा बन ााती है।

<u>उपभोक्तावाद</u>

'उपभोग' हमेशा भोगने की आलस्यपूर्ण अथवा निष्क्रिय प्रक्रिया नहीं होती। पूँ ाीवादी दौर में 'उपभोग' की असंख्य वस्तुएँ मुहैया कर दी गयी हैं, ि ान्हें प्राप्त करने के लिए 'क्रय-शक्ति' होनी ााहिए। अतः पूँ ाीवादी दौर में आदमी यादा-से- यादा पैसा कमाना ााहता है। "बु र्वा औद्योगिक व्यवस्था में ऐसा 'उत्पादन-सिद्धांत' भी मिलता है, ि ासे केवल 'उत्पादन के लिए

[55] मीडिया और बा ाारवाद, अशोक अग्रवाल-पृ.57

[56] ब ो का सपना, शेखर ाोशी-पृ.119

उत्पादन’ कह सकते हैं ि ासके लिए ‘काम, काम और अधिक काम’ का नारा दिया गया था। अब यादा उत्पादन हुआ तो यादा उपभोग की बात भी की गई। उपभोग को आदमी की आवश्यकता से न ोड़कर ‘उपभोग के लिए उपभोग’ से ोड़ा ाने लगा। मसलन रोटी के ब ााय अगर नेल पालिश और लिपिस्टिक का उत्पादन ब ़े तो उसे उसी के उपभोग को प्रश्रय दो। उपभोग करने में अक्षम होने के बाव ूद उपभोग में लिप्त रहने की इसी ललक और ल ाक को मार्क्स ने ‘औद्योगिक हि ाड़ापन’ कहा था।"[57]

आ ा बा ाार में विलासिता की तमाम तरह की अ ाीबो-गरीब ाीज़ों से अटपड़ी दुकानें दिखाई देती हैं और उन्हें खरीदनेवालों की भीड़ भी कम नहीं। ि ासके पास विलास वस्तुएँ नहीं हैं, वे किसी तरह उन्हें पा लेने की दौड़ में लगे हुए हैं और ि ानके पास ये ाीज़ें मौ ाूद हैं, वे इनसे कुछ अलग पाने की फिराक में रहते हैं। यही ‘उपभोक्तावादी संस्कृति’ है।

इंग्लैंड में ‘औद्योगिक क्रांति’ का आरंभ उपभोक्तावादी संस्कृति के लिए बहुत मायने रखता है क्योंकि औद्योगीकरण और मशीनीकरण के कारण उत्पादन को बृहदाकार रूप मिला। अब ाो विपुल उत्पादन है उसके लिए नये बा ाार की आवश्यकता महसूस होने लगी और अपने उत्पाद की खपत के लिए पहले नये-नये स्थानों पर ठेले लगाकर बिक्री आरंभ की गयी। इसी का विस्तृत रूप ‘उपनिवेशवाद’ में देखते हैं। ‘उपनिवेशवादी व्यापारी’ लंबे समय तक अपना उद्योग व्यवसाय ालाते हुए उस व्यापार को समा ा पर बरकरार रखने की यो ाना बनाने लगे। सभी उत्पाद ारूरी नहीं होते लेकिन उस उत्पाद को आवश्यक ाीज़ बनाने के लिए कम दाम में बे ाने या खूब विज्ञापन देकर लोगों

---

[57] कतार ःडॉ.सुवास कुमार, ानवरी/ ून 1990-पृ.18

में उस वस्तु के प्रति लालसा उत्पन्न करते हैं। एक प्रकार से यह मानसिक शोषण है।

'उपभोक्तावाद' में उत्पादों का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया ाता है और 'उपभोक्ता' ाहता है-सस्ता, उत्पाद, बेहतर योग्य, रुपये का उ ित-मूल्य और आवश्यकतानुसार बदलाव, ाब वह उत्पाद 'उपभोक्ता' तक पहुँ ाता है तो उपभोक्ता के ीवन में ारूर कुछ-न-कुछ परिवर्तन आता है।

'उपभोक्तावाद' के उदय के संबंध में डॉ.सुवास कुमार लिखते हैं कि- "सही रूप में उपभोक्ता समा ा 1950 से 1960 के बी ा पूँ ीवादी देशों के सामूहिक उपभोग में तीव्र वृद्धि से बना मगर आर्थिक सामा ाि क, रा ानीतिक, सांस्कृतिक और सैद्धांतिक बहुत-सी ऐसी समस्याएँ खड़ी की ि ानका समाधान अब तक नहीं हो पाया।"[58]

'उपभोक्तावाद' का शिकार मध्यवर्ग है ो अपना व्यवहार तथा ीवन-शैली उ ातर बनाना ाहता है। महत्वाकांक्षा के कारण वह 'बड़ा आदमी' यानी बहुत से पैसों और सुविधाओं वाला आदमी दिखना ाहता है। इसी के कारण वह अनेक प्रकार के उपभोग की ीज़ों को खरीदता है। क्योंकि अब आदमी की कीमत और हैसियत को पैसों में आँका ाता है और सामान ारूरत को देखकर नहीं खरीदा ाता, क्रेता की क्रय-शक्ति के अनुपात में आता है।

मध्यवर्ग अब पहले सा 'मध्यम वर्ग' नहीं रह गया है। अब वह उपभोक्ता के रूप में आनंद के अनुभव को एक कर्तव्य मानता है। वह खुश रहना ाहता है। केवल खुश रहना ही नहीं खुश दिखना ाहता है और गतिशील। एक अर्थ में वह पैसा ही प्रसन्न ि ाह्न बन ाता है, ो उसे वस्तुओं

[58] कतार, डॉ.सुवास कुमार, ानवरी/ ून 1990-पृ.21

से मिलता है। यह उपभोग का 'आधीक्यीकरण' (मैक्सिमाइ ोशन) कहलाता है।

मनुष्य अपने अस्तित्व को अधिक-से-अधिक ाए, भोगे, ाह्नों के घनीभूत उपभोग में। अनंत ाह्न-संबंधों के बी ा रहकर ही यह 'आधिक्यीकरण' प्राप्त किया ा सकता है, ार आनंद का यही स्तर है।

'उपभोक्तावाद' के कारण समा ा के मध्यवर्ग में ो परिवर्तन आया है शेखर ोशी उसे 'डांगरी वाले' कहानी के नरेश पात्र के द्वारा हमारे सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। नरेश ो एक मध्यवर्गीय परिवार का सदस्य है उनका ध्यान हमेशा घर में रहन-सहन के स्तर को ऊँ ा उठाने पर रहता है। वह खुश गतिशल दिखना ाहता है। इसीलिए वह कई प्रकार के उपभोग की ीज़ों को खरीदता है ैसे 'डाइनिंग टेबुल'। कहानी की निम्न पंक्तियों से समा ा में व्याप्त उपभोग की मानसिकता स्पष्ट होती है-"आफिस के लिए रवाना होने के पहले सूट-बूट पहनकर ौके के बाहर दो कुर्सियों को आमने-सामने रखकर नाश्ता करते रो ा ही नरेश को 'डाइनिंग टेबुल' का अभाव खलता था। दोस्तों को कभी घर पर खाने का निमंत्रण देते हुए ि ा ाक होती थी और म ाबूरी में बैठक में ही छोटी टेबुल पर उनका आतिथ्य करना पड़ता था। ाम ामाती हुई टेबुल और खूबसूरत कुर्सियों को देखकर ब ो बिलक उठे थे। दयाल की बड़ी ब ी को अ ानक अपनी 'बर्थ डे' पर सहेलियों को बुलाने का ख्याल आ गया था।"[59] इससे स्पष्ट होता है कि 'उपभोक्ता संस्कृति' से केवल बड़े ो अपना ीवन स्थर ऊँ ा उठाना ाहते हैं वे ही नहीं बल्कि ब ो भी प्रभावित हैं।

परिवर्तन की प्रक्रिया पर शेखर ोशी स्वयं टिप्पणी करते हैं-"बरामदे में तख्त पर बैठे-बैठे खपरैल की छवान की ओर ताकते हुए सो ाने लगे,

[59] डाँगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.97

ीज़ें धीरे-धीरे कैसे बदल गई हैं। अ ानक होनेवाले बदलाव से उन्हें हमेशा डर लगा रहता है। ैसे किसी अनिष्ट की आशंका हो, लोगों की नज़र लग ाने का डर हो। पूरा घर पक्का सीमेंट का हो गया है। एक-एक वर्ष के अंतराल में ीज़ें बदलती गई हैं।"[60]

'उपभोक्तावाद' ने पूरे मध्यवर्ग को अधःपतित कर दिया है। इस दौर में यह कहना कि-"लोक में उपभोक्ता सामग्रियों की कमी हो सकती है वि ारों की नहीं।"[61] यह कथन भी खंडित हो ाता है। क्योंकि 'लोक' भी आ ा अपनी 'लोक-संस्कृति' छोड़े 'उपभोक्तावादी संस्कृति' से ुड़ने की ाह रखने लगा है। भला ऐसे में कौन है कि 'उपभोक्तावाद' से ब ाने का दवा कर सके क्योंकि आ ा हर घर में हर दरा ा में कोई-न-कोई उपभोक्ता-सामग्री पायी ाती है। अतएव 'उपभोक्तावाद' के विरोध का ामा पहनाकर शेर बनकर नहीं 'शेर की खाल में' रहने ैसा है। क्या मध्यवर्ग के अधःपतन में कोई शक है? वह ामाना और था ाब लोगों से नैतिकता की उम्मीद की ाती थी और वे खरे भी उतरते थे लेकिन 'अब उपभोक्तावाद' और 'कार' सेवा का ामाना है।"[62]

उपभोक्ता-सामग्रियों का उपभोग केवल शहरी ानता तक सीमित न रहा है। अब ग्रामीण लोग भी इस ाक्र में गिरफ्तार हो गये हैं। "पूँ ीवाद ने गाँव-समा ा उ ाड़े और शहरों में ग्रामीण ानों को श्रमिक बनाया था, 'उपभोक्तावाद' उन्हें उपभोक्ता बना रहा है। पूँ ीवाद का तर्क इसी तरह बदल रहा है। ो बात उन्नीसवीं सदी में 'उत्पादन' के क्षेत्र में हुई थी, अब 'उपभोग' के क्षेत्र में हो रही है। ानता को श्रमिक बनाकर पहले औद्योगिक क्रांति संपन्न की गई। अब उन्हें उपभोक्ता बनाकर उपभोक्ता क्रांति संपन्न की ा रही है।

---

[60] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.97

[61] शंभुनाथ, मड़ई 2002, देखिए-पृ.3

[62] अ ाय तिवारी, आलो ाना के सौ बरस-2, देखिए-पृ.312

यही उपभोग का समा ाीकरण है। दूसरे युद्ध से पहलेवाला अस्थायी उपभोक्ता, ाो 'उपभोग करने' अथवा 'न करने' के लिए स्वतंत्र था, अब नहीं ब ाा है।"[63]

यह 'उपभोक्तावाद' केवल शहरों तक न रह कर गाँव के भोले-भाले लोगों को भी प्रभावित कर रहा है। ग्रामीण लोगों में उपभोक्ता सामाग्रियों के प्रति लालसा तथा उन उपभोगों को भोगने की इ छा हमें 'विडुआ' कहानी में देखने को मिलती है। इस कहानी का 'दिग्वि ाय' अपने बेटे की शादी में गाँववालों को वीडियो का करिश्मा दिखाकर अपने परिवार का अलग महत्व दिखाना ाहता है। 'ननकी' भी उसका समर्थन करते हुए विडुवा के प्रति अपना उत्साह नहीं रोक पाती है। वह कहने लगती है कि-विडुवा भौ ाी, विडुवा। एकदम सनीमा का फिल्मवाली मशीन। भैया कहता है, ब ाा की बारात का फिल्म बनाएँगे। आ ाकल खूब बनता है शहर में। यादा ख र्ा भी नहीं। समधी के घर में कैसा खातिर-बात हुआ यह तुम भी यही बैठे देख लोगी। स ा भौ ाी, दादा को तुम कहोगी तो मान ाएँगे।"[64]

इस 'उपभोक्तावादी' संस्कृति के प्रति कुछ बुद्धि ाीवी अपना विरोधी स्वर उठाते हैं तो कुछ लोग अपने ब ाों की खुशी देख कर सहमत हो ाते हैं ैसे 'डांगरी वाले' कहानी का परमेश्वर। परमेश्वर का छोटा बेटा घर में रहन-सहन का स्तर ऊँ ाा उठाने के लिए डाइनिंग टेबुल लाता है तो परिवार के सभी लोग खुश हो ाते हैं तो उनकी खुशी देखकर परमेश्वर भी सहमत हो ाता है। "शाम को वर्कशाप से लौटकर आँगन में साइकिल टिकाते हुए परमेश्वर की नज़र डाइनिंग टेबुल पर पड़ी तो उन्हें लगा टेबुल की तरह दयाल की माँ का ोहरा भी खुशी से ामक रहा है। परमेश्वर ने अपनी

---

[63] तथा-पृ.132

[64] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.30

विवशता से मुस्करा कर ही इस बदलाव को स्वीकार किया था।"[65] इस प्रकार कुछ बुद्धि ाीवी उपभोग की वस्तुओं का समर्थन करते हैं।

लेकिन कुछ लोग ब ाों की खुशी के लिए सहमत होते हैं। मगर उन उपभोग की वस्तुओं को स्वीकार नहीं कर पाते। ैसे 'विडुवा' कहानी के बड़े ठाकुर कहानी की इन पंक्तियों से 'विडियो' ाो एक उपभोग की वस्तु है उसके प्रति विरोधी भाव स्पष्ट होता है। "बड़े ठाकुर धीरे-धीरे बे ैनी अनुभव करने लगे। उनका मन हुआ कि उठकर विडुवा बंद करा दें। लेकिन सब लोग ि ास तल्लीनता से उसे देख रहे थे, उसमें अपना ऐसा व्यवहार उन्हें संगत नहीं प्रतीत हुआ। वह ुप ाप तख्त से उठे और घर के अंदर ाल दिए।"[66]

यही विरोधी स्वर हमें 'व्यतीत' कहानी में भी देखने को मिलता है। इस कहानी का 'बाबू' उपभोग की वस्तु कूलर के विरोध में कहता है-"कूलर की हवा से शरीर ठंडा रहता है। कहीं धूप में निकल गया तो बीमार पड़ ाएगा। ये सब बनावटी ाीज़ें हैं। बड़ा नुकसान करती हैं।"[67]

'उपभोक्तावाद' में 'मीडिया' की प्रमुख भूमिका है। क्योंकि उत्पादक ाब कोई नई उपभोग की वस्तु का उत्पादन करता है तो उस वस्तु को उपभोक्ता आवश्यक ाीज़ मानने के लिए उत्पादक मीड़िया का सहारा लेता है। दूसरे शब्दों में ाब कोई उत्पाद अपनी खपत के लिए 'मीडिया' को आधार बनाकर 'उपभोक्ता वर्ग' तक अपनी महत्ता पहुँ ाता है, तो एक तरह से वह अनावश्यक होते हुए भी अत्यावश्यक बनता है।

रवींद्र कात्यायन ने 'उपभोक्तावाद' के विकास में मीडिया की भूमिका को स्पष्ट करते हुए आवेशपूर्ण शब्दों में लिखा है कि-"मीडिया का प्रभाव हमारे

---

[65] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.97
[66] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.36
[67] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.99

समा ा पर सबसे अधिक पिछले दो दशकों में पड़ा है। उसमें भी 1989-90 के आस पास देशी-विदेशी ैनलों के प्रसारण प्रारंभ होने से दसों दिशाओं में ीवन की गति बेतहाशा ब ़ी है। क्या शहर, क्या कस्बा, क्या गाँव? हर स्थान पर इन ैनलों का शिकं ाा कसा है। पिछले दस-पंद्रह वर्षों का समय विश्व-बा ाारीकरण, भूमंडलीकरण, बहुराष्ट्रीय कंपनियों की हमारे दैनंदिन ीवन में दखल, उपभोक्तावाद और बा ाार की गलाकाट प्रतिद्वंद्विता आदि का समय रहा है।"[68]

'भूमंडलीकरण' ने 'उपभोक्तावादी' संस्कृति को हमारे ीवन पर हावी कर दिया है। भूमंडलीकरण के ालते ाहां बा ाार का विकास हो रहा हे तो उसमें मीडिया का भी अपना हाथ है। यह तो ाहिर है कि मीडिया के बगैर आ ा बा ाार अपनी ागह बना ही नहीं सकता। क्योंकि मीडिया न सिर्फ घटनाओं के उपभोक्ताकरण पर केंद्रित है बल्कि वह ब ाार की हर वस्तु के उपभोक्ताकरण पर भी ोर देता है। सन् 1990-91 के करीब ग्लोबलाइ ोशन का आरंभ हुआ, सब कुछ का मार्केटाइ ोशन हो रहा है।

मीडिया द्वारा उपभोग की वस्तुओं की ाानकारी सब को आकर्षित करती है। यहाँ तक कि ब ों को भी। मीडिया का विज्ञापन ब ों को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है यह हमें 'शुभो दीदी' कहानी से पता ालता है। इस कहानी का 'सन्तू' ो एक छोटा ब ा है वह अपनी दीदी का म ाक करते हुए कहता है-"शुभो दी, तुम्हें बहुत ाल्दी ही बेटा मिलेगा, पर उसके सिर के बाल भी विशू बाबू की तरह ही सफेद होंगे।" लेकिन सन्तू "एक बार अखबार से एक विज्ञापन काट लाया, सफेद बाल काला, किसी तेल का विज्ञापन, और शुभा दी को विज्ञापन दिखाता हुआ बोला, शुभो दी, यह तेल मँगा लेना अपने बेटे के

[68] संस्कृति बनाम अपसंस्कृतीकरण, आनंद पाटील-पृ.35

लिए।"[69] इस से स्पष्ट होता है कि उत्पादक मीडिया के द्वारा उपभोग की वस्तु का ो विज्ञान देता है वह सभी को आकर्षित करता है तथा उपभोक्ता को उस वस्तु के प्रति विश्वास दिलाता है।

"'उपभोक्तावाद' को 'माया' के अर्थ में देखा ाय तो भारतीय अद्वैत-दर्शन से लेकर भक्तिकालीन साहित्य तक में माया के रूपों से दार्शनिक मुठभेड़ तो बार-बार मिलती है, लेकिन आ । उपभोक्तावाद का ो रूप नज़र आता है, उसे 'उपभोग' करनेवाली इंद्रियों के खेल का रूप मानकर 'माया' का कुछ विमर्श बनाया ा सकता है।"[70]

यह 'उपभोक्ता संस्कृति' आ । के पारिवारिक एवं सामा िक ीवन के केंद्र में आ गयी है। परिणामस्वरूप व्यक्तिगत और सामा िक ीवन-मूल्य, नैतिकता, ईमानदारी और आपसी रिश्ते कहीं कोने में सिमट रहे हैं या घिसी-पिटी पुरानी बातें लगने लगे हैं। इस स्थिति पर ा ा करना भी लोग पसंद नहीं करते।

आधुनिक काल के प्रारंभ में ही भारतीय समा । रा ानैतिक दासता का शिकार हो गया और अंग्रेज़ों ने इसकी आर्थिक संर ाना को बदलने के साथ-साथ शिक्षा संस्कृति तथा ीवन मूल्यों को भी बदल दिया। यही कारण है कि मूल्यह्रास की प्रक्रिया आधुनिक भारतीय समा । में बड़ी तेज़ी से शुरू हुई। विशेष रूप से सन् 1960 के बाद सामा िक मूल्य बहुत तेज़ी से विघटित हुए। सन् 1970 के बाद तो यह प्रक्रिया और भी तेज़ हो गई क्योंकि इस काल में शक्तियों का नया ध्रुवीकरण हुआ तथा भारतीय समा । में रा ानैतिक हस्तक्षेप एकाएक बहुत ब ़ गया।

---

[69] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.76

[70] सुधीर प ौरी, ब्रेक के बाद-पृ.125

"स्वतंत्रता के पश ात् भारतीय समा ा में सामा ाि क ीवन मूल्यों के परिवर्तन की प्रक्रिया तीव्र हो गई। द्वितीय विश्वयुद्ध, विज्ञानबोध और आधुनिक शिक्षा पद्धति ने वै ाारिक क्रांति के दो महत्वपूर्ण रूप प्रस्तुत किए।एक-व्यक्ति के ीवन के संबंध में और दूसरा-समा ा के ीवन के संबंध में। दोनों के संयोग से ीवन मूल्यों की पूरी अवधारणा ही बदल गई।"[71]

आज़ादी के आस-पास ो बदलाव आने शुरू हुए उनकी परिणति ानता के हित और देश के भविष्य के पक्ष में नहीं हुई बल्कि इन्हें दरकिनार करते हुए अर्थतंत्र ालता गया। इस दौरान वैसी व्यक्तिगत उपलब्धियों का महत्व सिर्फ ब ़ गया, ि ानका संबंध मुनाफे अर्थात् सिर्फ पैसों से था। आ ा पैसा सब कुछ है, पैसा ताकत है। पैसा अपनी ताकत से आम आदमी को भी प्रभावित करता है। वह आदमी को ईमानदार से बेईमान बना देता है। इसी सामा ाि क बदलाव को 'शेखर ोशी' अपनी 'नौरंगी बीमार है' कहानी द्वारा हमारे सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। इस कहानी का नौरंगी ो एक ईमानदार आदमी है उसकी ईमानदारी पर सब को विश्वास है, यहाँ तक कि कारखाने के मालिक को भी। वह कहता है-"बहुत ईमानदार आदमी है साहब नौरंगी मिस्त्री। मैं आपको एक पुराना डेली आर्डर दिखाऊँगा। ार-पाँ ा साल पहले की बात है। तब महेंद्र सिंह साहब थे यहाँ। उन्होंने गलती से इन्हें ार सौ रुपया दे दिया था। ये वर्कशॉप में गए, एक-दो बार रुपया गिना, लगा कि कुछ गड़बड़ है। वापस कर गए तत्काल। कहाँ मिलते हैं ऐसे लोग, इस ामाने में। ीफ साहब खुद यहाँ आकर उन्हें शाबाशी और ईनाम दे गए थे। इनसे हाथ मिलाया था। क्यों, गलत तो नहीं कह रहा हूँ नौरंगी?" [72] इतने ईमानदार आदमी को पैसा बदल देता है। पैसों के लोभ में आकर नौरंगी पे-काउंटर से मिले अधिक पैसे दबा लेता है। बात

---

[71] नया प्रतीक, वीरेंद्र सिंह, अप्रैल 1977-पृ.76

[72] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.91

छिपाने के लिए लोगों की टीका-टिप्पणी से ब ाने के लिए बीमारी के बहाने छुट्टी ले लेता है। इस प्रकार अर्थतंत्र की व ाह से ीवन मूल्यों में बदलाव आ रहा है। एक मूल्य छोड़कर दूसरा मूल्य अपना रहे हैं।

यही ीवन मूल्यों में बदलाव हमें ' ी ह ूरिया' कहानी में भी देखने को मिलता है। इस कहानी का ापरासी हमेशा अफसर लोगों की खुशामदी और ापलूसी करता है। लेकिन अपने साथी की मृत्यु पर अफसर से तेज़ और तुर्शी से भरी बात कर बैठता है। " ी-ह ूरिया इस बार अपना आक्रोश नहीं संहाल पाया, खँखार कर बोला, अप ानकार आदमी हैं हु ूर, आप कुछ गलत थोड़े ही कहेंगे। भला किताबी कानून के आगे हम-मनई की ान की क्या औकता।"[73] इस प्रकार म ादूर बुरे मूल्य छोड़कर अ छे मूल्य अपनाते हैं।

पैसों में इतनी ताकत है कि आपसी रिश्तों को भी बदल देते हैं। 'परिक्रमा' कहानी का भुवन पायलट ऑफिसर के पद के लिए ुन लिये ाने पर भी उसकी माँ ोठी बहू को पहले की अपेक्षा कहीं अधिक विनम्रता और आदर देते हैं। "घर का कारोबार देवरानी के हाथों सौंपकर ोठी बहू भुवन के साथ ाल दी। रामदत्त स्टेशन पर उन्हें लिवाने आया था। देवर के घर पहुँ ाकर ोठी बहू को लगा ैसे देवरानी को भुवन से कहीं यादा स्वयं उनकी प्रतीक्षा रही हो। अपनी इस देवरानी का ऐसा व्यवहार उनके लिए आश ार्य का कारण बन गया। वह बातें करती तो ैसे मुँह से फूल ारते। ार-पाँ ा दिन वहाँ रुककर भुवन कैलाश के पास ाने की तैयारियाँ करने लगा तो रामदत्त की बहू ने इस बात का बड़ा आग्रह किया कि भुवन नौकरी पर ाने से पूर्व माँ को उनके पास छोड़ ाये। कैलाश और छोटी बहु का व्यवहार भी पहले की अपेक्षा कहीं अधिक अपनत्वपूर्ण था। ोठानी के सेवा-सत्कार में छोटी बहू दिल

[73] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.72

खोलकर ख र्ा कर रही थी।"[74] लेकिन उनका यह स्नेहपूर्ण व्यवहार यादा दिनों तक नहीं रहा क्योंकि उनको पता ालता है कि अब भुवन एक्सीडेंट की व ाह से अफसर नहीं बन पाया। "इसके बाद से फिर घरेलू कामका ा की बातों में ोठी से किसी ने कोई राय नहीं ली। कैलाश और छोटी बहू का आग्रह हमेशा उन्हें अपने साथ ले ााने का रहता था। परंतु इस बार ाब ोठी बहू ने वापस गाँव ााने की बात कही तो किसी ने उनकी बात पर आपत्ति नहीं की।"[75]

धार्मिक व्यक्ति अपने धर्म का पालन करना ीवन का बहुत बड़ा ीवन मूल्य मानता है। लेकिन वह भी अपने घर की सुख सुविधा के लिए एक मूल्य छोड़कर दूसरे मूल्य अपनाता है। यही ीवन मूल्यों में बदलाव 'किं करोमि ानार्दन' कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी का बू.ा नित्यान यु धार्मिक भावना से "आँगन में सुखाने के लिए डाले गये धान में गाय-बछिया आकर मुँह मारने लगे, तो भी नित्यान यु उसे स्वयं नहीं हटाएँगे। वह तो सू ाना भर दे देंगे-ओरी कमला! देख गाय आयी है। सीधे गाय को हटा देने से संकल्प टूट ााएगा, परलोक बिगड़ ााएगा न।"[76] लेकिन इतना धार्मिक आदमी भी घर की सुख-सुविधा के लिए अपना ीवन मूल्य छोड़कर घर के सम्मुख सेब-वृक्षोंक के बगी ो की रक्षा करने के लिए तैयार हो ाता है। वह अपने घर की समस्या को दूर करने के लिए अपने ीवन मूल्य बदलता है।

अगर कोई व्यक्ति ीवन-मूल्य, नैतिकता आदि के लिए ीने की कोशिश करता है तो आ ा के समा ा में वह अ ानबी ौसा बन ाता है या फिर सहानुभूति का पात्र। यही स्थिति हमें 'मेंटल' कहानी में देखने को मिलती है। इस कहानी का 'वह' नामक पात्र एक सत्यवादी और ईमानदार आदमी है।

---

[74] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.145
[75] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.147
[76] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.38

"उसकी ईमानदारी और मेहनत का ही नती ा था कि उसकी सर्विस-बुक में कही कोई लाल निशान नहीं लगा था।"[77] अगर कारखाने का अफसर बी.ओ. साहब उस पर‘टूलकिट’ के औ ार ुराने का आरोप करता है ो व्यक्ति सत्य और ईमानदारी को अपना ीवन मूल्य सम ाता है वह इस आरोप से अपना मानसिक संतुलन खो कर पागल या सहानुभूति का पात्र बन ाता है।

व्यक्ति नवीन ीवन-मूल्यों को पह ानकर उन्हें अपनाकर ही वै ारिक दासता को दूर कर सकता है। कविपथ पुराने मूल्य भी प्रासंगिक हो सकते हैं और सारे के सारे नये मूल्य उपयोगी हो ऐसा नहीं होता। व्यक्ति को विवेक से काम लेते हुए उपयोगी ीवन मूल्यों को पह ानना और अपनाना ाहिए। यही नवीन ीवन मूल्यों को पह ान कर अपनाने की प्रक्रिया हम ‘बिरादरी’ कहानी में देख सकते हैं। वास्तव में बिरादरी शब्द परंपरा और ातीय पह ान के रूप में रू ़ हो गया है। नए सामा िक सो ा ने इस पुराने मूल्य को बदल दिया िसे हम कहानी के ‘हरिप्रिया’ के इन शब्दों में देख सकते हैं-"बिरादरी एक दिन की नहीं होती, हमारे तो असली बिरादरी अब वे ही हैं िनके साथ हमारा मरना- ीना लगा है, उन्हें छोटा कर परदेसी बिरादारों की फिकर करोगे तो ये भी अपने न रहेंगे और वे भी।"[78]

परिवर्तन की इस प्रक्रिया पर शेखर ोशी लिखते हैं कि-"देखते-देखते सब कुछ बदल गया था। एक ही बिरादरी के उस छोटे से गाँव में धीरे-धीरे पुरानी पी ़ी के बु ुर्गों में से एक के बाद एक सभी किसी पेड़ के पीले पत्तों की तरह समाप्त होते गये थे। नयी पी ़ी के लड़के प ़-लिखकर नौकरी और रो ागार के बहाने एक बार परदेस की ओर गये तो अपनी गृहस्थी और बाल-ब ों के साथ वहीं के होकर रह गये। प ़-लिखकर खेती-किसानी करने का

---

[77] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.32

[78] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.79

हौसला किसे होता और परिवार की ब ोतरी के साथ पहाड़ की खेती पर निर्वाह किसका होता? पूरे गाँव में अधिकांश घरों में यातो ताले पड़ गये थे या परदेस के माहवारी मनीआर्डर पर आश्रित विधवा ा ी-ताइयों की अकेली गृहस्थी रह गयी थी।[79]

4.2 शेखर ोशी की कहानियों में ि त्रित समा ा

4.2.1 सामा ि क स्थितियाँ

साहित्य का समा ा से गहरा संबंध होता है। कोई भी साहित्य समा ा से कटकर नहीं र ा ा सकता है। सामा ि क सरोकारों से ुड़कर र ा गया साहित्य ही उ ा साहित्य होता है। साहित्य में सामा ि क सरोकारों को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम कहानी है। कहानीकार सामा ि क प्राणी है और वह समा ा के सारे संबंधों को अपनी कहानी में वर्णित करता है। साहित्यकार पर परिवेश का बहुत बड़ा प्रभाव होता है। ि स परिवेश में वह पलता है उसी परिवेश के सामा ि क स्थितियाँ उसे लिखने के लिए प्रेरित करती हैं। परिवेश से कटकर अगर कोई र ना करता है तो वह सफल कृति बन नहीं पाती। स्वयं शेखर ोशी इस बात पर विश्वास करते हुए कहते हैं-"मूलतः ये परिवेशगत स्थितियाँ ही हैं ो एक र नाकार को दूसरे र नाकार से भिन्न धरातल पर आंदोलित करती हैं।"[80]

किसी भी व्यक्ति की पह ान उसके व्यक्तित्व से होती है। ि सका बाह्य अर्थ केवल शारीरिक गठन से ही नहीं है। अपितु उसके संपूर्ण गुणों और विशिष्टताओं से भी है। मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में उसके परिवेश का बहुत बड़ा योगदान रहता है।

---

[79] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.75
[80] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.7

मानव के ान्म के बाद ही उसके व्यक्तित्व का क्रमिक विकास प्रारंभ हो ाता है। ो मृत्युपर्यंत होता ही रहता है। ान्म के बाद सबसे पहले एक शिशु माता-पिता परिवार के संपर्क में आता है। उन्हीं से वह प्रेरणा लेकर व्यक्तित्व के निर्माण की पहली सी ़ी पर कदम रखता है ो ब े विमाता के संपर्क में पालित-पोषित हैं, उनका व्यक्तित्व या तो कुठित हो ाता है या वे असामान्य हो ाते हैं। 'ि द्दी' कहानी का रा ेंद्र ब ापन में अपनी माँ के घर में एक ि द्दी और लाड़-प्यार में पालित-पोषित लड़का था किंतु उसकी माँ के देहांत के बाद वह विमाता के रौबीले व्यक्तित्व के सामने उभर नहीं पाया। परिणामस्वरूप दोहरे व्यक्तित्व का शिकार हो गया। वह हमेशा टूटा हुआ असंतुष्ट दिखाई देता। उनका व्यक्तित्व सामान्य दिखाई नहीं देता।

शेखर ोशी की दृष्टि हमेशा परिवर्तनों पर है। बाह्य परिवर्तनों से यादा आंतरिक परिवर्तन पर हैं। युवावस्था में लड़के-लड़कियों में अनेक परिवर्तन आते हैं। उस समय नारी-पुरुष के संबंधों के प्रति स ाग होकर प्रेम की ओर आकर्षित हो ाते हैं। उनके व्यक्तित्व में परिवर्तन आता है। शेखर ोशी इसी आंतरिक परिवर्तन को 'प्रथम साक्षात्कार' कहानी के द्वारा प्रस्तुत करते हैं। "वह पत्र तब ाया को अनोखी अनुभूति से भर गया था। तब पहली बार उसने गौर से अपने अंग-अंग को देखा था। आत्ममुग्ध-सी वह देर तक आईने में अपने को देखती ही रह गई थी। उस दिन अ ानक ही वह आत्मविश्वास से भर उठी थी। ीवन का प्रत्येक कार्य-व्यापार उसे रु ाकर लगने लगा था।"[81] इस प्रकार शेखर ोशी का स्वर अपने समकालीन साहित्यकारों से सर्वथा भिन्न है। इसका बड़ा कारण यह है कि शेखर ोशी ने उन मूल्यों के अपनी कहानियों में उठाया है, ो अन्य साहित्यकारों के लिए

[81] ब े का सपना, शेखर ोशी-पृ.129

पुराने पड़ ुके हैं। मनुष्य की छोटी-से-छोटी गतिविधियाँ और इसमें इर्द-गिर्द हो रही मामूली हल ाल शेखर ोशी के साहित्य में उभरती है।

4.2.1.1 आपसी संबंध

मनुष्य एक सामाि ाक प्राणी है। उसका विकास समा ा से ही होता है। समा ा में रहकर ही वह अपने वि ाारों का आदान-प्रदान करता है। समा ा से अलग होने पर उसका विश्वास नहीं होगा और वह कुंठित हो ाएगा। समा ा से कटकर वह संत्रास, दुख, कुंठा, अकेलापन, ग्लानि आदि का शिकार होता है। अगर कोई व्यक्ति उन्नति के मार्ग पर ब.ना ाहता है तो उसे समा ा में रहते हुए अन्य व्यक्तियों से संपर्क रखना पड़ता है। समा ा में तरह-तरह के लोग रहते हैं। आपसी संबंधों से ही वह मित्रता बनती है। मित्रता के द्वारा दूसरे व्यक्ति के साथ आत्मीय संबंध स्थापित करता है।

मित्रता तथा परि ाय में पर्याप्त अंतर है। इस संदर्भ में रमेश ंद्र कुलश्रेष्ठ एवं विद्याराम शर्मा लिखते हैं कि-" ाब पहले-पहले किसी से मिलते हैं तो उससे हमारा कुछ परि ाय हो ाता है। ाब निरंतर उससे मिलना होता रहता है तो उसके साथ हमारा एक प्रकार का स्नेह बंधन ुड़ ाता है। तब इसे मित्रता कहने लगते हैं। साधारण परि ाय तो किसी मनुष्य के साथ थोड़ी देर तक बातें करने या मिलने से ही हो सकता है।"[82] इस प्रकार की मित्रता 'दा यु' कहानी के 'मदन' और ' ागदीशबाबू' के बी ा में है। पहाड़ से नी ो उतरकर एक होटल में काम करनेवाला मदन का परि ाय ागदीशबाबू से हो ाता है। ि ानका गाँव उसके गाँव से निकट ही है। दोनों का रि ाय मित्रता में बदल ाता है। मदन ागदीशबाबू में अपने भाई को देखने लगता है। लेकिन धीरे-धीरे छोटी हैसियत वाला यह पहाड़ी बालक भीड़ भरे होटल में बार-बार 'दा यु,

[82] आदर्श निबंध, रमेश ंद्रकुल श्रेष्ठ एवं विद्याराम शर्मा-पृ.141

दा यु' कहकर उसकी 'प्रेस्टि ।' को कम कर देता है। यही कारण है कि उसका मध्यवर्गीय संस्कार ागि उठता है और 'अहं' की ते । धारा के आगे उसका वह अपनापन विस्मृत हो ाता है। " ागदीश बाबू का मुँह क्रोध के कारण तमतमा गया, शब्दों पर अधिकार नहीं रह सका। मदन 'प्रेस्टि ।' का अर्थ सम । सकेगा या नहीं, यह भी उन्हें ध्यान न रहा, पर मदन बिना सम ाए ही सब कुछ सम । गया था।"[83] इस से स्पष्ट होता है कि आपसी संबंधों में आर्थिक स्थिति में दरार डालती है। इस विषय को शेखर ोशी पूरी तरह कलात्मक ंग से प्रस्तुत करते हैं।

समा । में परिवार का एक विशेष स्थान है। परिवार एक विशेष सामा िक संस्थान है, ि सका स्वयं अपना एक पे ीदा ाँ ा है। इसमें रक्त संबंध, भौतिक, आर्थिक संबंध तथा बौद्धिक संबंध शामिल हैं। परिवार से ही आपसी संबंधों का आरंभ होता है। परिवार के संबंध में केल्ले और कोवाल ोन अपनी मान्यता स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि-"मनुष्य परिवार में बनता है, परिवार में ही उसके व्यक्तिगत गुणों तथा संबंधों, ैसे प्रेम, बंधुत्व एक दूसरे की देख-रेख, नैतिक ि म्मेदारी इत्यादि का भी निरूपण होता है।"[84]

पारिवारिक संबंधों में आदर्श और प्रेम की भावना होनी ाहिए। यही भावना परिवार के सभी सदस्यों को एकत्रित करती है। परिवार के आपसी संबंधों से ही पूर्णता प्राप्त होती है। समा । में रहते हुए हम अपने ैविक एवं बौद्धिक धरातल पर संबंधों का निर्माण कर सकते हैं। यह वह केंद्रीय संबंध है ाहाँ से अन्य संबंध उत्पन्न होते हैं। ीवन में सुख-समृद्धि संपन्नता एवं

---

[83] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.9

[84] ऐतिहासिक भौतिकवादः समा । के मार्क्सवादी सिद्धांत की रूपरेखा, व.केल्ले और म.कोवाल ोव-पृ.81

स्वाभाविकता इन दोनों के पारस्परिक सहयोग एवं सद्भाव पर आधारित है। ीवन के विकास का आधार यही संबंध है।

आ ा इन आपसी संबंधों में वह ऊष्मा नहीं ो पहले थी। महँगाई और स्वार्थ ने पारस्परिक रागद्वेष के कारण आपसी-संबंधों में फीकापन ला दिया है। आपसी संबंधों में अर्थ की ो दीवार दूरी बड़ा रही है उसको हम 'भूत' कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी का सुधीर छुट्टियों में अपने रिश्तेदारों और गाँव को देखने की ललक से गाँव पहुँ ाता है तो उसके ा ा को अ छा नहीं लगता। क्योंकि उसे लगता है कि सुधीर ामीन और हवेली की ामा-पूँ ी लेने के लिए आया होगा। "प ीस-तीस मिनट की बात ीत में ही ा ा ने प्रकारांतर से अपना आशय स्पष्ट कर दिया था। सुधीर को ा ा की बातें अ छी नहीं लगी। वह कोई यो ाना बनाकर या उम्मीदें बाँधकर नहीं आया था। ब ापन से ि ास गाँव की मिट्टी में वह खेला था उसकी ललक और रमा की ि ाद उसे यहाँ खीं ा लाई थी। परंतु ा ा ि ास अंदा ा में असामियों से लगान न मिलने, खुद काश्त न कर पाने इत्यादि का विवरण देकर और हवेली के रखरखाव के खर्ो की शिकायतों द्वारा ो सफाई पेश कर रहे थे उसे सुनकर उसका मन खट्टा हो गया।"[85] शेखर ोशी के इस ि ात्रण से यह बात स्पष्ट होती है कि आपसी संबंधों में अर्थ की दीवार दूरियाँ ब.ा रही है।

यही अर्थ की दीवार बेटे और माता-पिता के बी ा भी दूरी ब.ाती है। 'किं करोमि ानार्दन' कहानी में इसे देख सकते हैं। इस कहानी का शिवदत्त अपनी कमाई पर अहंकार और स्वार्थ प्रकट करते हुए अपने माता-पिता से कहते हैं कि-"अपने पसीने की कमाई मैं किसे दूँ, कहाँ फेंकूँ। इस पर बहस करने का अधिकार किसी को नहीं है।"[86]

---

[85] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.95

[86] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.37

स्वार्थ की भावना और पारस्परिक रागद्वेष की भावना घर की बहुओं के आपसी संबंधों में दूरियाँ ब ा रही है। 'परिक्रमा' कहानी के दोनों सुहागिनों को अपने कमाऊ पतियों के कारण ही घर-संसार पर अहंकार है। इसी कारण से दोनों विधवाओं को कुछ भी कह देने के लिए तैयार हो ाते हैं। रामदत्त की बहू कहती है-"छोटी दुलहन, मुन्नी को दूध पिला दे तो। छोटी दाँतों के बी ा नि ाला होंठ दबाकर उत्तरदेती है-दीदी, दूध तो बहुत कम दिखाई दे रहा है। कोई दो दो पैरोंवाली बिल्ली तो नहीं पी गयी? और दोनो ंसुहागिनों के मुख पर रहस्य-भरी मुस्कान फैल ाती।"[87]

कभी-कभी परिवार के बाहरी लोगों से भी आपसी संबंध बन ाता है। इस तरह का आपसी संबंध हम 'शुभो दीदी' कहानी में देख सकते हैं। कहानी की 'माँ' नामक पात्र अपने पड़ासे के विशू बाबा की कम उम्रवाली पत्नी में अपनी खोई हुई लक्ष्मी (लड़की) को देखने लगती है। लेखक के इन वाक्यों से यह बात स्पष्ट होती है-"माँ का अपार स्नेह पाकर शुभा दी हमारे परिवार में घुल-मिल गयी। माँ कभी-कभी पिता ी से कहा करती, "अभी एक-दम ब ी है, बिलकुल पगली, कुछ भी नहीं सम ाती।"[88] ाब शुभो शिशु को ान्म देकर अंतिम साँस छोड़ती है तो "माँ उस दिन फूट-फूटकर रोई थी। उसकी लक्ष्मी दूसरी बार उससे विदा हो गई थी।"[89] अतः स्पष्ट है कि आपसी संबंध परिवार के सदस्यों के बी ा ही नहीं बल्कि बाहर के लोगों से भी बन सकते हैं।

निष्कर्षतः शेखर ोशी अपनी कहानियों के द्वारा अपसी संबंधों में बिखराव और पारिवारिक विघटन का कारण स्पष्ट रूप से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

---

[87] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.142
[88] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.75
[89] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.77

4.2.1.2 पीि.यों का अंतर

सामाि ाक विकास के परिप्रेक्ष्य में एक पी.ी के बाद दूसरी और उसके बाद तीसरी, इस प्रकार कई पीि.याँ आती हैं। और उन पीि.यों की मान्यताओं में भी अंतर ारूर दिखाई देता है। दो पीि.यों के पारस्परिक वैमनस्य को देखते हुए उनके ाीवन मूल्यों के संघर्ष को भी देखना अनिवार्य है। शेखर ाोशी अपनी कहानियों में इन दो पीि यों के मनमुटाव को ाित्रित करते हैं। पिता और पुत्र के बी ा की दूरी को 'आखिरी टुकड़ा' शीर्षक कहानी में ाित्रित किया गया है। सूर ाा को अपने पिता माँगुरू से कोई सद्भावना प्राप्त नहीं होती क्योंकि वह नौकरी से वंि ात है। माँगरू पुरखों की थाती उस ामीन के टुकड़े को ब ााने के लिए आ ाीवन संघर्ष करता है तो उसका पुत्र सूर ाा स्वयं अपने हाथों से " ामीन के उस खाली टुकड़े के किनारे-किनारे लोहे के खंभे गा.कर, उसने बाड़ लगा दी थी और भट्टी-निहाई और दो- ाार फ्रेम ामाकर लोहारखाने की सीमा को वहाँ तक ब.ा लिया था।"[90] माँगरू ाो कीमत उस ामीन को दिया है उतनी कीमत सूर ाा ने नहीं दिया। सूर ाा पिता के इस मत को सम ा नहीं पाया। इस मत वैभिन्य का कारण विरोधी वि ाारधारा है। शेखर ाोशी ने इस कहानी में पीि.यों के अंतर को स्पष्ट रूप से ाित्रित किया है।

नई पी.ी और पुरानी पी.ी की मान्यताओं में अंतर है। आ ा की नई पी.ी आत्म निर्भरता और ाल्दबा ाी के कारण पुरानी-पी.ी के मूल्यवान बातें सुनने के लिए तैयार नहीं है। 'आशीर्व ान' कहानी में इसका ाित्रण हुआ है। श्यामलाल की सेवा-निवृत्ति के अवसर पर आयोि ात विदाई समारोह में म ादूर नेताओं का भाषण होते-होते छुट्टी का सायरन ब ा उठता है। श्यामलाल ने अपने समय की मुश्किलें और काम के प्रति निष्ठा की बातें शुरू

[90] डांगरी वाले, शेखर ाोशी-पृ.65

की ही हैं कि म ादूर घर ाने के लिए बेताब हो उठते हैं। नई पी ़ी के लोग आशीर्व ान का इंत ार किए बगैर ही श्यामलाल की ायकार करते हुए ाले ाते हैं, रुँधे गले से श्यामलाल शून्य में देखते हुए सिर्फ सिर हिलाता रहता है। " ो सो ा था वह न कह पाने का उसे कोई मलाल नहीं रहा... क्या होगा कुछ कहकर भी? हमारा कुरुक्षेत्र या हमने लड़ा, इनका कुरुक्षेत्र ये लडेंगे। ीना है, तो लड़ना है... हॉल में बैठे हुए होनहार नई पी ़ी के कारीगरों की मोहनी सूरत उसकी आँखों के आगे तैर गई।"[91]

पुरानी पी ़ी को अपने गाँव और ामीन ायदाद के प्रति ितना लगाव रहता है उतना नई पी ़ी में नहीं रहता। 'व्यतीत' कहानी का रमेश गाँव ाने की बात सुनते ही उसके स्वर में ाल्लाहट भर गयी थी। "शहर में एक मुहल्ले से दूसरे मुहल्ले में भेंट-मुलाकात करने की बात तो हर बार अगले महीने पर टल ाती है। फिर इतने वर्षों से छूटा हुआ घर है-टूट-फूट, मरम्मत-सफाई इतना लंबा परिवार लेकर ाना, नाते-रिश्तेदार, लेन-देन सभी कुछ है-सभी की इस लायक स्थिति हुई तो ाएँगे ही।"[92] बल्कि इसके विपरीत रमेश का पिता हमेशा गाँव की कल्पना करते हुए ोन के लिए उतावला होता रहता है।

पुरानी पी ़ी के लोग अपने य ामानों पर एहसास रखते थे इसीलिए समय पर बिना बताए काम पर आ ाते थे। लेकिन नई पी ़ी के लोग ाहाँ अधिक पैसा मिलता है वहीं काम करते हैं। इसका ित्रण 'हलवाहा' कहानी में किया गया है। इस कहानी का बद्री प्रधान पुरानी पी ़ी के एहसान के संबंध में कहते हैं कि-"अरे! वह बाप-दादों का ामाना था। हलवाहे, तेली, ोली, ब ़ई, लोहार सबको खाने-कमाने को ामीन दे रखी थी। लोग भले थे, एहसान मानते थे। हलवाहे बखत पर खेत ोत ाते, काम-का ा के मौके पर ोली अपना

---

[91] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.117

[92] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.98

फ ि सम ाकर बा ाा लेकर आता, ब ़ई-लोहार अपने-अपने बखत पर काम आते। आ ा तो सब भूमिधर हो गए हैं। कौन किसकी सुनता है, किसको मानता है।"[93] इस कहानी के द्वारा शेखर ाोशी समा ा की नई पी ़ी में आए हुए महत्वपूर्ण परिवर्तन को रेखांकित करने का प्रयत्न करते हैं।

4.2.1.3 अकेलापन

बीसवीं सदी के पाँ ावें-छठे दशक से विश्व भर की मानसिकता में ाो सूक्ष्म परिवर्तन शुरू हुए, उसे शब्दों में पकड़ने का प्रयत्न प्रत्येक भाषा के साहित्यकारों ने अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार किया है। इस परिवर्तन के मूल में एक ओर दूसरे महायुद्ध के भयावह अनुभव थे, विज्ञान की प्रगति थी, बदलती अर्थव्यवस्था थी, ब ़ते शहर थे, भूमिगत संघर्ष था, नैतिक मूल्यों पर होनेवाले आघात थे, टूटते परिवार थे। इन सबके कारण अकेलेपन का अनुभव करनेवाले व्यक्तियों की संख्या दिन-ब-दिन ब ़ती ाा रही थी। औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण व्यक्ति औरों से कटकर ाीने के लिए अभिशप्त हो गया। परिणामस्वरूप उसे अकेलापन का बो ा ोना पड़ रहा है।

अकेलेपन के बारे में स्वयं शेखर ाोशी लिखते हैं कि-"मनुष्य की भावनाएँ बड़ी वि ाित्र होती हैं। नि ािन, एकांत स्थान में निस्संग होने पर भी कभी-कभी आदमी एकाकी अनुभव नहीं करता। लगता है, इस एकाकीपन में भी सब कुछ कितना निकट है, कितना अपना है परंतु इसके विपरीत कभी-कभी सैकड़ों नर-नारियों के बी ा ानरवमय वातावरण में रहकर भी सूनेपन की अनुभूति होती है। लगता है, ाो कुछ है वह पराया है, कितना अपनत्वहीन। पर

---

[93] मेरा पहाड़, शेखर ाोशी-पृ.98

यह अकारण ही नहीं होता। इस एकाकीपन की अनुभूति, इस अलगाव की ाड़ें होती हैं-विछोह या विरक्त की किसी कथा के मूल में।"[94]

ाब कोई व्यक्ति अपनी ागह छोड़कर दूसरी ागह बस ाता है, तब वह अपने आप को अ ानबी-सा महसूस करता है और खुद को अकेला ि ंदगी के साथ लड़ते हुए सो ाता है। इंसान ाब अकेला पड़ ाता है तो उसके मन में ीने की लालसा नहीं होती। उसके लिए ीना और मरना एक समान होता है। ऐसी बात ाब उसके मन में आती है तब से उसका अकेलापन ब ़ने लगता है। इस अकेलेपन का अंत तब होता है ाब उसे कोई अपना कहलाने वाला आदमी मिलता है। यही बात हमें 'दा यु' कहानी में देखने को मिलती है। इस कहानी का पहाड़ी बालक मदन शहर के एक होटल में काम करते हुए अपने आप को अकेला महसूस करता है तथा उसकी आँखें बराबर किसी ऐसे आदमी का तलाश करती रहती है, ि सि वह अपना तो कह सके, उसका यह अकेलापन तब दूर होता है ाब उसका परि ाय ागदीश बाबू से होता है ो खुद अकेलेपन से पीड़ित है। " ागदीशबाबू के ोहरे पर पुती हुई एकाकीपन की स्याही दूर हो गई और ाब उन्होंने मुस्कराकर मदन को बताया कि वे भी उसके निकटवर्ती गाँव के रहनेवाले हैं तो लगा ैसे प्रसन्नता के कारण अभी मदन के हाथ से 'ट्रे' गिर पड़ेगी। उसके मुँह से शब्द निकलना ाहकर भी न निकल सके। खोया-खोया-सा वह अपने अतीत को फिर लौट-लौटकर देखने का प्रयत्न कर रहा हो।"[95]

इस कहानी के अकेलेपन के संदर्भ में देवेंद्र कुमार ौबे लिखते हैं कि- "शेखर ोशी की इस कहनी की संवेदना को देखें तो एक बात स्पष्टतः उभरकर सामने आती है 'हिंदी कहानीःअलगाव का दर्शन' (The theme of

---

[94] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.7

[95] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.8

alienation in modern hindi short stories) में नयी कहानी में अलगाव-बोध को दर्शाते हुए गार्डन ाार्ल्स रोडरमल ने लिखा है कि-"नगर की पृष्ठभूमि में अकेलापन और अलगाव की विषय-वस्तु नयी कहानी में बार-बार आती है। खुद लेखकों की तरह उनके पात्र भी कहीं और से बड़े शहर में आये हैं। लेकिन ीवन में यह अलगाव का बोध केवल शहर के कारण ही आया है, बल्कि औद्योगिक समा ा, ब ़ती आर्थिक विषमता, अंधा-धुंध ब ़ने की प्रवृत्ति आदि कारणों से भी आया है। यह बोध आगे भी ालता रहता है।"[96]

पारिवारिक विघटन और कटु परिस्थितियों के कारण ाब व्यक्ति के विश्वास और आस्था के सारे सहारे छूट ाते हैं तब ीवन में अलगाव की स्थिति उत्पन्न होती है। यह स्थिति बड़ी भयानक होती है। मूल्यों की विसंगतियों में ाब व्यक्ति यह अनुभव करने लगता है कि उसके मूल्यों का समा ा में कोई आदर नहीं होता है-व्यक्ति अपने अस्तित्व की रक्षा नहीं कर पाता और उसे ीवन निरर्थक लगने लगता है तो ऐसी स्थिति में वह अलगाव की स्थिति में फंस ाता है और ीवन की वस्तुओं और विसंगतियों को ोलते- ोलते टूटकर अपने मूल्यों से, स्वयं से तथा दुनिया से अ ानबी हो ाता है। 'किं करोमि ानार्दन' के नित्यान यु पात्र में हम इस अलगाव और अ ानबीपन को देख सकते हैं। नित्यान यु की धार्मिक भावना को परिवार के किसी से आदर नहीं मिलता। अपने अस्तित्व की रक्षा न कर पाने के कारण वह अलगाव की स्थिति में फंस ाता है। "आत्मग्लानि के कारण नित्यान यु का मन तिलमिला उठा। इसी क्षण इस नश्वर शरीर का परित्याग कर देने की तीव्र इ छा मन में उठने लगी। भौतिक ागत की प्रत्येक वस्तु उनकी दृष्टि में

[96] हंस, रा ोंद्र यादव, अप्रैल-1990

आकर्षणहीन हो उठी।"[97] शेखर ोशी नित्यान यु पात्र के द्वारा परिवार के विघटन से उत्पन्न अलगाव और अ ानबीपन का सशक्त ित्रण किया है।

अ ानबीपन के मूल में असमर्थता और विवशता है। इसके संबंध में विद्वान 'सोमन' ने 'आन द मीनिंग आफ एलिएनेशन' नामक अपने एक लेख में लिखा है कि-"अ ानबीपन के मूल में असमर्थता व विवशता की भावना है िससे क्रमशः सामाि ाक ीवन की अर्थहीनता व आदर्शहीनता उ ागर होती है। और मूल्यगत खोखलेपन का अनुभव होता है। ो धीरे-धीरे सामाि ाक ीवन की उदासीनता और अलगाव में बदलकर मनुष्य के ीवन को एकाकीपन और अ ानबी की भावना से भर देता है। इस तरह सब मिलाकर ीवनगत असमर्थता, विवशता, अर्थहीनता, आदर्शहीनता, मूलगत खोखलापन, अलगाव, अकेलापन, परायापन और आत्मनिर्वासन की अनुभूति अ ानबीपन की भावना के मूल प्रेरक तत्व हैं।"[98]

आधुनिक समा ा की सबसे बड़ी समस्या अकेलापन है। डॉ.देवीशंकर अवस्थी के शब्दों में कहें तो-"आधुनिक मानव का अकेलापन ही इनकी त्रासदी और विडंबना है।"[99] शहरीकरण के कारण यादातर लोग अपने परिवेश से कट कर शहरों में विवशता से रहते हैं। लेकिन उनके भीतर ि ंदगी ीने में ही सार्थकता का अनुभव करते हैं। अपने ीवन की सार्थकता की खो ा में छटपटाने लगते हैं। यही छटपटाहट हम 'व्यतीत' कहानी में देखते हैं। इस कहानी का 'बाबू' अपने बेटे की नौकरी की व ाह से अपने परिवशे से कट कर शहर में रहने लगता है। लेकिन वह हमेशा अपने गाँव वापस ाने की कल्पना

[97] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.37
[98] आधुनिक हिंदी उपन्यास और अ ानबीपन, डॉ.विद्याशंकर राय-पृ.12
[99] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.28

करता रहता है और न ाने के कारण अपने आप को अकेला महसूस करने लगता है।

आधुनिक परिवेश में ीता हर मनुष्य, ाहे वह पुरुष हो या स्त्री सभी अकेलेपन की त्रासदी को ोल रहे हैं। महानगरीय ीवन ीती नारियाँ अकेलेपन के कारण रिक्तताबोध का अनुभव करने लगी हैं। विशेष रूप से शिक्षित, आत्मनिर्भर नारियाँ इस दशा को अधिक ोल रही हैं। नौकरी करते वक्त उनको एक क्षण भी विश्राम नहीं मिलता बल्कि रिटायरमेंट के बाद उनको अकेलेपन और रिक्तताबोध का आभास होने लगता है। 'रिक्त' कहानी की 'मीना' में हम इस स्थिति को देख सकते हैं। मीना काले ा में काम करते हुए बड़ी व्यस्तता का ीवन बिताती थी। लेकिन रिटायरमेंट के बाद वह रिक्तबोध का अनुभव करने लगती है-"अखबार के छितरे हुए पन्नों को तहाकर मे ा पर रखते हुए मीना को ैसे अपनी व्यस्तता के लिए एक सहारा मिल गया। अटपटे ंग से तहाये हुए अखबार के पन्नों को उसने करीने से मोड़कर क्रमवार लगाया और फिर उसी करीने से मे ा पर रख दिया।"[100]

'कोसी का घटवार' कहानी भी इस अकेलेपन और अलगाव के केंद्र में है। यह अकेलापन शहर की व्यस्तता के कारण नहीं है बल्कि ीवन में अपना कहलाने लायक कोई न रहने के कारण उत्पन्न अकेलापन है। इस कहानी के गुस्साई पात्र के कारण उत्पन्न अकेलापन है। इस कहानी के गुस्साई पात्र में अकेलापन देख सकते हैं। "कभी-कभी गुस्सई का यह अकेलापन काटने लगता है। सूखी नदी के किनारे का यह अकेलापन नहीं, ि ादंगी-भर साथ देने के लिए ो अकेलापन उसके द्वार पर धरना देकर बैठ गया है वही। ि ासे अपना कह सके ऐसे किसी प्राणी का स्वर उसके लिए नहीं।"[101] यह अकेलापन शब्द कहानी

---

[100] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.55

[101] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.61

में बार-बार आता है। पूरी कहानी गुस्साई के अकेलेपन को रेखांकित करती है।

इस कहानी के अकेलेपन के संदर्भ में विवेक सिंह लिखते हैं कि-" ाब हिंदी कविता और कहानी में पश्चिमी आधुनिकतावाद से लिया हुआ अकेलापन फैशन में था, शेखर जोशी ने निम्न श्रेणी के पात्र के अकेलेपन का मार्मिक वर्णन करके झूठ और सच के बीच का फर्क बतला दिया।"[102]

अकेलेपन की समस्या से केवल बड़े ही नहीं बल्कि बच्चे भी पीड़ित है। 'गिद्ध' कहानी का राजेंद्र विमाता के घर में रहते हुए अपने आप को अकेला महसूस करता है-" ांदर, सल्ली और नीपु की गिनती अब तक खत्म हो चुकी थी। अपनी-अपनी पसंद के खिलौने छाँटने में उन्होंने बीसियों बार एक दूसरे से अदला-बदली की, परंतु राजु को जो खिलौने एक बार दे दिए गए, उन्हीं को लेकर वह अपना किताबों की ताक पर रख आया।"[103] इससे स्पष्ट होता है कि राजेंद्र अलगाव और अकेलेपन की भावना के कारण अन्य बच्चों की तरह जिद्द नहीं करता।

इंसान अकेलापन व अलगाव उस वक्त महसूस करता है, ाब अपना कोई उन से दूर चला जाए, उनकी यादें हमारे साथ रह जाती हैं, इस बात को 'कविप्रिया' कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी की शीला गिरीश से प्यार करती है पर गिरीश घर के कलह के कारण घर से दूर रहता है तो वह अकेलापन महसूस करने लगती है। शीला कहती है-"इस असह्य एकाकीपन की सीमा से उसी क्षण भाग जाने को मन होता है।"[104]

---

[102] कसौटी, शेखर जोशी-पृ.252
[103] बच्चे का सपना, शेखर जोशी-पृ.103
[104] बच्चे का सपना, शेखर जोशी-पृ.69

इस से स्पष्ट होता है कि अकेलापन गाँव या शहर में नहीं रहता है बल्कि मनुष्य के मन में होता है। क्योंकि हज़ारों व्यक्तियों के बी ा में रहकर भी कुछ लोग अकेला महसूस करते हैं तो कुछ लोग ानविहीन प्रदेश में रहते हुए भी अकेला महसूस नहीं करते।

अतः शेखर ोशी की कहानियों के सभी पात्र किसी-न-किसी रूप में अकेलेपन की पीड़ा भोगते हुए प्रतीत होते हैं। मुख्यतः 'मेरा पहाड़' संग्रह की कोई कहानी नहीं है ि ासका पात्र अकेलेपन से पीड़ित हो।

4.2.1.4 मृत्युबोध

वर्तमान समय में समा ा की एक और समस्या मृत्युबोध है। इस समस्या के कारण और मनःस्थिति के बारे में शेखर ोशी ने अनेक कहानियों में लिखा है ैसे 'मृत्यु', ' ी ह ुरिया', 'किं करोमि ानार्दन', 'विस नि' आदि।

मनुष्य के ीवन में ान्म और मरण दोनों महत्वपूर्ण हैं क्योंकि एक के बिना दूसरे का कोई अर्थ नहीं रहता। इसी प्रकार सुख और दुख का भी बड़ा महत्व है। अकेले सुख में ीवन विकृत हो ाएगा। अकेले दुख से भी ीवन असह्य और विकृत हो ायेगा। गीता में कहा गया है कि-"सुख और दुख, लाभ और हानि, ाय और परा ाय तीनों को समान सम ाना।"[105] गीता का यह बोध मनुष्य के लिए अत्यन्त हितकर और आवश्यक भी है।

आधुनिक समय में व्यक्ति निराशा, कुंठा, संत्रास, अकेलापन, विघटित ीवन शैली का ीवन ी रहा है। समा ा में यंत्रीकीकरण मानव को भी यंत्र बना दिया। परिणामस्वरूप मानव अपने आपको मृतप्राय मानने लगता है। विशेष रूप से महानगर के यांत्रिक ीवन में मानव की सारी संवेदनाएँ विघटित हो ाती हैं। उसे अनुभव होने लगता है कि वह किसी मुर्दा अथवा मृत माहौल

[105] परम सखा मृत्यु, काका साहब कलेलकर, भूमिका के पृ.सं.छह

में सांस ले रहे हों। सामा ि क सह संबंधों से कटे रहने के कारण असुरक्षा की एक ऐसी छटपटाहट दृष्टिगो ार होती है ो उसे ीने की परिस्थितियों में भी मृत्युबोध की अनुभूति को उत्पन्न करती है। इस स्थिति को हम 'किं करोमि ानार्दन' कहानी के नित्यान यु पात्र में देख सकते हैं। घर के अंतरंग कलह देखकर उसमें मृत्युबोध की अनुभूति उत्पन्न होती है। "आत्मग्लानि के कारण नित्यान यु का मन तिलमिला उठा। इसी क्षण इस नश्वर शरीर का परित्याग कर देने की तीव्र इ छा मन में उठने लगी। भौतिक ागत की प्रत्येक वस्तु उनकी दृष्टि में आकर्षणहीन हो उठी।"[106]

आधुनिक मनुष्य भी परलोक और नरक पर विश्वास करते हैं। मुख्यतः धार्मिक लोग। उनका मानना है कि अपने पाप-पुण्य के अनुसार मृत्यु के बाद परलोक या नरक मिलता है। मृत्यु के इसी डर के कारण पुण्य कार्य करने लगते हैं ैसे 'किंकरोमि ानार्दन' का नित्यान य। "आंगन में सुखाने के लिए डाले गये धान में गाय-बछिया आकर मुँह मारने लगे, तो भी नित्यान यु उसे स्वयं नहीं हटाएँगे। वह तो सू ाना-भर दे देंगे, ओरी कमला देख गाय आयी है। सीधे गाय को हटा देने से संकल्प टूट ाएगा, परलोक बिगड़ ाएगा न। सारी ि ंदगी परलोक ही बिगाड़ा किये, अब बु ापे में भी कुछ पुण्या नि न हुआ तो..."[107]

मृत्यु के डर से उत्पन्न यह दुख बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि "सुख ीवन रूपी महासागर पर तैरना सिखाता है, दुःख उस महासागर में डुबकी लगाकर अंदर से महान तत्व रूपी मोती लाने की कला और हिम्मत देता है।"[108] सुख मानव को ीवन का सही अर्थ नहीं सम ा सकता मगर दुख से

---

[106] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.37

[107] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.38

[108] परमा सखा मृत्यु, काका साहब कलेलकर, पृ.सं.भूमिका, छह

मानव स्वयं अपने ाीवन को सार्थक बनाने का प्रयत्न करता है। इस संदर्भ में काका कालेलकर ने कहा है कि "दुख सत्यं, सुख माया, दुख ान्तोः परं धनम्।"[109]

मृत्यु से सभी डरते हैं। मुख्यतः वृद्ध लोग। वृद्धों का यह डर हमें ‘ ाी-ह ारिया’ कहानी के ह ारिया पात्र में देखने को मिलता है। अपने साथी की मृत्यु से डर कर ह ुरिया मृत्यु के प्रसंग से दूर रहना ाहता है-"एक अज्ञात भय के कारण वह बार-बार मृत्यु की इस ा र्ा को अनसुनी कर देना ाहता था।"[110] यह डर केवल अपने प्राणों के लिए ही नहीं होता बल्कि उनकी मृत्यु से परिवार की दशा की कल्पना करके डरने लगते हैं-"मृत्यु की कल्पना से एकबारगी सिहर उठा ह ूरिया। केवल अपने ही प्राणों का मोह नहीं, बु ़ैती में ब्याह करने के कारण एक अभागिन और दो नन्हे-मुन्हे अनाथों का शोक भी ैसे उस सिहरन का कारण था।"[111] लेकिन ाीवन को कृतार्थ करने के लिए मरण आवश्यक है।

मृत्यु की बात सम ाते हुए काका कालेलकर ने कहा है कि-"प्राणियों के लिए ईश्वर की सबसे श्रेष्ठ देन था वरदान कोई हो, खुदा की अ छी-से-अ छी नियामक कोई हो, तो वह मरण ही है। अगर भगवान हम से मरण छीन लेगा तो उसके खिलाफ सत्याग्रह करके मैं आत्म-हत्या ही करूँगा।"[112]

मृत्यु से भी अधिक भयानक मृत्यु की प्रतीक्षा है। इस संबंध में ‘मृत्यु’ कहानी का पात्र अपना मत इस प्रकार प्रस्तुत करता है-"दर्दनाक होने न होने का दृष्टिकोण तो हम लोगों का है। मैं तो सो ाता हूँ, रोग-शय्या पर वर्षों पड़े रहने

---

[109] परमा सखा मृत्यु, काका साहब कलेलकर, पृ.सं.भूमिका, छह
[110] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.70
[111] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.70
[112] परम सखा मृत्यु, काका साहब कलेलकर, भूमिका पृ.4

के बाद मरने की अपेक्षा क्षण-भर के आवेग में ीवन का इस प्रकार अंत कहीं कम दर्दनाक होगा।"[113] उसीने आगे ालकर अ ानक होनेवाली मृत्यु पर अपना मत स्पष्ट करते हुए कहा है कि-"मृत्यु को ऐसा आकस्मिक आक्रमण नहीं करना ाहिए। मनुष्य की कितनी अधूरी आकांक्षाएँ होती हैं।"[114]

दूसरों की मृत्यु का ब ों पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता है उसे हम मृत्यु कहानी के कौस्तुभ के वाक्यों से देख सकते हैं। "मैं तो कहता हूँ, ब ापन में एक ऐसी भी अवस्था आती है, ाब मृत्यु के साथ प्रमुख रूप से भय की भावना ही ुड़ी रहती है। मु ो अपने गाँव की एक बु ़िया बुआ की मौत की याद है।"[115] इससे स्पष्ट होता है कि मृत्यु के डर से ब ों से बू ़ों तक पीड़ित हैं।

शेखर ोशी अपनी कहानियों के अनेक पात्रों द्वारा इस मृत्युबोध की समस्या को स्पष्ट करते हैं ो इस आधुनिक समा ा की सबसे बड़ी समस्या है।

4.2.1.5 प्रेम

शेखर ोशी ने अपनी कुछ कहानियों में स्त्री-पुरुष के बी ा के रागात्मक आकर्षण अथवा प्रेम का ित्रण किया है। ैसे 'कोसी का घटवार', 'प्रश्नवा ाक आकृतियाँ', 'कविप्रिया' आदि।

इस दृष्टि से 'कोसी का घटवार' उनकी अविस्मरणीय पहली प्रेम कहानी है। इस कहानी का गुसाई और लछ्मा दोनों एक दूसरे से प्यार करते हैं लेकिन परिवार में अकेले होने और फौ ा की नौकरी के कारण ही उसे अपनी प्रेमिका लछमा को खोना पड़ा था। ाब उसने लछमा के बाप तक उससे शादी का प्रस्ताव पहुँ ाया था, तो उसने कहा था-"ि ासके आगे-पीछे भाई-बहिन नहीं,

---

[113] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.122
[114] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.122
[115] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.122

माई-बाप नहीं, परदेश में बंदूक की नोक पर ाान रखनेवाले को छोकरी कैसे दे दें हम?"[116] वर्षों बाद ाब वे मिलते हैं कि "कोसी की सूखी धार अ ाानक ाल-प्लावित होकर बहने लगती, तो भी लछमा को इतना आश ार्य नहीं होता, ि ातना अपने स्थान से केवल ाार कदम की दूरी पर गुसाई को इस रूप में देखने पर हुआ।"[117] इसके बाद लछमा के प्रसंग में सिर्फ यह कि उसके हाथ की रोटी खाते हुए ाब गुसाई ने उससे कहा कि "लोग ठीक ही कहते हैं, औरत के हाथ की बनी रोटी में स्वाद ही दूसरा होता है, तो 'लछमा' ने करुण दृष्टि से उसकी ओर देखा।"[118] इस से उन दोनों के बी ा का रागात्मक संबंध स्पष्ट हो रहा है।

किसी ने कहा कि-प्रेम त्यागना ानता है बलिदान नहीं यही बात इस कहानी के गुसाई पात्र में देख सकते हैं। लछमा शादी से पहले गंगनाय यु की कसम खाकर कहती है-" ैसा तुम कहोगे, मैं वैसा ही करूँगी। मगर वैसा न करने के कारण भगवान को क्रोध से ब ाने के लिए गुसाई कहता है-"कभी ाार पैसे ुड़ ाएँ, तो गंगनाथ का ागर लगाकर भूल- ूक की माफी माँग लेना। पूत-परिवारवालों को देवी-देवता के कोप से ब ा रहना ाहिए।"[119]

इस कहानी के संदर्भ में विवेक सिंह लिखते हैं कि-"शेखर ोशी की यह आंरभिक कहानियों में से है, लेकिन इस दृष्टि से बेमिसाल कि इस स्थल का वर्णन (वर्षों बाद ाब दोनों मिलते हैं) में कहीं कथाकार का हाथ नहीं कांपता और ि ात्र अतिशय साधे हुए रूप में अंकित होता है। गुसाई और लछमा के

[116] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.19
[117] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.23
[118] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.27
[119] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.28

बी ा अपनी परिस्थिति-संबंधी सू ानाओं का आदान-प्रदान होता है, पर प्रकट रूप में विगत प्रेम की कोई ा ार्ा नहीं होती।"[120]

आर्थिक स्थिति के कारण प्रेम में उत्पन्न परिस्थिति को 'प्रश्नवा ाक आकृतियाँ' कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी में वीरेंद्र से शैल प्यार करती है। इसके संबंध में वीरेंद्र कहता है कि-"कभी-कभी मामा के घर में उससे भेंट होने पर एक-दो औप ाारिक बातें होतीं। तब एकटक अपनी ओर उसे देखते हुए मु ो लगता कि ैसे वह और भी कुछ कहना ाहती हो।"[121] नौकरी की अपेक्षा के कारण शैल की माँ भी उन दोनों की शादी करवाना ाहती है लेकिन न मिलने की व ाह से शैल का इंगे ामेंट किसी और से हो ाता है। इस कहानी में शैल के अव्यक्त प्रेम से उत्पन्न दुख का ित्रण किया गया है और वीरेंद्र की आर्थिक तंगी।

इसी प्रकार का एक पक्षीय प्रेम हमें 'कविप्रिया' कहानी में भी देखने को मिलता है। इस कहानी की शीला, गिरीश से प्यार करती है। इसीलिए गिरीश की "नि ीव पुस्तक को हाथों में लेकर भी उसे लगा कि ैसे गिरीश की स ाीव देह का स्पर्श हो रहा हो।" "उसका गिरीश कवि है, यह सो ाकर उसे गर्व, आनंद और रोमां ा की अनुभूति होने लगी। धड़कते हृदय से उसने पुस्तक खोली। मस्तिष्क में एक वि ाार आया, कहीं कुछ लिख न दिया हो। और ल ाा से उसकी कनपटियाँ आरक्त हो गयीं।"[122] लेकिन गिरीश कहीं पर भी उसके बारे में नहीं लिखता। गिरीश की इस उपेक्षा के कारण वह रोने लगती है। "भावावेग में शीला की आँखें भर आयीं। कमरे की निस्तब्धता को ीरती हुई

---

[120] कसौटी, अंक-15-पृ.252

[121] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.82

[122] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.82

मौसी के पैरों की आवाज़ निकटतर होती गयी। इससे पहले कि मौसी कुछ पूछती, शीला ने ही आँखों पर आँ ाल रखकर धुएँ की शिकायत कर दी।"[123]

इस प्रकार शेखर ोशी किसी कहानी में असफल प्रेम का संवेदनात्मक ित्रण करते हैं तो कहीं एक पक्षीय प्रेम से उत्पन्न दुख और दर्द का सशक्त ित्रण भी करते हैं।

4.2.1.6 वृद्ध और विधवाओं की परिस्थिति

वृद्धावस्था शारीरिक परिवर्तन से संबंधित है। वे ाो भी कार्य करते हैं, वह बहुत कुछ पुरातन काल से ाली आ रही परंपराओं, रीति-रिवा ाों तथा व्यवहार के प्रतिमानों के अनुसार ही होता है। प्रा ाीन काल में घर के मुखिया यही वृद्ध लोग हुआ करते थे। लेकिन इस अर्थ आधारित समा ा में अब मुखिया वही होता है ाो पैसा कमाता है। इस कारण भारत में संयुक्त परिवार अब धीरे-धीरे एकल परिवारों में बदलते ाा रहे हैं।

वृद्धावस्था में लोग अपने परिवार के साथ सुखी ाीवन ाीना ाहते हैं। लेकिन बहुओं की ईर्ष्या और कलह के कारण ाी नहीं पाते। इस अवस्था में वे लोग गौरव और सम्मान के साथ ाीना ाहते हैं। किसी के उपेक्षा भाव को सह नहीं पाते। इस स्थिति का ित्रण हमें शेखर ोशी की 'किं करोमि ानार्दन' शीर्षक कहानी में देखने को मिलता है-"नित्यान यु के लिए और अधिक कुछ सुनना अंसभव हो गया। उन्हें लगा, ैसे उनका समस्त ाीवन व्यर्थ बीत गया हो। ाीवन के इस अंतिम ारण में भरे-पूरे, सुनियंत्रित, सुखद पारिवारिक ाीवन का स्वप्न ैसे आ ा भंग हो गया हो। उनकी कल्पना मिथ्या थी। आ ा

[123] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.82

प्रत्यक्ष रूप में उनके सम्मुख ो सत्य खड़ा था, वह था घर के अंतरंग का कोलाहल, बहुओं की ईर्ष्या, वृद्ध के प्रति परिवार का उपेक्षा भाव।"[124]

परिवार के वृद्ध लोग अपनी संतान को आँखों के सामने देखना ाहते हैं। पारिवारिक विघटन और बँटवारा ैसी बातों को वे लोग सह नहीं पाते। 'परिक्रमा' कहानी का हरिदत्त अपने ब ों के मुँह से बँटवारे की बात सुन कर कहने लगता है कि-"रामी! ि स दिन मैं मर ाऊँगा, उस दिन तुम पहले बँटवारा करना फिर मेरी अर्थी उठाना। पर ाब तक मैं ि ंदा हूँ, कभी ऐसी बात इस घर में नहीं उठेगी। क्रोध और दुख के कारण उनका शरीर काँपने लगा था और आँखें भर आयी थीं।"[125] इससे स्पष्ट होता है कि वृद्ध लोग संयुक्त परिवार का ही समर्थन करते हैं।

वृद्धावस्था में आयु-वृद्धि के साथ-साथ ो शारीरिक, सामा ाक ओर सांवेगिक परिवर्तन उपस्थित होते हैं, उस कारण परिवार तथा पास-पड़ोस के लोगों से समायो न करने की आवश्यकता होती है। वे लोग ैसे अपने परिवार से प्यार करते हैं उसी प्रकार अपने गाँव वालों और पड़ोसियों को भी देखने की इ छा रखते हैं। इसी इ छा के कारण 'टूटन' कहानी का त्रिलो न कहता है कि-"तुमने अ छा किया इस बार ाल्दी लौट आये। ऐसे ही सब लोग दो-दो, ार- ार महीनों में घर का एक ाक्कर लगा लें तो गाँव में रौनक बनी रहे। अब हम लोगों का क्या ठिकाना। आ ा हैं, कल की राम ाने। आखिरी बिदाई सम ो। सब से भेंट-घाट हो ाए तो मन में कसक तो नहीं रहेगी।"[126]

वृद्धावस्था में लोगों में अनेक परिवर्तन आते हैं। हर बात और विषय पर स्वयं निर्णय लेने वाला व्यक्ति भी वृद्धावस्था में दूसरों के निर्णय पर निर्भर

---

[124] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.38
[125] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.143
[126] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.89

करने लगता है। इस स्थिति को हम 'व्यतीत' कहानी के बाबू पात्र में देख सते हैं-"अभी तो खाना खाया था.... खैर, तुम्हारी इ छा।"[127]

इस अवस्था में वे लोग अपने ब ों के साथ समय बिताना ाहते हैं। ऐसा न होने के कारण अपने आप को अकेला सम ाने लगते हैं। 'व्यतीत' कहानी का बाबू अपने बेटे के उपेक्षा भाव से ग्रस्त है-"पहले रमेश रो ा दो-ार मिनट बाबू के निकट बैठकर बात ीत करता था। काम-का ा के बारे में मशविरा लेता था। दफ्तर की, पड़ोसियों की, या रिश्तेदारों की किसी बात को लेकर बातों का क्रम ालता और फिर अक्सर ब ों के भविष्य की, गाँव की, ामीन- ायदाद की बातें होतीं।"[128] लेकिन अब समय न मिलने की व ाह से ठीक से अपने पिता से बात नहीं कर पाता। परिणाम स्वरूप बाबू कटा-कटा-सा रहने लगता है। शेखर ोशी की इस कहानी में वृद्धों के प्रति उपेक्षा भाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

वृद्धावस्था में लोग अपने समय की परंपराओं और रीति-रिवा ों का पालन नई पी ़ी के लोगों के साथ करवाना ाहते हैं। अतः स्वाभाविक ही है कि ऐसे समा ा में युवा पीि ़याँ प्रायः विद्रोह करती हैं अथवा द्वेष से पीड़ित रहती हैं। युवा पी ़ी इस आधुनिक समा ा में आधुनिक तरीके से रीति-रिवा ों का पालन करना ाहती है। इस विषय पर दोनों पीि ़यों में संघर्ष होने पर भी वृद्ध लोग ब ों के आनंद के लिए आधुनिक पद्धतियों का पालन करने के लिए तैयार हो ाते हैं। लेकिन उनका अंतर्मन इन आधुनिक पद्धतियों को स्वीकार नहीं कर पाता। वृद्ध लोगों की यह उल ान हम 'विडुवा' कहानी के बड़े ठाकुर में देख सकते हैं। "बड़े ठाकुर धीरे-धीरे बे ैनी अनुभव करने लगा। उनका मन हुआ कि उठकर विडुवा बंद करा दें। लेकिन सब लोग ि ास तल्लीनता से उसे

---

[127] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.97
[128] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.97

देख रहे थे, उसमें अपना ऐसा व्यवहार उन्हें संगत नहीं प्रतीत हुआ। वह ुप ाप तख्त से उठे और घर के अंदर ाल दिए।"[129]

इस प्रकार शेखर ोशी ने अपनी कहानियों के द्वारा वृद्ध लोगों के प्रति उपेक्षा भाव और उनके दुख, दर्द और अंतःसंघर्ष को सफलता पूर्वक प्रस्तुत किया है। इस के साथ-साथ उन्होंने विधवाओं की दयनीय स्थिति का भी वर्णन अपनी अनेक कहानियों में किया है। ैसे विस नि, कथा-व्यथा, संवादहीन, गोपुली बुबु, सिनारियो, कोसी का घटवार, परिक्रमा आदि।

हमारे देश में विधवाओं की स्थिति बहुत दयनीय है। उन्हें अशुभ माना ाता है। परिवार के सदस्यों से उन्हें किसी प्रकार की सहायता नहीं मिलती। परिणामस्वरूप विधवा दुःखों के बो ा को ोती हुई ीवन यापन करने को विवश है। इस स्थिति का ित्रण हमें 'कोसी का घटवार' कहानी की लछमा के शब्दों में मिलता है। "ि ासका भगवान नहीं होता, उसका कोई नहीं होता। ोठ-ोठानी से किसी तरह पिण्ड छुड़ाकर यहाँ माँ की बीमारी में आयी थी, वह भी मु ो छोड़कर ाली गयी। एक अभागा मु ो रोने को रह गया है, उसी के लिए ीना पड़ रहा है। नहीं तो पेट पर पत्थर बाँधकर कहीं डूब मरती, ं ाल कटता।"[130]

औद्योगीकरण की व ाह से सभी लोग शहर की राह देखते हैं तो केवल विधवाएँ गाँव में रह ाती हैं। बाल विधवा की मनःस्थिति का ित्रण हमें 'विस नि' कहानी के भाभी में देखने को मिलता है। वह "पुरखों की देहरी पर ही अपनी आखिरी साँस छोड़ने की उन्होंने दुहाई दी तो और अधिक आग्रह करने का साहस तारी और मँ ाले में से किसी का न हुआ।"[131]

---

[129] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.36
[130] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.68
[131] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.68

विधवा के लिए कोई सहारा नहीं देता। लेकिन दो विधवाओं के लिए एक दूसरे का सहारा मिलता है। "सरुली बुआ, ोा स्वयं भी विधवा थी और वर्षों से मायके में अपने भाइयों की ामीन- ायदाद की देख-रेख करते हुए िंदगी काट रही थी, भाभी के सुख-दुःख की साथिन थीं। सुख तो भला दोनों की िंदगी में क्या था लेकिन दुःख-तकलीफ में दोनों को एक-दूसरे का सहारा रहता था। पात-पतेल से लेकर खेती-पाती, पू ाा-पाठ में दोनों दो देह एक प्राण होकर रहती थीं।"[132] शेखर ोशी ने अपनी कहानी में इस ित्रण के द्वारा विधवाओं की दयनीय स्थिति का स ाीव और सशक्त ित्रण किया है।

इसी प्रकार का सहयोग हमें 'परिक्रमा' कहानी में भी देखने को मिलता है। शेखर ोशी के इन शब्दों से यह बात स्पष्ट होती है कि-"अपना सामान सहे ाते हुए, ोठी को हरीश की माँ (विधवा) से साथ ालने की तैयारी करने के लिए नहीं कहना पड़ा। वह स्वयं ैसे ानती हो कि उन दोनों की मं िल एक ही है।"[133]

नौकरी की व ाह से लड़के शहर के हो ाते हैं तो शादी करके लड़कियाँ अपने ससुराल की हो ाती हैं। गाँव में केवल अभावग्रस्त विधवा रह ाती है। 'सिनारियो' और 'संवादहीन' कहानियों में इस प्रकार की असहाय महिलाओं का ित्रण है। संपन्न मध्यवर्ग की ताई परिवार के पलायन के कारण 'संवादहीन' होने की कगार पर हैं तो सिनारियो कहानी की आमा आ ान्म अभाव ग्रस्त और दुखों के बो ा को ोती हुई ीवन यापन करने को विवश हैं।

विधवा का साथ केवल अकेलापन देता है। अपने इस अकेलेपन के कारण ीवन निरर्थक लगने लगता है। एक-एक दिन बहुत कठिनाई से बिताना पड़ता है। विधवा की इस स्थिति का ित्रण 'कथा-व्यथा' कहानी में शेखर

---

[132] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.151

[133] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.147

ोशी इस प्रकार करते हैं-" ीवंती ने ाल्दी- ाल्दी सब काम निबटाया। अकेले पेट के लिए खाना बनाने में ही कितना आलस्य हो आता है। सप्ताह में कई दिन वह भूखी ही रह ाती है। आ ा भी उसका मन ूल्हा ालाने को नहीं हुआ।"[134] इस से यह बात स्पष्ट है कि विधवा ीवन अकेलेपन की व ाह से अरुिकर लगता है। विधवा को किसी ीज़ के प्रति रुि ा नहीं रहती। यहाँ तक कि खान-पान पर भी।

4.2.1.7 पर्वतीय ीवन

शेखर ोशी ो एक पहाड़ी लेखक हैं उन्होंने अपनी कहानियों में पहाड़ी प्रांत में ीनेवाले लोगों के हर दुख और दर्द को सह ा रूप से प्रस्तुत किया है। अपने पहले कहानी संग्रह 'मेरा पहाड़' (1958) की कहानियों में पहाड़ से विस्थापित होते हुए भी उसके प्रति लगाव या ुड़ाव को कम नहीं किया है।

पर्वतीय भू भाग मैदानी भाग से भिन्न है। पर्वतीय क्षेत्र पहाड़ों से और वहाँ के प्रकृति सौंदर्य से मन को मोहित करता है। शेखर ोशी अल्मोड़ा पहाड़ के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन इस प्रकार करते हैं-"आसमान साफ था। अस्त होते हुए सूर्य का आलोक किन्हीं अदृश्य दिशाओं से आकर उस संपूर्ण हिम-विस्तार को सिंदूरी आभा बैंगनी रंग में परिवर्तित होने लगी और पर्वत श्रृंखला की सलवटें गहरी श्यामल रेखाओं में अपनी पह ान बनाने लगी थी।"[135]

इस प्राकृतिक सौंदर्य और ठंड के कारण गर्मियों में पहाड़ की यात्रा करनेवाले लोगों की संख्या भी अधिक होती है। इससे पहाड़ की रौनक ब ़ ाती है। 'छोटे शहर के बड़े लोग' शीर्षक कहानी में लेखक इस स्थिति का

---

[134] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.103
[135] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.129

ित्रण करते हुए लिखते हैं कि-"गर्मियों के मौसम की बात भिन्न है ाब पूरा कस्बा सैलानियों की रंगीनी से खिल उठता है और वे लोग सुबह से लेकर देर रात तक बा ाार, सड़कों व होटलों के छे ाों पर ाहकते-फुदकते रहते हैं। तरह-तरह की कारों, वैनों और गाड़ियों की ि ाल्ल-पों से कस्बा गूँ ाता रहता है। सैलानियों की पोशाक, उनका केश-विन्यास, उनकी ाल- ाल लोगों की उत्सुकता और ा ार्ा का विषय बनी रहती है। शराब, ुआ और रोमांस के कारण आये दिन एक नया शगूफा खिलता है और सी ान खत्म हो ाने पर कस्बे के लोग वर्ष-भर फिर इन घटनाओं की ुगाली करते रहते हैं।"[136]

सर्दियों में यहाँ के लोगों का ीवन दयनीय होता है क्योंकि सर्दियों में पहाड़ी प्रांत में बर्फ पड़ता है। इस बर्फ और ठंड से ब ाने के लिए अधिकांश स्थानीय लोग भी मैदानी क्षेत्रों में ाले ाते हैं तो कस्बे का सूनापन और भी ब. ाता है। कुछ लोग रह भी ाते हैं तो उन्हें ीवन निर्वाह करना कठिन हो ाता है। वे लोग बहुत कठिनाई से छोटे-छोटे काम करते हैं ैसे सड़कों पर बर्फ हठाना आदि। ीवनोपा नि के लिए पहाड़ी लोग नी ो उतरकर शहरों में तरह-तरह के काम करते हैं ैसे होटल की बेयरागिरी से लेकर घरेलू नौकरी तक। इस संदर्भ में शेखर ोशी कहते हैं कि-"प्रकृति का सौंदर्य निरर्थक हो ाता है ाब वहाँ आपके लिए कोई ैविक आधार न हो।"[137]

परिस्थिति वश पहाड़ से विस्थापित होने पर भी पहाड़ियों के मन में अपने पहाड़ के प्रति लगाव कम नहीं होता। 'निर्णय' कहानी का श्रीधर अपने पहाड़ी परिवेश से दूर होने पर भी "अपने छूटे हुए गाँव से मन-ही-मन वह ीवन-भर ुड़ा रहा था लेकिन परिस्थितियाँ उसे परदेस में रहने को म ाबूर

---

[136] शेखर ोशी से उमा गस्थाल की बात ीत, ानवरी-मा र्ा 2006 , पृ.21
[137] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.123

किये हुए थीं।"[138] लेखक के इन शब्दों से पहाड़ के प्रति पहाड़ियों का लगाव स्पष्ट हो रहा है।

इसी प्रकार का लगाव हमें 'व्यतीत' कहानी के बाबू पात्र में देखने को मिलता है। शशि के माध्यम से बाबू ी की मनःस्थिति का ित्रण देखिए-"गाँव की ामीन- ायदाद की बातें होती यहीं उनका प्रिय विषय था। ीवन के पिछले साठ-बासठ वर्षों तक गाँव में िस घर संसार के प्रति वे तन मन से समर्पित रहे थे वही अब किसी ब ो के टूटे खिलौने की तरह हर समय उनकी कल्पना में बिखरा रहता।"[139] पहाड़ियों के लगाव के संदर्भ में डॉ.विक्रम सिंह लिखते हैं कि-"कुमाँऊनी ग्रामीण परिवेश के अधिकांश व्यक्ति आपको शहरों में मिल ायेंगे िन्हें परिस्थितियों वश पहाड़ से विस्थापित होना पड़ा है। उनसे बात ीत करके देखिए आपको मानना पड़ेगा कि विस्थापन से पहाड़ या ग्रामीण परिवेश के प्रति उनका लगाव, दायित्व कम नहीं हुआ है। अपनी अस्मिता और ाड़ों को स्वीकार करने में उन्हें गर्व महसूस होता है, पहाड़ की याद दिल और दिमाग की गहराइयों में स्पंदित होती रहती है।"[140]

पहाड़ी गाँव का नाम सुनकर पहाड़ी लोग िस प्रकार स्पंदित होते हैं और उनके मन के आनंद को हम 'दा यु' कहानी में देख सकते हैं-"उन्होंने मुस्कुराकर मदन को बताया कि वे भी निकटवर्ती गाँव (पहाड़ी गाँव) के रहनेवाले हैं तो लगा ैसे प्रसन्नता के कारण अभी मदन के हाथ से 'ट्रे' गिर पड़ेगी। उसके मुँह से शब्द निकलना ाहकर भी न निकल सके।"[141] इससे

---

[138] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.97
[139] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.97
[140] अनुसंधान, अप्रैल, 2011-पृ.41
[141] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.11

स्पष्ट होता है कि पहाड़ी लोगों में विस्थापन के बाद भी पहाड़ के प्रति लगाव कम नहीं होता और पहाड़ की याद मन को आनंदित करती है।

पहाड़ के कुछ लोग नौकरी के लिए विस्थापित होते हैं तो कुछ लोग उ ा शिक्षा की प्राप्ति के लिए पहाड़ी गाँव से विस्थापित होते हैं क्योंकि वर्षा के दिनों में नदी का पानी ब. ाता है, िससे एक गाँव से दूसरे गाँव ाना असंभव हो ाता है। इस स्थिति का ित्रण हम 'गलता लोहा' कहानी में देख सकते हैं-"मोहन कुछ घसियारों के साथ नदी पार कर घर आ रहा था तो पहाड़ी के दूसरी ओर भारी वर्षा होने के कारण अ ानक नदी का पानी ब. गया। पहले नदी की धारा में ाड़- ंखाड़ और पात-पतेल आने शुरू हुए तो अनुभवी घसियारों ने तेज़ी से पानी को काटकर आगे ब.ने की कोशिश की लेकिन किनारे पहुँ ाते-न-पहुँ ाते मटमैले पानी का रेला उन तक आ ही पहुँ ा।"[142]

इस प्रकार के विस्थापन के कारण पहाड़ी गाँवों में केवल वृद्ध और विधवा लोग रह ाते हैं। इस स्थिति का कारण बताते हुए लेखक 'बिरादरी' कहानी में लिखते हैं कि-"प.-लिखकर खेती-किसानी करने का हौसला किसे होता और परिवार की ब.ोत्तरी के साथ पहाड़ की खेती पर निर्वाह किसका होता? पूरे गाँव में अधिकांश घरों में या तो ताले पड़ गये थे या परदेस के माहवारी मनीआर्डर पर आश्रित विधवा ा ी-ताइयों की अकेली गृहस्थी रह गयी थी।"[143]

शेखर ोशी का लगाव ितना प्रकृति से है उतना ही लगाव वहाँ के अभावग्रस्त ीवन से भी। उन्होंने अपनी कहानियों में प्रकृति का कहीं भी अतिक्रमण नहीं किया है। प्रकृति भी वहाँ उस ंदगी की असली स्थिरता को

---

[142] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.84

[143] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.75

दर्शाने तथा वाहँ के निवासियों की यथार्थ स्थिति को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त हुई है। 'बो ा' कहानी के प्राकृतिक परिवेश में इसे देखा ाा सकता है। "दुकानों के सामने तीन खंभों के त्रिकोण पर टिके हुए तरा ू का एक पलड़ा ध्यान मग्न बगुले की टाँग की तरह ऊपर उठा हुआ था ाारों ओर एक अलस स्थिरता थी। पांगर की डाल पर बैठा हुआ एक कौआ रह-रहकर कांव-कांव कर उठता।"[144] इस प्राकृतिक परिवेश से वहाँ के ीवन की ठहरी हुई िंदगी और वहाँ के निर्धन व्यक्तियों की िंदगी की अलस स्थिति की ओर लेखक संकेत करता है।

लेखक का यह ुकाव हमें 'सिनारियो' कहानी में भी देखने को मिलता है। कहानी की केंद्रीय ारित्र आमा की कठिन अभावग्रस्त िंदगी किंतु, ीने का उद्गम साहस को देखते रवि का ुकाव प्राकृतिक सौंदर्य से अधिक वहाँ के संघर्षमय ीवन के प्रति हो ाता है। इसी ुकाव के कारण उसे अंततः यह आभास हो ही ाता है-"काश इस रंगत को अपने कैमरे में कैद कर पाता।"[145] अतः स्पष्ट है कि लेखक ने इस कहानी के रवि पात्र के द्वारा प्राकृतिक सौंदर्य से भी अधिक उस परिवेश की िंदगी के यथार्थ धरातल को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

इस प्रकार के विस्थापन के कारण अकेलेपन से ू ाते हुए अभावग्रस्त महिलाओं की दयनीय स्थिति का ित्रण भी हमें 'संवादहीन' कहानी में देखने को मिलता है। इस कहानी की ताई संपन्न मध्यवर्ग की होने पर भी परिवार के पलायन के कारण 'संवादहीन' होने की कगार पर हैं। लेखक के इन शब्दों से ताई का अकेलापन स्पष्ट होता है। "भला हो गनपत का िसने ताई के सूनेपन को सहारा दे दिया था, वह न ाने कहाँ से एक प्यारा-सा पहाड़ी तोता ले आया

---

[144] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.115

[145] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.133

था।"[146] लेखक के इन वाक्यों से यह स्पष्ट होता है कि ताई अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए पहाड़ी तोते को पालती है। इस कहानी में विस्थापन से उत्पन्न अभावग्रस्त महिला की दयनीय स्थिति स्पष्ट हो रही है।

विस्थापन के बाद पहाड़ी लोग अपने छूटे मित्रों को मिलना ाहते हैं। इसी इ छा के कारण 'स्वप्न देश का उदास शाम' शीर्षक कहीन का देबिया कहने लगता है कि-"शाम को इधर आ ाया कीि ाए, भला लगता है, दो घड़ी बातों में ही कट ाती है। आप ैसे लोगों के दर्शन हो गये बड़ा सौभाग्य ...।" [147]

पहाड़ी लोग ात, बिरादरी पर विश्वास करते हैं। इसी विश्वास के कारण उनमें एक प्रकार के अपनत्व की भावना पैदा होती है। इस बिरादरीपन को हम 'समर्पण' कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी के ब ुवा पात्र में बिरादरीपन को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। "आ ा तक केवल धर्मपरायण मालिक लोगों को ही ऐसी क्रियाएँ करते हुए उसने देखा था। अपनी ात-बिरादरी के ही एक व्यक्ति को इस प्रकार की क्रिया करते देखकर उसे आश ार्य के साथ-साथ गर्व और प्रसन्नता भी हुई।"[148]

इसी बिरादरीपन के कारण वे लोग एक दूसरे की सहायता करते हैं। परिणामस्वरूप उनका रिश्ता और भी म ाबूत होता है। इस स्थिति का ित्रण हम 'गलता लोहा' कहानी में देख सकते हैं। बिरादरी के एक संपन्न परिवार का युवक रमेश, वंशीधर के बेटे मोहन की प ाई के संबंध में सहायता करता है तो "वंशीधर को ैसे रमेश के रूप में साक्षात भगवान मिल गये हो। उनकी आँखों में पानी छलछलाने लगा। भरे गले से वह केवल इतनी ही कह पाये कि

---

[146] नौरंगी बीमार है, शेखर ोशी-पृ.45
[147] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.160
[148] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.45

बिरादरी का यही सहारा होता है।"[149] वंशीधर की इन बातों से अपनी बिरादरी के प्रति संतुष्ट की भावना स्पष्ट हो रही है।

पहाड़ियों का मानना है कि ितना अधिक अपने बिरादरी के लोग अपने काम-का ों में शामिल होते हैं। उतनी ही अधिक उनकी इ ात ब.ती है। 'बिरादरी' कहानी का ीवन भी इस विषय पर विश्वास करते हुए कहता है कि- "पिछले वर्षों में, अपनी कम ोर आर्थिक स्थिति और दूरी के बाव ूद भी वह परदेस में बिरादरी के परिवारों में होनेवाले काम-का ा में यथा-संभव शामिल होता रहा था और उसे उम्मीद थी कि उसके काम-का ा में भी बिरादरी के लोग शामिल होकर उसकी इ ात रख देंगे।"[150]

अपनी बिरादरी के लोगों के बी ा में कोई दूसरी बिरादरी के लोगों का आना उन्हें पसंद नहीं आता। इस विषय को हम 'विस ंि' कहानी में देख सते हैं-"पुरखों की धरोहर को आनगाँव के, बिरादरी-बाहर आदमी के हाथ बे ा देने का कलंक उन दोनों भाइयों ने अपने माथे पर लगा लिया था। उनके इस अनोखे निर्णय की बिरादरी में सबने निंदा की थी, हालांकि एक-दो बु ुर्गों को छोड़कर और सबने तटस्थता का रुख अपना लिया।"[151]

कुछ बिरादरी ने लोगों के लिए कुछ काम करना मना है ैसे हल ालाना आदि। उनके इस नियति के विरुद्ध करने से बिरादरी के लोग उन्हें ाति से बाहर कर देते हैं। 'हलवाहा' कहानी के बद्री प्रधान (पात्र) के द्वारा इस स्थिति का ित्रण इस प्रकार किया गया है।

---

[149] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.84
[150] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.76
[151] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.150

"भैय्या, कोई दूसरी ाात का आदमी होता तो खुद ही ोत-बो लेता, लेकिन हम लोगों के लिए तो इसका भी निषेध है, बिरादर लोग ाात-बाहर कर देंगे।"[152]

पहाड़ियों में अंधविश्वास भी अधिक है। वे लोग देवी-देवताओं, बाबा लोग और हुणियों पर विश्वाास करते हैं। 'आदमी का डर' नामक कहानी में हुणियों के प्रति पहाड़ियों का विश्वास स्पष्ट होता है-"वे गृहणियाँ िन्हें अपनी पाक कला पर नाज़ रहता था, वे गुड्.ी दादियाँ ो पालने के ब ों से लेकर नवेली बहुओं की बीमारियों तक का अ ूक इला ा ानती थीं। वर्ष भर उनकी उत्सुक प्रतीक्षा करती रहतीं क्योंकि उन छोटी-छोटी थैलियों में उनकी ारूरत की सभी दुर्लभ वस्तुएँ उपलब्ध रहती थीं।"[153] कहानी में 'मैं' नामक पात्र के इन शब्दों से उस पहाड़ी इलाके के लोगों मे व्याप्त अंधविश्वास स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहे हैं।

स्पष्ट है कि शेखर ोशी का लगाव प्रकृति से भी अधिक रू.ियों में ाकड़े हुए असहाय, बेसहारा, निर्धन व्यक्तियों से है। ऐसा नहीं कि वे केवल उनकी िंदगी की ाहालत को ही रूपायित करते हैं बल्कि उस परिवेश के साथ-साथ उनकी िंदगी के विविध पक्षों को बिना किसी लाग लपेट के ित्रित करते हैं।

'बो ा' कहानी में पहाड़ी प्रांत के निर्धन, बेसहारा लोगों का प्रतिनिधित्व कहानी का नायक करता है िनका श्रम का निरंतर शोषण होता रहता है, ाहे वे शोषक शहर के शैलानी हो या गाँव के ही अपने बिरादर प्रधान थी। सभी समान रूप से उसका शोषण करते हैं। पेशे से घोड़िया इस नायक का अंततः यात्रियों के सामान का बो ा न उठाने का प्रतीकात्मक रूप में एक ओर अपने

---

[152] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.55

[153] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.112

शोषकों को श्रम का महत्व सम ाने के प्रयत्न में होता है, वहीं दूसरी ओर स्वयं द्वारा किये गये श्रम के शोषण के कारण उत्पन्न प्रतिशोध के बो ा को हल्का करने की भावना छिपी है तभी तो शोषक शैलानियों को सामान से लदे, हाँफते-लु .कते देखकर लंबे समय बाद उसे यह प्रतिशोध हल्का महसूस होता है।

इस प्रकार शेखर ोशी ने पर्वतीय समा ा में ीवन व्यतीत करनेवाले निर्धन, बेसहारा लोगों के हर दुख-दर्द और विश्वाास को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है। यह लेखक की परिवेश के ामीनी अनुभवों से उप ी न ारिया है यही वह मूल संवेदना है ो प्राकृतिक सुंदरता से भी अधिक उस परिवेश की ि ांदगी के यथार्थ धरातल के भूले-बिसरे ि ात्रों को उकेरती है। इस संदर्भ में शेखर ोशी स्वयं कहते हैं कि-"पर्वतीय प्रदेश के प्रति अपनी नि ी आत्मीयता तथा उर्वर कल्पना वाले लेखकों द्वारा पर्वतीय नारी के अयथार्थ और वीभत्स ि ात्रण ने इस दिशा की कहानियों को लिखने की प्रेरणा दी है। आश ार्य है कि आर्थिक दैन्य के अभिशाप में पले हुए कुछ पर्वतीय कथाकारों को भी इस कुत्सित प्र ाार में सहायक होने की अपेक्षा उस ीवन की अन्य कोई समस्या नहीं दिखलाई दी।"[154]

समय के साथ समा ा में अनेक परिवर्तन होने पर भी मानव मन में गाँव के प्रति लगाव कम नहीं होता। "परिवर्तित सामाि ाक परिस्थितियों में औद्योगिक संस्थानों की ो भूमिका रहेगी वह आ ा के बिखरते ग्रामीण ीवन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। लेकिन आ ा भी सम-सामयिक कथाकारों एवं कथा साहित्य के आलो ाकों का ग्राम-कथा के

---

[154] कोसी का घटवार, शेखर ोशी, पूर्व कथन से

प्रति ाो आग्रह है उसको अंश मात्र भी औद्योगिक ाीवन के प्रति नहीं दिखाई देता।"[155]

4.2.2 आर्थिक स्थितियाँ

शेखर ाोशी ने अपनी कहानियों में मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्गीय समा ा की आर्थिक स्थितियों का ि ात्रण किया है।

4.2.2.1 मध्यवर्ग

आर्थिक दृष्टि से समा ा तीन वर्गों में विभाि ात हुआ है। उन तीन वर्गों में महत्वपूर्ण वर्ग मध्यवर्ग है। इस वर्ग का उदय अंग्रेज़ी शिक्षा प्रणाली के द्वारा हुआ है। समा ा के अधिक लोग इसी वर्ग के अंतर्गत आते हैं। 'डिक्शनरी ऑफ सोशियाल ाी' में मध्यवर्ग की परिभाषा इस प्रकार दी गई। "मध्यवर्ग आ ा ानसंख्या के उस विभिन्न भाग को सूि ात करनेवाला पारिभाषिक शब्द है ि ासमें मुख्यतः छोटे-छोटे व्यापारी और उद्योगपति, व्यवसायिक एवं दूसरे सामान्य आय वाले बौद्धिक कार्यकर्ता, कुशल शिल्पी, समृद्ध किसान, सफेद पोश कर्मिष्ट वर्ग तथा बड़े-बड़े व्यापार केंद्रों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों के वेतन भोगी सेवक आते हैं। उनमें बहुत कम सामान्य आर्थिक हित है, ाो कुछ समानता है वह उनके शैक्षिक, स्तर ाीवन स्तर और पारिवारिक ाीवन के आदर्शों एवं उनके लोका ाार तथा मनोविनोदात्म हित हैं।"[156]

मध्यवर्गीय समा ा की अनेक विशेषताएँ हैं ैसे आर्थिक विषमता, महत्वाकांक्षा और टूटन। मध्यवर्ग के लोग अपनी महत्वाकांक्षा के कारण उ ा वर्ग में पहुँ ाने के लिए लालायित तो रहते हैं किंतु श्रमिक वर्ग में ाीने के लिए विवश हो ाते हैं। यह वर्ग निरंतर ाोड़-तोड़ संत्रास एवं घुटन में ाीवन

---

[155] कोसी का घटवार, शेखर ाोशी, पूर्व कथन से
[156] डिक्शनरी ऑफ सोशियॉलो ाी, सं.हेनरी पी फेयरथाइल्ड-पृ.193

व्यतीत करता है। उसकी महत्वाकांक्षाएँ कम नहीं होती। इसी मध्यवर्ग की सामा ाक स्थितियों को शेखर ोशी अपनी अनेक कहानियों में ि त्रित करते हैं। ैसे डांगरीवाले, प्रश्नवा ाक आकृतियाँ, नेक्लेस, सहयात्री, भूत आदि।

'डांगरीवाले' कहानी का परमेश्वर ो एक मध्यवर्गीय व्यक्ति हैं। आर्थिक विषमता के कारण "एक-एक सामान के लिए दस दुकानों में भाव-पूछते और ाहाँ सस्ता मिलता वहीं से खरीदते थे। व्यसन के नाम पर खैनी के अलावा उन्हें कोई शौक नहीं था। कपड़ों की ब ात के लिए मोटे- ोटे वस्त्रों के ऊपर ड्यूटी पर ाते हुए डांगरी डाल लेते ो उनके अनुसार सरकारी वर्दी थी। ैसे पुलिस की होती है, मिलिट्री के सिपाही की होती है, ि ससे उसकी पह ान बनती है। लेकिन वास्तव में यह किफायतसारी का ही एक बहाना था।"[157] शेखर ोशी परमेश्वर पात्र के द्वारा आर्थिक विषम स्थिति का ि त्रण करते हैं तो उसी कहानी के नरेश पात्र में महत्वाकांक्षा को दर्शाते हैं। नरेश ो परमेश्वर का इं ानीयर बेटा है वह अपने इस महत्वाकांक्षा के कारण घर में अनेक विलासी ीज़ें लाता है ैसे डाइनिंग टेबुल।

मध्यवर्गीय महत्वाकांक्षा के कारण लोग अपने आप को उ ा वर्ग में सम्मिलित करने के लिए अनेक प्रयत्न करते हैं। लेखक ने 'भूत' कहानी में इस प्रयत्न का विश्लेषण किया है। "एक समान बने हुए उन क्वार्टरों में अपनी विशिष्टता दिखाने के लिए किसी ने यदि मेहंदी की बाड़ लगा ली थी तो किसी ने ारदीवार खीं ाकर छोटा-मोटा फाटक लगा लिया था। दरवा ों के ऊपर या सामने वाली खिड़की की आड़ी सलाखों के ऊपर अपनी नाम पट्टी लगाने का सिलसिला शुरू हुआ तो कुछ ही दिनों में एक दूसरे से होड़ लेती हुई विभिन्न

[157] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.98

आकार-प्रकार और लिखावट वाली नाम पट्टियाँ क्वार्टरों के बाहर दिखाई देने लगी।"[158]

मध्यवर्गीय परिवारों में लेन-देन, उधार-बदले का ो रिवा ा ालता रहता है, उससे उत्पन्न दुख और निराशा का ित्रण 'नेक्लेस' कहानी में किया गया है। इस कहानी में दुल्हन को पहनाने के लिए उधार में नेक्लेस देते हैं। ो अन्य आभूषणों की अपेक्षा दुल्हन को अधिक आकर्षित करता है। ाब उसे पता ालता है कि वह सामान्य-सा नेक्लेस भी उनका अपना नहीं है तो वह टूट ाती है और दुख के कारण रोने लगती है।

मध्यवर्गीय महत्वाकांक्षा के कारण कुछ लोग निम्न वर्ग के लोगों का विरोध करते हुए उ ा वर्ग का समर्थन करते हैं। इस मध्यवर्गीय मनःस्थिति का ित्रण शेखर ोशी 'सहयात्री' नामक कहानी में सफलतापूर्वक प्रस्तुत करते हैं।

इस कहानी का अग्रवाल ी ो एक मध्यवर्गीय व्यक्ति है, वे रेल में किसी को बैठने के लिए ागह भी नहीं देते। लेकिन एक नवयुवक को उ ावर्गीय व्यक्ति सम ा कर अपनी सीट उसे देकर स्वयं ट्रंक के ऊपर बैठ ाता है। इस प्रकार शेखर ोशी ने मध्यवर्ग की महत्वाकांक्षा को अपनी कहानियों में कुशलता पूर्वक ित्रित किया है।

उपभोग की वस्तुओं के प्रति इस वर्ग के लोगों में विशेष आकर्षण रहता है। उनके लिए 'कार' ैसे विलासी ीज़ें एक स्वप्न हैं। अपनी आर्थिक विषमता के कारण यह स्वप्न पूरा नहीं हो पाता। परिणामस्वरूप ि ान के पास कार होती है उनके प्रति आदर की भावना व्यक्त करते हैं। 'पुराना घर' कहानी के इस ित्रण द्वारा यह बात स्पष्ट होती है-"वह आदमी या तो स्वभावतः बहुत

[158] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.93

विनर्म रहा होगा अथवा उस नए मॉडल की ाम ामाती आधुनिक कार से प्रभावित होकर अधिक से अधिक सहायता कर सकने की इ छा से उसने पूछा- आप किसका मकान खो ा रहे हैं।"[159]

मध्यवर्ग के लोगों में उ ा वर्ग और निम्न वर्ग की तुलना में ईर्ष्या, द्वेष अधिक होते हैं। 'साथ के लोग' कहानी में एक यात्री इनाम में बारह रुपये के लिए ूता पाता है तो "बहुत देर तक लोगों की बात ीत उसी ूते पर केंद्रित होकर रह गयी। कई ऐसे लोग, ो अब तक ुप थे, अ ानक विशेषज्ञों की तरह ूते के संबंध में अपनी राय देने लगे और हर एक ने उस ूते को उलट-पुलटकर, मोड़-तोड़कर देखा ही नहीं बल्कि, अपनी राय भी दे दी-

"ठगे गये, बाबू साहब।

एकदम गत्ता भरा है ी।

ाहाँ एक बार भीगा, यह भी 'मेहरबान' कहने लगेगा।

किसी ने ुटकी ली-लेकिन खूब इनाम बाँट गया भाई।"[160]

कहानी की इन पंक्तियों द्वारा मध्यवर्ग में व्याप्त ईर्ष्या, द्वेष की भावना स्पष्ट रूप से सामने आती है।

4.2.2.2 निम्न मध्यवर्ग

निम्न मध्यवर्ग, मध्यवर्ग का ही एक हिस्सा है। आर्थिक स्थिति के आधार पर मध्यवर्ग को तीन भागों में विभक्त किया गया है (1) उ ा मध्यवर्ग, (2) मध्य मध्य वर्ग और (3) निम्न मध्यवर्ग। इस वर्ग के अंतर्गत निर्धन, नौकरी, पेशा करते हुए खाते-पीते छोटे उद्योगपति, व्यापारी आदि आते हैं। इला ंद्र ोशी ने निम्न मध्यवर्ग पर अपने वि ार व्यक्त करते हुए लिखा है कि-

---

[159] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.150

[160] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.17

"वास्तव में शोषकों के अत्या ाारों से यह वर्ग निम्नतम वर्ग से कुछ कम पीड़ित नहीं है। पर निम्न वर्ग से उसमें यह अंतर है कि वह बहुत अधिक अनुभूतिशील और साथ ही बुद्धिवादी है। इसलिए क्रांति के मूल बी ा केवल इसी वर्ग में पनप सकते हैं।"[161]

निम्न मध्यवर्ग की बहुत बड़ी समस्या आर्थिक विषमता है। आत्म सम्मान के कारण इस वर्ग के लोग किसी से सहायता नहीं लेना ाहते। आर्थिक विषमता दोस्तों के बी ा दूरी भी ब.ाती है। 'प्रश्नवा ाक आकृतियाँ' कहानी का वीरेंद्र आर्थिक विषमता के कारण अपने दोस्तों से दूर रहना ाहता है। वीरेंद्र के शब्दों में "वह ाानता हो कि साथियों के बी ा मैंने इन दिनों ाो डॉक्टर के आदेश पर सिगरेट और कॉफी छोड़ देने का बहाना बनाया है, वह मात्र मेरी विवशता है। हर बार दूसरों के दम पर शौक पूरा करने में ि ा ाक होती है।"[162] अतः स्पष्ट है कि वीरेंद्र को ाय, सिगरेट खरीदने की आर्थिक शक्ति भी नहीं। अपनी इस स्थिति के कारण वह शैल से विवाह भी नहीं कर पाता। इस कहानी में शेखर ोशी ने निम्न मध्यवर्ग के व्यक्ति की मनोदशा, आर्थिक विषमता और अंतर्द्वंद्व का सशक्त ि ात्रण किया है।

नौकरी पर आधारित निम्नमध्यवर्गीय लोग अपेन परिवार की ारूरत मंद ाीज़ें और उनकी छोटी-से-छोटी इ छाओं की पूर्ति के लिए महीने भर की तनख्वाह के लिए इंत ाार करते हैं। पैसों की ब ात के लिए ाहाँ कम भाव में मिलता है वहीं से खरीदते हैं। निम्न मध्यवर्ग की यह स्थिति 'ब ो का सपना' शीर्षक कहानी में सफलतापूर्वक ि ात्रित किया गया है। इस कहानी का 'मैं' नामक पात्र अपनी बेटी की इ छा पूर्ति के बारे में कहता है कि-"मैं उसके मासूम ोहरे पर सुखद आश र्य की ामक देखना ाहता था। बहुत दिनों से सँ ोई

---

[161] निर्वासित, इला ंद्र ोशी-पृ.37

[162] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.26

हुई एक इ छा की पूर्ति, एक लगभग असामान्य सी वस्तु की प्राप्ति का संतोष। हाँ, मेरी ैसी स्थिति में उसके लिए यह मामूली ीज़ भी लगभग असामान्य ही थी।"[163] कहानी के इन वाक्यों से निम्न मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति स्पष्ट हो रही है।

नौकरी पर आधारित इस वर्ग के लोगों को महीने का अंतिम सप्ताह ालाना बहुत मुश्किल है। इस विषम परिस्थिति को ब ों से दूर रखने के लिए माता-पिता को कुछ ाल ालाना ही पड़ता है। 'डरे हुए' शीर्षक कहानी में इस स्थिति का ित्रण हुआ है। "वह आ रहा है। उसके सामने कुछ न कहना। दो ही दिन की तो बात है। मैं किसी तरह बहला लूँगी। िंता करने के लिए हम दोनों ही बहुत हैं। उस पर न ाने कैसा असर पड़े।"[164] ब ों को इस स्थिति से अन ान रखने के प्रयत्न में माता-पिता डरने लगते हैं।

शोषकों के अत्या ारों से यह वर्ग कुछ कम पीड़ित नहीं है। उ ा वर्ग के किसान निम्न मध्यवर्ग के छोटे किसानों की भूमि को अपनाने के लिए अनेक प्रयत्न करते हैं। उनके पीट-पीछे अनेक षडयंत्र र ाते हैं। ताकि निम्न मध्यवर्ग के किसान को अपनी ामीन बे ानी पड़े। लेकिन निम्न मध्यवर्ग का किसान ो ामीन को अपनी माँ सम ाता है आर्थिक स्थिति के कारण स्वयं हल ालाने के लिए तैयार हो ाता है ो अपनी ाति के नियमों के विरुद्ध है। 'हलवाहा' कहानी का ीवानंद ो एक निम्न मध्यवर्ग का किसान है उससे ामीन हड़पने के लिए उ ा वर्ग का बद्री प्रधान, ीवानंद की आर्थिक स्थिति याद दिलाते हुए कहता है-" अब तुम ही बताओ, कहने को पिरमुँवा और ामनिया का परिवार हमारी हलवाही करता है। पर इनके भरोसे मेरी खेती ालेगी? िस दिन सड़क के ठेकेदार ने काम नहीं दिया उस दिन इन्हें हल-बैल की सुध आ ाती है, वरना

---

[163] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.9

[164] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.52

खेत बं ार पड़ा हो, बेहन उ ाड़ रहा हो, इन्हें कोई काम नहीं। ठेकेदार और ओवरसीयर की तरह अंधाधुंध पैसा हमारे पास तो है नहीं, न हम उतनी म ूरी देंगे और न ये अपने बाप-दादों की तरह एहसान मानकर आएँगे।"[165]

निम्न मध्यवर्ग का उ ावर्ग द्वारा शोषण हमें 'बो ा' कहानी में भी मिलता है। यह कहानी एक तरुण कुली की आर्थिक विसंगतियों की ओर संकेत करते हुए, विषम परिस्थितियों में भी उसके सामा िक और नैतिक बोध को उभारती है। यह वहाँ के तरुण की सबसे बड़ी त्रासदी है कि "होश संभालने के बाद से ही उसे कभी प्रधान की ोर-बकरियों को ाराने की ि म्मेवारी सौंप दी ाती तो कभी खेतों में हाथ बँटाने के लिए बुला लिया ाता।"[166] सही-गलत मार्ग अख्तियार कर उन्हें काम पर बनाये रखा ाता। "ले यार, एक बीड़ी दम लगा ले, फिर ये दस-बारह पौधे रह गये हैं, इन्हें भी निबटा देना इसी हाथ।"[167] पर ऐसे नहीं है कि पहाड़ के तरुण इस बात को सम ाते नहीं हैं, बल्कि सब कुछ ाानते और सम ाते हुए भी वे सहने के लिए विश हैं। अतः इस वर्ग के लोग अनुभूतिशील और बुद्धिवादी होने के कारण सब कुछ सहने के लिए तैयार हो ाते हैं।

यहीं निम्न मध्यवर्ग की आर्थिक विषम स्थिति का ि त्रण हमें 'सिनारियो' कहानी में भी देखने को मिलता है। इस कहीन में पहाड़ी महिला आँमा के लिए मा ासि का ख र्ा का भार भी उसे महँगा पड़ता था। शेखर ोशी इस स्थिति का ि त्रण करते हुए लिखते हैं-"ऐसा बुरा वक्त आ गया है, अब बाँ ा की लड़कियाँ नहीं मिल पातीं और ाीड़ के कोयलों की दबी आग सुबह तक ुल्हे में नहीं रहती। स्पष्ट था कि मा ासि का ख र्ा का भार उनके लिए महँगा पड़ता

[165] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.52
[166] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.52
[167] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.52

था।"[168] इस कहानी के संदर्भ में डॉ.विक्रम सिंह लिखते हैं कि-"कहानी की केंद्रीय ारित्र आमा की कठिन अभावग्रस्त ि ांदगी किंतु, ीने का उद्गम साहस को देखते देखते रवि का ुकाव प्राकृतिक सौंदर्य से अधिक वहाँ के संघर्षमय ीवन के प्रति हो ाता है, इसी ुकाव के कारण उसे अंततः यह आभास हो ही ाता है-"काश! इस रंगत को अपने कैमरे में कैद कर पाता।" यह लेखक का परिवेश के ामीनी अनुभवों से उप ा न ारिया है। यही वह मूल संवेदना ळै ो प्राकृतिक सुंदरता से भी अधिक उस परिवेश की ि ांदगी के यथार्थ धरातल के भूले-बिसरे ि ात्रों को उकेरता है।"[169] अतः स्पष्ट है कि प्राकृतिक सौंदर्य से भी अधिक वहाँ की आर्थिक स्थिति मनुष्य को अधिक आकर्षित करती है। स्वयं शेखर ोशी कहते हैं -"प्रकृति का सौंदर्य तब निरर्थक हो ाता है ाब वहाँ आपके लिए कोई ौविक आधार न हो।"[170]

4.3 धार्मिक स्थितियाँ

हमारा समा ा प्रा ाीन काल से ही धार्मिकता से प्रेरित रहा है क्योंकि यह माना गया है कि धर्म के बिना मनुष्य मह ा पशु है। आहार, निद्रा, मैथुन व भय आदि विशेषताएँ मनुष्य और पशु के समान हैं। किंतु धर्म के पालन से मनुष्य पशु से उ ातर प्राणी बन ाता है। यह धार्मिकता ही है ो उ ातर मूल्यों के सं ाय में सहायक होती है। लेकिन आ ा इसके विपरीत धर्म के नाम पर रू ि याँ, रीति-रिवाज़, अंधविश्वाास आदि का सं ाय हो रहा है। भारत ने प्रा ाीन काल से ही हिंदु धर्म को अपनाया है। मूर्ति पू ाा, कर्म-कांड, पिंड दान पर विश्वास रखते हैं। ग्रामीण प्रांत के लोग इन धार्मिक कर्मों पर अधिक विश्वास रखते हैं। उनका विश्वास था कि देवी-देवताओं के क्रोध से ब ाने के

---

[168] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.132

[169] अनुसंधान, अप्रैल 2011-पृ.41

[170] शेखर ोशी से उमा गस्थाल की बात ीत, ानवरी-मा ि 2006-पृ.21

लिए नारियल ा.ाना है। अगर कोई बात विश्वसनीय बनानी है तो लोग देवताओं के कसम ले कर कहते हैं। 'कोसी का घटवार' कहानी में लछमा गंगनाथ यु (देवता) की कसम लेकर गुस्साई से विवाह करने का वादा करती है। लेकिन उसका विवाह किसी और से हो ाता है तो गुस्साई कहता है कि "कभी ाार पैसे ुड़ ाएँ, तो गंगानाथ का ागर लगाकर भूल- ूक की माफी माँग लेना। पूत-परिवारवालों को देवी-देवता के कोप से ब ाा रहना ाहिए।"[171] इस से स्पष्ट होता है कि भारत देश के लोगों के ीवन में पग-पग पर धर्म का प्रभाव रहा है।

हिंदू धर्म की एक और मान्यता यह है कि मृत्यु के बाद अपने वंश के लोगों से पिंडदान करने से उस मृत व्यक्ति की आत्मा को शांति मिलती है। यह धार्मिक रू. हमें 'विस नि' कहानी में देखने को मिलता है। 'तारी' अपनी भाभी की मृत्यु के बाद पिंडदान करता है-"नदी किनारे एक पत्थर पर घुटनों-घुटनों तक धोती लपेटै, नंगे बदन, कंधे पर अपसव्य यज्ञोपवीत डाले हुए बैठा तारी यांत्रिक ंग से पुराहित ी के आदेशानुसार अंतिम पिंडदान देते-देते सिसकियाँ भरने लगा।"[172]

यही मान्यताएँ और रू.यों का हस्तांतरण एक पी. से दूसरी पी.ी तक होने लगा। डॉ.वि ायलक्ष्मी का कथन है-"परंपरा एक ऐसी सामा ाक विधा है ि ासमें सांस्कृतिक तत्व एक पी.ी से दूसरी पी.ी को विरासत के रूप में अबाधगति से प्राप्त होती रहती है अथवा अभौतिक संस्कृति उस सीमा तक परिवर्तित होती रहती है उसकी प्रतिष्ठा बनी रहे और फिर एक संस्था के रूप में विकसित होती है, ाहाँ एक वर्ग विशेष के आ ाार-वि ाार, ज्ञान एवं वि ाार

[171] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.28
[172] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.66

अनवरत रूप से प्रत्येक आनेवाली पी ी तक पहुँ ाते रहते हैं। इस प्रकार के परिवर्तन परंपराएँ कहलाती हैं।"[173]

मानव ीवन में ाब अपनी बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार परंपराएँ, विश्वास नहीं बदलती है और मनुष्य लकीर का फकीर बना रहता है तो उसका वही विश्वास अंधविश्वास, रू ियों और रीति रिवा ा की संज्ञा से अभिहित किया ाता है। ग्रामीणों में इस प्रवृत्ति का अत्यधिक बोल-बाला रहता है। यही कारण है कि अपनी रू ि वादिता और रीति-रिवाज़ के कारण सदैव ही समस्याओं से घिरे रहते हैं। ऐसी ही रू ि वादिता व अंधविश्वास का ि त्रण 'समर्पण' कहानी में मिलता है। प्रा ीन काल से ही ग्रामीण लोगों में भूत-प्रेतों के प्रति विश्वास है। यही अंधविश्वास हमें इस कहानी में भी मिलता है। उनका मानना है कि कैलखूर के नाले पर प्रेत हैं और उससे ब ाने के लिए लोहे का उपयोग करना है क्योंकि लोहे से प्रेत डरता है। ग्रामीणों के अंधविश्वास को निम्न वाक्यों में देखा ा सकता है-"इस सफेद घोड़े की पीठ पर कैलखूर ने नाले से बैठ गया ी। साला यह घोड़ा भी डर गया। न आँ की, न बाँ की, बस, धीमा पड़ गया। छिनारी पर आकर लालू की पीठ कर बैठे-बैठे मुड़कर देखा, कहीं पता ही नहीं इसका। मैंने सो ा, खड्ड में गिर गया होगा। लौटकर गया। मरा-मरा-सा आ रहा था। अयाल पकड़कर खीं ा, तभी धम् से इसकी पीठ से कूद पानी में घुस गया स्साला। कल इसकी ारों नालें ठुकानी हैं। लोहे से अलबत्ता डरता है।"

"कौन, क्या कुछ पूछने की आवश्यकता नहीं। लोग ानते हैं, कैलखूर के प्रेत की बात कह रहा होगा। बरसों पहले एक नेपाली डोट्याल लकड़ी के ि रान के समय वहाँ दबकर मर गया था।"[174]

---

[173] स्वतंत्र्योत्तर हिंदी नाटक समस्या और समाधान, डॉ.निदेश ंद्र वर्मा-पृ.1

[174] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.42

ग्रामीण लोग देवी-देवताओं पर अधिक विश्वास रखते हैं। अपने दोषों के परिहार के लिए और देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए लोग व्रत, उपवास रखते हैं, उन का मानना यह है कि नवरात्री में नौ दिन उपवास के साथ पू ाा करने से देवी का साक्षात्कार होता है। इसी का ित्रण हमें 'समर्पण' कहानी में मिलता है-किसरुआ के मालिक गौरीदत्त ने नवरात्रि में नौ दिन देवीस्थान में ाण्डीपाठ किया था, निराहार रहकर, और दसवें दिन साक्षात् देवी आकर कहले लगी-"गौरीदत्त! ाो माँगना है, माँग ले। और मालिक गोरीदत्त ाी ने कहा-गौरिया को अकेले अपने पेट के लिए कुछ नहीं ाहिए माता। पर मेरा मन कह रहा है, इस साल अकाल पड़ेगा। तुमसे यही विनती है, दीवान खानदान के गोठ की गाय, भकार का अन्न और गोद की संतान, किसी का अनिष्ट न हो। दीवानों के पूत-परिवार, दास- ाकर किसी का अनिष्ट नहीं होगा गौरी। कहकर देवी अंतर्धान हो गयी।"[175] इस ित्रण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ग्रामीण लोग देवी-देवताओं पर अधिक विश्वास करते हैं।

बु ापे में इन रू ियों और अंधविश्वासों का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। वृद्ध अवस्था में सभी पुण्य कार्य करना ाहते हैं क्योंकि उनका मानना है कि पुण्य कार्यों से ही स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं। नरक से डरने लगते हैं। परिणामस्वरूप पुण्या नि में लगे रहते हैं। यही धार्मिक मान्यताएँ हमें 'किं करोमि ानार्दन' शीर्षक कहानी में 'नित्यान यु' पात्र में मिलती हैं-"आंगन में सुखाने के एिल डाले गये धान में गाय-बछिया आकर मुँह मारने लगे, तो भी नित्यान यू उसे स्वयं नहीं हटाएँगे। वह तो सू ाना-भर दे देंगे।

हिंदू धर्म के लोग सत्यनारायण व्रत का बड़ा महत्व रखते हैं क्योंकि उनका मानना यह है कि व्रत करने से सारे दुःख दर्द दूर हो ाएँगे। यही

[175] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.43

धार्मिक भावना हमें 'कथा-व्यथा' कहानी के ीवंती पात्र में मिलती है। ीवंत अपनी बेटी के सुखी ीवन के लिए एक कथा कराने की सो ाती है। परंतु अर्थाभाव के कारण ऐसा नहीं हो पाता है। वह अपनी ामा-पूँ ी दान कर देती है। भगवान की कथा सुनते-सुनते सो ाने लगती है-"भगवान उसे भी स्वप्न में दर्शन देकर कहेंगे, ीवंती! अब तेरे ीवन में रोग, शोक, दुःख, दारिद्रय मिट गये हैं। तेरी भगवती को मैं पुत्ररत्न दूँगा, तेरे ामाई को देश में रो ागार मिल गया है। दा ी के पास गिरवी पड़े अपने खेत तू इस वर्ष छुड़ा लेगी। तेरे गोठ में दो बैल बँध ाएँगे।"[176] इस से भारतीय महिलाओं का अंधविश्वास स्पष्ट हो रहा है। इस संदर्भ में देवेंद्र कुमार ौबे लिखते हैं कि-"आखिर वे कौन-सी स्थितियाँ हैं, िसके कारण आम भारतीय महिलाएँ अंधविश्वास और रू ि वाद का शिकार होती हैं।"[177]

गाँव में फैला हुआ और एक अंधविश्वास किसी पर माँ का सवार होना है। अगर कोई व्यक्ति अ ानक वि ि त्र व्यवहार करने लगता है तो लोग यह सम ा बैठेंगे कि उस व्यक्ति पर देवी माँ आ गयी हैं। अशिक्षा के कारण उस पागल व्यक्ति को पू ाने लगते हैं। यही स्थिति हमें 'गोपुली बुबु' कहानी में दर्शनीय है।

"तब कुछ अकल नहीं थी भाऊ! लोग कहते थे इसके आदमी पर देवता लगा है। मैं सो ाती देवता तो अ छे ही हुए। वे कभी-कभी बंदर की तरह छलाँग लगाते, कभी वैसे ही ि ि ायाते। ाब थोड़ी अकल आई तब मैंने ाना कि मु ो पागल की पूँछ से बाँध दिया है।"[178]

---

[176] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.111

[177] हंस, अप्रैल 1990

[178] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.60

गाँव के लोगों में और एक अंधविश्वास यह है कि प्रातःकाल में कौए का कांव-कांव करना शुभ माना ाता है लेकिन अलस दुपहरी में इस पक्षी का रह-रहकर कांव-कांव करना अशुभ माना गया है। इसी कारण 'बो ा' कहानी का नायक उसे भद्दी सी गाली देते हुए भगा देता है क्योंकि विपत्तियों के बो ा से वह पहले ही दबा हुआ है। यह अशुभ संकेत उसके ीवन में और विपत्तियाँ ला सकता है िासमें उसका और उस परिवेश में ीवन व्यतीत करनेवाले निवासियों में दृ. विश्वास है। उस प्रांत में यह लोककथा और किंवदन्ति बन गयी है। कहानी में यह बात निम्न पंक्तियों से स्पष्ट होती है-"पांगर की डाल पर बैठा हुआ एक कौआ रह-रहकर काँव-काँव कर उठता। उसने हाथ ब.ाकर एक कंकर उठाया और एक भद्दी-सी गाली देकर उसे पत्तों के बी ा यों ही फेंक दिया।"[179]

आधुनिकता के प्रभाव से ाहाँ शहर आगे की ओर ब. रहे हैं, वहीं यह गाँव रू.ियों की ापेट में आकर अपनी बरबादी के ि ाम्मेदार खुद बन रहे हैं। गाँव में फैला एक और अंधविश्वास बाबा लोगों पर विश्वास। बाबा को गाँव वाले भगवान सम ाते हैं। गाँव वालों को बाबा के प्रति विश्वास हमें 'रंगरुट' कहानी के इन पंक्तियों द्वारा स्पष्ट होता है-"गाँव में रोग-व्याधि फैल ाए, सूखा पड़े या वर्षा-वाले की तबाही हो, लोग फूल-पाती, भेंट- ा.वा या मुर्गा-नारियल लेकर ााऊ बाबा के साथ पहुँ ा ाते। अपने पुरुषार्थ से ब.कर न-किसी पुण्यात्मका को ााऊ रहता था और तभी रात में किसी-न-किसी पुण्यात्मा को ााऊ बाबा सपने में दर्शन दे ाते और उस संकट का निदान बता ाते। ााऊ बाबा के ऐसे विश्वासपात्रों में गाँव के दो-तीन प्रमुख और समृद्ध परिवारों के लोग ही अक्सर हुआ करते थे।"[180]

---

[179] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.44

[180] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.137

अशिक्षा के कारण गाँववाले डॉक्टर से ब. कर बाबा पर विश्वास करते हैं। यह हमें कहानी के 'मोतीराम' से पता ालता है। वह कहता है-"मैंने वैद्य ाी को विदा कर दिया और रात-भर ाऊ बाबा का नाम लेकर बूँद-बूँद तुलसी का का.ा मथुरा के मुँह में डालता रहा। भोर की वेला मु ो ापकी लगी तो देखता क्या हूँ कि बाबा अपने हाथ से उसे पंखा ाल रहे हैं। यकीन मानो भैया, सुबह हमारा मथुरा भला- ांगा हो गया था।"[181]

19 वीं शती के उत्तरार्द्ध और 20 वीं शती के पूर्वार्द्ध में सामाि ाक व रा ानीतिक ोतना के साथ-साथ भारतीय धार्मिक ोतना में भी परिवर्तन हुए। पहले ाहाँ व्यक्ति की ीवन दृष्टि का निर्माण धर्म शास्त्र, परंपरागत वि ाार तथा सामाि ाक रू.ियों द्वारा होता था, वहीं आधुनिक वैज्ञानिक-भौतिकवादी युग में व्यक्ति का दृष्टिकोण निरंतर गतिशील सामाि ाक, आर्थिक, धार्मिक तथा रा ानैतिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है। शिक्षा के प्रसार के कारण भारत में शिक्षित वर्ग का विकास हुआ ो धर्म के वास्तविक रूप सम ाने लगा था। धर्म के नाम पर ो रू.ियाँ, अंधविश्वास समा ा में पनप रहे हैं, 20 वीं शती में धीरे-धीरे उनका ह्रास हुआ। अब धर्म का अर्थ संप्रदाय और ाति से ऊपर उठकर संपूर्ण मानव धर्म के रूप में बदल गया है। समा ा में आए हुए इस परिवर्तन से साहित्यकार अछूते नहीं हैं। इसीलिए शेखर ोशी इस सामाि ाक परिवर्तन को 'रंगरूट' कहानी के द्वारा प्रस्तुत करते हैं।

'रंगरुट' कहानी में 'मैं' नामक पात्र की माँ बाबा पर विश्वास करते हुए उसे ाऊ बाबा के थान पर नारियल और लाल ीर ा.ाने को कहती है। लेकिन 'मैं' नामक पात्र अपनी शिक्षा के कारण बाबा पर विश्वास नहीं करता है और स्वयं की सत्ता पर बल देता है। यह उनकी बातों में देखा ा सकता है-

[181] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.138

"मैंने हर प्रकार माँ को सम ाने का प्रयत्न किया कि आ ाकल का गणित और विज्ञान ाऊ बाबा के कोर्स के बाहर की ीज़ है। इसे विद्यार्थी अपने लगन और परिश्रम से ही ीत सकता है।"[182] अंत में उसने तय कर लिया-"मु े ाऊ बाबा या उस प्रकार की किसी भी सत्ता को स्वीकार नहीं करना है।"[183] समा ा में आ ा हुए इस परिवर्तन का कारण शिक्षा है। एक शिक्षित व्यक्ति ही धर्म के नाम पर होनेवाले रू ियों का विरोध कर सकता है।

20 वीं शती में धर्म के परिमा ान की नई शुरुआत हुई। विश्वबंधुत्व की भावना का विकास हुआ। हिंदू-मुस्लिम धर्मों के बी ा भाई ारे की भावना उत्पन्न हुई। 20 वीं शती में आए हुए इस सामा ाक परिवर्तन को शेखर ोशी ने अपनी कहानी 'छोटे शहर के बड़े लोग' द्वारा प्रस्तुत किया है। " ाहाँ ईद और मुहर्रम के अवसर पर दूसरे संप्रदाय के लोग उनके त्योहार-पर्व में शामिल होते वहाँ वे भी होली-दीवाली और रामलीला में समान रूप से अपनी भागीदारी का निर्वाह करते। हा ी ी स्वयं रामलीला कमेटी के सम्मान्य सदस्य थे और उनका बेटा समद हर साल रामलीला में तबले की संगत करता था।"[184]

20 वीं शती के समा ा में आई हुई विश्व बंधुत्व की भावना बाकी सभी परिवर्तनों से महत्वपूर्ण परिवर्तन हैं। इस संक्रमणकालीन धार्मिक परिवेश से साहित्य भी अप्रभावित न रहा। विभिन्न र ानाकारों ने अपने समकालीन धार्मिक परिवेश को अपनी र ानाओं में विभिन्न रूपों में अभिव्यक्ति किया है।

अतः शेखर ोशी ने ग्रामीण लोगों में व्याप्त रू ियों रीति रिवाज़, अंधविश्वासों का परि ाय देते हुए समय के साथ इन अंधविश्वासों में आए हुए परिवर्तनों को स्पष्ट किया है।

---

[182] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.139
[183] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.140
[184] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.34